कायनात में बुलन्द कर दिया।' (14 : 1-3)

'शरहे सद्र', (सीना खोल देना) यह कि अब सीखने-सिखाने के साधनों के ज़रिए हासिल होने वाले तमाम उलूम व मआरिफ़ अल्लाह की उस अ़ता और देन के सामने नाचीज़ होकर रह गए हैं, जिसकी समाई के लिए हमने तेरे सीने को खोल दिया है, अब उलूम व मआरिफ़ के अपार समुन्दर भी हों, तो सीने के फैले हुए दामन के लिए काफ़ी है और इसी 'शरहेसद्र' ने अल्लाह की मारफ़त के तमाम छिपे ख़जाने तुझ पर खोल दिए और सारा बोझ तेरे सीने पर से हट गया, जिसने तेरी कमर को इसलिए तोड़ रखा था कि दिल से तलाश और दिली तड़प के बावजूद तू इससे पहले नहीं जानता था कि अल्लाह की मारफ़त का सीधा रास्ता कौन-सा है और जिनकी राहें गुम हो चुकी हैं, उनकी रहनुमाई का रास्ता क्या है? मगर अब यह सब कुछ रोशन हो जाने के बाद हमने दुनिया में तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी और ऊंचाई अ़ता फ़रमाई कि तेरा मक़ाम—

'ख़ुदा के बाद, मुख़्तसर यह कि तू ही बुज़ुर्ग है।'

चुनांचे नाम 'अहमद' व 'मुहम्मद' है और मक़ाम 'मुक़ामे महमूद', सूरः हम्द ज़िंदगी का वज़ीफा है और क़ियामत में हम्द का झंडा ही नुमायां—

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा, यदे बैज़ादारी
आंचे ख़ूबां हमा दारंद तू तंहा दारी।

यही नहीं, बल्कि क़ुरआनी दावत के नए सिरे से बुलंद करने वाली तेरी हक़ की सदा ने एतक़ाद व अ़मल और ईमान व किरदार की राह से तमाम दुनिया के इज्तिमाई व समाजी निज़ामों में जो शानदार इंक़िलाब पैदा कर दिया और सोसाइटी के हर शोबे की पुरानी और फटी चादर बिछा दी, उसने तेरे ज़िक्र को वह बुलन्दी दी कि कोई क़ौम, कोई मज़हब और कोई जमाअ़त किसी-न-किसी शक्ल में उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रह सके।

Copyright OfflineDeeniApp

बुत-परस्ती से नफ़रत, तंहाई पसन्दी और अल्लाह की इबादत का ज़ौक़

बचपन से इज़्दिवाजी ज़िंदगी (गार्हस्थ्य जीवन) के शुरू के मरहलों तक के हालात व वाक़ियात तफ़्सील के साथ सीरत और हदीस की किताबों में नक़ल किए गए हैं, इसलिए वहीं उनसे रुजू किया जा सकता है।

मुख़्तसर यह कि दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब के इंतिक़ाल के बाद आपके चाचा अबू तालिब आपके साथ बड़ा उन्स और अपनापन रखते थे और ज़िंदगी भर आपका साथ देने का हक़ अदा करते रहे। नबियों और रसूलों की सुन्नत के मुताबिक़ आपने अपनी रोज़ी का भार किसी पर नहीं डाला और दुनिया के कामों में आपने बक़रियां भी चराईं और तिजारत भी की। शाम (सीरिया) के मशहूर तिजारती शहर बसरा में भी इस ग़रज़ से तशरीफ़ ले गए और पचीस साल की उम्र में यही सफ़र हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह की वजह बना। आप ख़दीजा का माल साझे की तिजारत की बुनियाद पर बसरा की मंडी में ले गए। ख़दीजा का ग़ुलाम मैसरा भी सफ़र का साथी था। इस दर्मियान आपकी सदाक़त व अमानत, एक यहूदी राहिब की बशारत और तिजारत के क़ीमती मुनाफ़ा का जो तजुर्बा किया था और जो कुछ देखा था, मैसरा ने वह सब हज़रत ख़दीजा से कह सुनाया। चुनांचे यह तास्सुर मियां-बीवी के रिश्ते की वजह बना।

अब ज़िंदगी में एक और इंक़िलाब हुआ कि आप तंहाई में रहना पसन्द करने लगे और हिरा नामी गुफ़ा में दिन व रात गुज़ारने लगे। बुतपरस्ती से शुरू ही से नफ़रत थी, इसलिए भी न किसी मूर्ति के आगे सर झुकाया और न किसी ऐसी मज्लिस में शिर्कत फ़रमाई जो बुत-परस्ती के मेले कहलाते थे। अब अकेलेपन में सलीम फ़ितरत जिस तरह रहनुमाई करती, एक अल्लाह की इबादत करते, मगर एक चुभन सीने में ऐसी थी जो इस हालत में भी बेचैन ही रखती। अक्सर यह सोच कर तड़प जाते थे कि मेरी क़ौम ख़ास तौर से और इंसानी दुनिया आम तौर से किस तरह एक अल्लाह को छोड़कर मूर्तिपूजा और प्रकृति-पूजा (मज़ाहिर परस्ती) में पड़ी हुई है और यह कि अख़्लाक़ की

Copyright OfflineDeeniApp

दुनिया किस तरह उलट गई है। आख़िर वह कौन-सा कामियाब नुस्ख़ा है जो इस हालत में इंक़िलाब पैदा कर दे और सच्ची ख़ुदापरस्ती और नेक अ़मली फिर एक बार अपनी शक्ल दिखला दे।

यही जज़्बात व तास्सुरात थे जो बेचैन दिल में करवटें ले रहे थे और हिरा की तंहाई में इन्हीं कैफ़ियतों के साथ ज़ाते अक़दस, अल्लाह की याद में लगी रहती और जब कई-कई दिन इस तरह गुज़र जाते तो कभी हज़रत ख़दीजा हाज़िर होकर खाने-पीने का सामान दे जातीं और कभी ख़ुद अपने आप जाकर कुछ दिनों का खाने-पीने का सामान ले आंते और हिरा में फिर इबादत में लग जाते। चुनांचे चौदह सदियां गुज़रने के बाद आज भी हिरा, ज़ुबान से ख़ास मंज़र की गवाही दे रही है जिसका लुत्फ़ उसने वर्षों उठाया है और यही इबादत के लिए वह तंहाई की जगह थी जहां ज़ाते अक़्दस पर सबसे पहले अल्लाह की वह्य आई और तर्तीब के साथ सूरः इक़रा और सूरः मुद्दस्सिर की कुछ आयतें सुनाने के लिए बशीर (बशारत देने वाला) व नज़ीर (डराने वाला) बना दिया।

पैग़म्बर बनाए गए

ग़रज़ ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िंदगी के इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों पहलुओं का यह हाल था कि एक तरफ़ तंहाइयों में अल्लाह की मारफ़त हासिल करने में लगे हुए सीधे रास्ते की तालाश, इंसानों के सुधार के लिए तड़प और तलब थी और दूसरी तरफ़ क़ौम व मुल्क के लोगों के साथ, सच अपनाने, सच बोलने, सच का जामा अ़मली ज़िंदगी में पहनने, सही मामले और सच्ची सोच जैसे बेहतरीन अख़्लाक़ और पाक-साफ़ ख़ूबियों के साथ समाजी ज़िंदगी को सामने लाना था और इन फ़र्क़ों की वजह से हर आदमी की निगाह में आपकी वह क़द्र और इ़ज़्ज़त थी कि आप सबकी मुत्तफ़क़ा राय से 'अस-सादिक़ वल अमीन' के लक़ब से याद किए जाते थे और कल जो दुश्मनी उनको मुहम्मद-अल्लाह के रसूल से नुबूवत के दावे पर हुई, वह आज मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह के साथ क़तई तौर पर नहीं थी और सब ही उनकी इ़ज़्ज़त व एहतराम के क़ायल थे।

Copyright OfflineDeeniApp

यही हालात व वाक़िआत थे, जबकि मुबारक उम्र चालीस मंज़िलें तै कर चुकी थी, रमज़ान का महीना था और आप हिरा ग़ार में इबादत में लगे हुए थे कि अचानक आपके सामने जिब्रील फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ और उसने बशारत दी कि अल्लाह ने आपको लोगों की रुश्द व हिदायत के लिए चुन लिया और रिसालत व पैग़म्बरी के ऊंचे मंसब पर बिठाया।

यह वाक़िया चूंकि मानव-जाति की तारीख़ में हैरत और इंक़िलाब की वजह साबित हुआ और उसने ज़ाते अक़्दस को बुलन्दी की इस हद पर पहुंचा दिया, जहां मज़हबों और मिल्लतों में सुधार व इंक़िलाब उस हस्ती की रहमत का फ़ैज नज़र आते हैं, इसलिए तारीख़ व हदीस के रोशन सफ़हों ने इस वाक़िए को तमाम तफ़्सील से सही सनद के साथ अपने सीने में हिफ़ाज़त से रखा है, चुनांचे हदीस-फ़न और इस्लामी तारीख़ के इमाम बुख़ारी रह० ने अपनी मशहूर व मक़बूल 'अल-जामेअ़-अस्सहीह' में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० की सनद से इस वाक़िए को जिन लफ़्ज़ों में नक़ल किया है, उसका तर्जुमा नीचे दिया जाता है। हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं—

नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर शुरू में सच्चे ख़्वाबों का सिलसिला जारी रहा। कोई ख़्वाब आप नहीं देखते थे, मगर अपनी ताबीर (स्वप्नफल) में इतना रोशन और सही साबित होता था, जैसे कि सुबह की सफ़ेदी नमूदार होती है। फिर आपको अकेले रहना महबूब हो गया और हिरा में इबादत में मश्ग़ूल रहने लगे। कभी-कभी आप घर वालों के पास भी तश्रीफ़ ले जाते। हज़रत खदीजा रज़ि० आपके खाने का कुछ सामान तैयार करतीं और आप उसको लेकर फिर ग़ार में वापस तश्रीफ़ ले जाते, इसी तरह हिरा में इबादत में मश्ग़ूल रहते कि अचानक एक दिन आप पर ख़ुदा का फ़रिश्ता नमूदार हुआ और कहने लगा, 'इक़रा' (पढ़िए)। नबी उम्मी ने कहा, 'मैं पढ़ना नहीं जानता'

पैग़म्बर इर्शाद फ़रमाते थे कि जब मैंने फरिश्ते से यह कहा तो उसने मुझको पकड़ में ले लिया, जिसकी शिद्दत से मुझको तक्लीफ़ होने लगी और फिर छोड़कर मुझसे दोबारा कहा, 'पढ़िए' मैंने वही जवाब फिर दिया, 'मैं पढ़ना नहीं जानता।' तब उसने फिर वही अ़मल किया और गिरफ़्त छोड़कर तीसरी

Copyright OfflineDeeniApp

बार फिर जुम्ला दोहरा दिया और मैंने भी वही पिछला जवाब दिया। ग़रज़ तीन बार यही बात-चीत और यही अ़मल होते रहने के बाद चौथी बार फ़रिश्ते ने (सूरः इक़रा) की ये कुछ आयतें तिलावत कीं–

तर्जुमा–*'अपने उस परवदिगार के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया, उसने इंसान के जमे .ख़ून से पैदा किया, पढ़ और तेरा परवरदिगार बहुत करम करने वाला है, जिसने क़लम (लेख) के ज़रिए (इंसान को) इल्म सिखाया, इंसान को वह सब कुछ सिखाया, जिसे वह नहीं जानता था।'*

ग़रज़ नबी अकरम ﷺ ने इन आ़यतों को दोहराया और ये आपके ज़ेहन में बैठ गईं। इसके बाद जब हिरा मे फ़ारिग़ हुए तो यह हालत थी कि दिल (वह्य की शिद्दत से) कांप रहा था। आपने मकान में दाख़िल होते ही फ़रमाया, 'मुझको कपड़ा ओढ़ाओ।' हज़रत ख़दीजा ने फ़ौरन कपड़ा ओढ़ा दिया। जब आपको सुकून हुआ तो ख़दीजा को तमाम वाक़िए कह सुनाए और फिर फ़रमाया, 'मुझे जान का डर है' (यानी मुझे यह ख़ौफ़ है कि शायद मैं वह्य के बोझ को बरदाश्त न कर सकूं।) हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने सुनकर अ़र्ज़ किया, ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा आपको हरगिज़ रुसवा नहीं करेगा, क्योंकि आप रिश्तों को जोड़ते हैं, मेहमानों की मेहमानदारी, बेचारों की चारागरी फ़रमाते और ग़रीब के लिए मआ़श का ज़रिया मुहैया करते हैं और हक़ पहुंचाने की कड़ी-से-कड़ी मुसीबत में मददगार बनते हैं।

इस बात-चीत के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहिम ब सल्लम को अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं। वरक़ा बिन नौफ़ल जाहिलियत के ज़माने में उन लोगों में से थे जिन्होंने सच्चे ईसाई धर्म को क़ुबूल कर लिया था, इबरानी ज़ुबान से वाक़िफ़ और इंजील की किताबत किया करते थे और बहुत बूढ़े और आंख के अंधे भी थे। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने वरक़ा से कहा, 'मेरे भाई! आप अपने भतीजे का वाक़िया तो सुनिए।' वरक़ा ने हालात मालूम किए तब नबी अकरम सल्ल० ने गुज़रा हुआ वाक़िया सुनाया। वरक़ा ने सुना तो कहा, 'यह वह फ़रिश्ता (जिब्रील ﷺ) है जो हज़रत मूसा ﷺ पर अल्लाह की वह्य ले आया करता था, काश! कि मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहूं। जब तेरी क़ौम तुझको तेरे वतन

Copyright OfflineDeeniApp

(मक्का) से निकालेगी।' आपने मालूम किया, क्या मेरी क़ौम मुझको वतन से बेवतन कर देगी? वरक़ा ने कहा, बेशक ऐसा होगा और जिस पैग़ाम के लिए ख़ुदा ने आपको पैग़म्बर बनाया है, उस ख़िदमत पर जो भी लगाया गया, उसके साथ यही शक्ल पेश आई है। पस अगर वह वक़्त मेरी ज़िंदगी में आया, तो मैं पूरी ताक़त के साथ तेरी हिमायत करूंगा।' मगर वरक़ा को यह वक़्त नहीं मिला, उससे पहले उनका इंतिक़ाल हो गया।

वह्य आने का पहला दौर

नबी अकरम सल्ल० पर सबसे पहले सूरः अ़लक़ की ये आयतें उतरीं–

तर्जुमा–*'पढ़ो, अपने परवरदिगार के नाम से, जिसने पैदा किया इंसान को जमे .ख़ून से, पढ़ो, और तेरा परवरदिगार जो सबसे ज़्यादा बरगज़ीदा है, वह हस्ती है जिसने सिखाया लिखना सिखाया इंसान को वह सब कुछ जो वह नहीं जानता था।* (86 : 1-5)

इन आयतों में यह बताया गया है कि हज़रत इंसान जो ख़ुदा की सबसे बेहतर और कायनात के सिलसिले की सबसे ज़्यादा तरक़्क़ी पाई मख़्लूक़ है और इसी वजह से वह कायनात में 'अल्लाह के ख़लीफ़ा' के मंसब पर बिठाया गया है, उसकी पैदाइशी कमज़ोरियों का यह हाल है कि उसकी पैदाइश गंदे पानी और जमे .ख़ून से हुई है। लेकिन अल्लाह ने जब उसको ऊंची जगह बख़्शने का इरादा किया और 'अस्फ़लुस्साफ़िलीन' (नीचों में नीच) के लायक़ मख़्लूक़ को ऊंचे दर्जों पर बिठाना चाहा तो उसको वह सिफ़ते आ़ला अ़ता फ़रमाई जो अल्लाह की सिफ़तों में बहुत ऊंची है यानी उसके 'सिफ़ते इल्म का मज़्हर' बनाया, उसको 'क़लम के ज़रिए' लिखना सिखाया और इल्म व इरफ़ान की धुरी बनाया, फिर इस तरफ़ भी इशारा किया कि इल्म हासिल करने के तीन ही तरीक़े हैं–

1. ज़ेहनी 2. लिसानी (भाषायी) 3. रस्मी

इल्म ज़ेहनी लफ़्ज़ों और रस्मों का मुहताज नहीं होता और लिसानी इल्म ज़ेहनी इल्म का मुहताज है मगर रस्म व नक़्श लिखने से बे-नियाज़ है और रस्मी इल्म रस्मुलख़त (लिपि) और नक़्शों का भी मुहताज है। पस अगर 'रस्मी

Copyright OfflineDeeniApp

इल्म' का किसी जगह ज़िक्र हो तो लिसानी और ज़ेहनी इल्मों का ज़िक्र अपने आप हो जाता है क्योंकि यह अपने से बुलन्द हर दो इल्मों के लिए बेहतरीन ताबीर करने वाला है और ज़ाहिर है कि इल्म रस्मी इल्म 'क़लम' का मुहताज है, इसलिए क़ुरआन ने 'अल्ल-म बिल क़लम' कह कर बड़े अच्छे ढंग से इस पूरी हक़ीक़त को वाज़ेह कर दिया। इसकी और तशरीह 'अ़ल्ल-मल इंसा न मा लम यालम' से कर दी और इस बयान का मक़्सद यह है कि एक तरफ़ इल्म और नुबूवत का क्या ताल्लुक़ है, वह ज़ाहिर हो जाए दूसरी ओर इंसान को अपनी ज़िंदगी के सही मक़्सद का इल्म हो जाए।

वह्य उतरने का दूसरा दौर

हिरा ग़ार में नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ किए जाने के वक़्त सूरः अलक़ की ये कुछ आयतें उतर कर अल्लाह की वह्य का सिलसिला कट गया। अल्लाह की हिक्मत का तक़ाज़ा यह हुआ कि हिरा में फ़रिश्ते के ज़ाहिर होने और वह्य के नाज़िल होने से फ़ौरी तौर पर नुबूवत व रिसालत की ख़ुसूसियतें और असरात ज़ाते अक़्दस पर हुए हैं, वे अच्छी तरह पक जाएं और नुबूवत व रिसालत की सलाहियत व इस्तेदाद की तक्मील हो जाए, ताकि आगे वह्य के सिलसिले के मज़बूत मुहर्रिकात और मुअस्सिरात पैग़म्बर ﷺ की बशरी ख़ासियतों के लिए अजनबी न रहें, इसलिए कुछ दिनों के लिए वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द रहा। इसी को मज़हब के लफ़्ज़ों में 'फ़तरते वह्य' (वह्य का बन्द होना) कहते हैं।

लेकिन ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हिरा में पेश आने वाली कैफ़ियत और सूरतेहाल से जो फ़ितरी तश्वीश (स्वाभाविक चिन्ता) पैदा होती थी, जब उसने सुकून और इत्मीनान की शक्ल अख़्तियार कर ली तो वह्य के नाज़िल होने की रूहानी कैफ़ियतों ने इस दर्जा लुत्फ़ पैदा किया कि आप उस 'फ़तरत' को बर्दाश्त न कर सके और लुत्फ़ वाले और गहरे जज़्बों ने इस हद तक बेचैनी की शक्ल अख़्तियार कर ली कि कभी-कभी नामूसे अकबर (जिब्रील अमीन) ज़ाहिर होकर आपको सब्र व तस्कीन की दावत देते और यक़ीन दिलाते थे कि अपनी तमाम नज़ाकतों, ख़ूबियों और हुस्न व कमाल

Copyright OfflineDeeniApp

के साथ नुबूवत व रिसालत का यह सिलसिला आपकी ज़ाते अक़्दस के साथ जुड़ चुका है और 'फ़तरत' का यह दौर बस थोड़े दिनों का है, इसलिए आप परेशान न हों। तब आप तस्कीन पाते और वायदे वाले वक़्त के इन्तिज़ार में रहते कि कुछ दिनों बाद वह्य के आने का सिलसिला दोबारा शुरू हुआ और सबसे पहले सूरः मुद्दस्सिर की ये आयतें उतरीं–

तर्जुमा–*'ऐ कमली पोश उठ, (और लोगों को गुमराही के अंजाम से) डरा और अपने पालनहार की अ़ज़्मत व जलाल को बयान कर और लिबास को पाक कर और बुतों से जुदा रह और ज़्यादा हासिल करने की नीयत से अच्छा व्यवहार न कर और अपने पालनहार के मामले में (अज़ीयत व मुसीबत पर) सब्र अख़्तियार कर।'* (74 : 1-7)

इन आयतों ने गोया ज़िंदगी के इंसानी मक़्सद की तक्मील कर दी, क्योंकि सूरः अ़लक़ में कहा गया था कि इंसानियते कुबरा के लिए 'सही इल्म' शर्त है। यह नहीं तो कुछ भी नहीं। अब यह बताया जा रहा है कि सही इल्म की ऊंचाई और बड़ाई के मान लेने के बाद भी इंसानियत की तक्मील उस वक़्त तक नामुम्किन है कि सही इल्म के साथ 'सही अ़मल' भी मौजूद हो, इसलिए कि अगर इल्म सही है और अ़मल सही मफ़क़ूद हो, तो उसका फ़ायदा मुअ़त्तल और बेकार है और अगर अ़मल है और सही इल्म नदारद, तो वह अ़मल नुक़्सान की वजह है। रुश्द व हिदायत और सीधे रास्ते के लिए दोनों ही का वुजूद ज़रूरी है और तभी 'इंसान' 'इंसानियते कुबरा' हासिल कर सकता है।

ग़रज़ जिस तरह सूरः अ़लक़ की आयतों से 'इल्मे नाफ़ेअ़' (लाभप्रद ज्ञान) की ओर इशारे किए, उसी तरह सूरः मुद्दस्सिर ने 'अ़मले नाफ़ेअ़' की बुनियादी तफ़्सीलें ज़ाहिर की हैं। ख़ुदा की हस्ती और उसका कामिल रब होना दोनों का अ़मली एतराफ़, बातिनी तहारत व पाकीज़गी का कमाल, ज़ाहिरी तहारत व पाकीज़गी का लाज़िम होना, बेग़रज़ और बेलौस अख़्लाक़े हमीदा की बुनियाद, 'एहसान' पर जमाव और क़ुबूले हक़ और नेक अ़मली के नतीजों पर 'सब्र' इन आयतों का हासिल हैं और यही वे बुनियादी बातें है, जिनमें इल्मे हक़ और अ़मले सही की तमाम कायनात समा दी गई है।

Copyright OfflineDeeniApp

साथ ही हज़रत मुहम्मद ﷺ के लिए सूरः अ़लक़ और सूरः मुद्दस्सिर का यह ख़िताब और पैग़ामे हक़ इशारा है इस तरफ़ कि अ़मल का यह निज़ाम मंसबे रिसालत के लिए 'नफ़्स की तक्मील' और रुश्द व हिदयत की दावत के लिए 'पहले दर्जे' की हैसियत रखता है और यही क़रीबी मुस्तक़्बिल में 'आम बेसत' की वजह साबित होगा।

दावत व इर्शाद के एलान की पहली मंज़ील

क़ुरआन के इस हुक्म के बाद जो कि तब्लीग़ और हक़ की दावत का पहला पैग़ाम था, दावत व इर्शाद ने एक क़दम और आगे बढ़ाया और अब ज़ाते हक़ ने सूरः शोअ्रा की आयतें नाज़िल फ़रमा कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़ैसला सुनाया कि सबसे पहले रिश्तेदारों और क़रीब के लोगों को हक़ की दावत दीजिए, ताकि दूसरों पर भी उसका असर पड़े और यों भी क़ुरैश और बनी हाशिम के वह्य क़ुबूल करने का असर तमाम अरब क़बीलों पर पड़ना लाज़िमी है, इसलिए वे सब क़बीलों के सरख़ेल और सर गिरोह हैं और हरम के रहने वालें होने की वजह से तमाम अरब पर उनका दीनी और दुन्यवी असर है। सूरः शोअ्रा में है–

तर्जुमा– *'और (ऐ पैग़म्बर!) अपने क़रीबी नातेदारों को (गुमराही से) डरा और जो मुसलमान तेरी पैरवी करने वाले हैं, उनके लिए अपने बाज़ुओं को पस्त रख (यानी नर्मी और तवाज़ो से पेश आ) अगर वे नाफ़रमानी करें तब तो उनसे कह दे मैं, तुम्हारे इन (बुरे) कामों से बरी हूं और ग़ालिब रहम करने वाली ज़ात पर भरोसा कर जो तुझको उस वक़्त भी देखती है, जब तू उसके दरबार में खड़ा होता है और उस वक़्त भी, जबकि तू सज्दा करने वालों में मिलकर उसके सामने सज्दा रेज़ होता है। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।'*

(26 : 214-220)

गोया यह इल्म व अ़मल की तक्मील और रुश्द व हिदायत के 'मंसबे फ़ैज़ान' के बाद दूसरा दर्जा था, जिसमें हक़ का एलान और इस्लाम की दावत की अ़मली सूरत अख़्तियार करने के लिए तहरीक की गई। चुनांचे सही रिवायतें गवाह हैं कि आपने सफ़ा की चोटी पर खड़े होकर उस ज़माने में राइज

Copyright OfflineDeeniApp

एलान के तरीक़े के मुताबिक़ 'या सबाहा' कहकर क़ुरैश के ख़ानदानों को पुकारा और जब सब जमा हो गए तो एक मिसाल देकर समझाया कि बेशक मैं ख़ुदा को पैग़म्बर, रसूल और सीधे रास्ते के लिए सच्चा हिदायत करने वाला हूं। इर्शाद फ़रमाया—

'लोगो! अगर मैं तुमसे यह कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक भारी फ़ौज जमा है और तुम पर हमले के लिए तैयार, तो क्या तुम मुझको सच्चा समझोगे? 'ओ मुसद्दिक़ी! लोगों ने कहा हमने तुझको 'अस्सादिक़ुल अमीन' पाया है तू जो कुछ कहेगा हक़ और सदाक़त पर टिका होगा, तब आपने फ़रमाया, तो लोगो! मैं तुमको एक अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मूर्ति-पूजा की गन्दगी से बचाना चाहता हूं। तुम उस दिन से डरो, जब ख़ुदा के सामने हाज़िर होकर अपने आमाल व किरदार का हिसाब देना है।' (तारीख़े इब्ने कसीर)

यह सच्ची आवाज़ जब क़ुरैश के कानों में पहुंची, तो वे हैरान रह गए और बाप-दादा के दीन 'बुतपरस्ती' के ख़िलाफ़ आवाज़ सुनकर ख़फ़ा होने लगे गोया मब में एक आग दौड़ गई और सबसे ज़्यादा आपके हक़ीक़ी चचा अबूलहब को तैश आया और ग़ज़बनाक होकर कहने लगा, 'तू हमेशा हलाकत और रुसवाई का मुंह देखे, क्या तूने इस ग़रज़ से हमको बुलाया था?'

अजब मंज़र है कि कुछ घड़ियां पहले जिस मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह की सदाक़त व अमानत और अच्छी आदतों से सारी क़ौम मुतास्सिर रहकर उसकी अ़ज़्मत न इज़्ज़त करती और उसके साथ वालिहाना मुहब्बत ज़ाहिर करती थी, वही आज इस एलान पर कि 'मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह हूं एक साथ पराएपन और नफ़रत रखने वाली और ख़ून की प्यासी बन गई।

दावत व इर्शाद की दूसरी मंज़िल

सीरत की किताबों में पढ़ आए हो कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने ख़ानदान और बिरादरी के लोगों को राहे हक़ दिखाने और उनकी ईमानी और अख़्लाक़ी हालत ठीक करने की ख़ातिर क्या कुछ नहीं किया, मगर क़ुरैश के कुछ लोगों के सिवा किसी ने आपकी दावत पर लब्बैक न कहा और अ़दावत व बुग़्ज़ को अपना शेवा बनाए रखा। तब दावत व इर्शाद ने तरक़्क़ी

Copyright OfflineDeeniApp

के तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा और अल्लाह की तरफ़ से हुक्म हुआ, ऐ हक़ की दावत देने वाले! ख़ानदान और बिरादरी के इंकार और सरकशी से बद-दिल और ग़मगीन न हो और अपनी ज़िम्मेदारी पर जमकर डटे रहो, क्योंकि सआ़दत (सौभाग्य) और शक़ावत (दुर्भाग्य) तुम्हारे क़ब्ज़े में नहीं हैं, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ इब्लाग़ (पहुंचाना) है अलबत्ता अब ख़ानदान के दायरे से आगे बढ़कर मक्का और उसके चारों तरफ़ के क़बीलों और क़ौमों को भी हक़ का यह पैग़ाम सुनाओ और दावत व इर्शाद का यह तोहफ़ा उनके सामने भी रखो, ताकि जो सईद रूहें 'पैग़ामे हक़' के लिए बेचैन और परेशान हैं, वे इस पर लब्बैक कह कर तस्कीन पाएं और प्यासी रूह को ज़िंदगी के पानी से सींचें।

तर्जुमा—*और (देखो) यह किताब (क़ुरआन) है जिसे हमने (तौरात की तरह) नाज़िल किया, बरकत वाली और जो किताब इससे पहले नाज़िल हो चुकी है, इसकी तस्दीक़ करने वाली और इसलिए नाज़िल की, ताकि तुम उम्मुल क़ुरा (यानी शहर मक्का) के बाशिंदों को और उसको जो उसके चारों तरफ़ हैं (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ।* (6 : 92)

तर्जुमा—*और इसी तरह हमने तुम पर क़ुरआन नाज़िल किया अरबी ज़ुबान में, ताकि (गुमराहियों के नतीजों से) डराओ मक्का शहर के बाशिंदों को और उनको जो उसके आस-पास हैं।* (42 : 7)

चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हक़ की तब्लीग़ को मक्का की हदबन्दियों से आज़ाद करके मक्का के आस-पास के लोगों के लिए आम कर दिया और ताइफ़, हुनैन और यसरिब (मदीना) तक हक़ की अपनी आवाज़ को पहुंचाया, बल्कि मुहाजिरों के ज़रिए हब्शा के ईसाई बादशाह असहमा तक हक़ के कलिमे को पहुंचाया।

आम बेसत

इसके बाद दावत व इर्शाद की वह तीसरी मंज़िल पेश आई जो मुहम्मद सल्ल० के नबी बनाए जाने का नस्बुलऐन और एक ही मक़्सद था और तमाम नबियों और रसूलों के मुक़ाबले में ज़ाते अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व

Copyright OfflineDeeniApp

सल्लम के नबी बनाए जाने में ख़ास बात थी, यानी अल्लाह ने आपके नबी बनाए जाने को 'आम बे सत' क़रार दिया और हुक्म हुआ कि आप न सिर्फ़ क़ुरैश के लिए, न सिर्फ़ उम्मुलक़ुरा (मक्का) और मक्का के पास-पड़ोस के लिए, न सिर्फ़ अरब के लिए नबी व रसूल बनाकर भेजे गए हैं, बल्कि आपकी बे सत (नबी बनाया जाना) तमाम इंसानी कायनात के लिए हुई है और आप अरब व अजम और काले-गोरे सब के लिए पैग़म्बर और ख़ुदा के एलची हैं। इर्शाद होता है–

तर्जुमा–*और हमने तुमको इंसानी कायनात के लिए पैग़ाम देकर भेजा है, (नेक अ़मल पर) ख़ुशख़बरी सुनाने और (बुरे आमाल पर) लोगों को डराने के लिए, अक्सर (जाहिल) लोग इस हक़ीक़त को नहीं समझते।* (34 : 28)

तर्जुमा–*पाक और बरतर है वह ज़ात, जिसने हक़ व बातिल के दर्मियान तमीज़ देने वाली किताब नाज़िल फ़रमाई अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर ताकि वह तमाम जहान वालों को (बुरे अंजाम से) डराए।* (25 : 9)

इस्लाम की दावत का मुज्मल ख़ाका और हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अरब की धरती पर नबी बना कर भेजे गए। इस फ़ितरी काम के तरीक़े को सामने रखकर सबसे पहले क़ौम अरब ही उनकी दावत व इर्शाद का मुख़ातब क़रार पाई, ताकि जो क़ौम कल चौपायों का गल्लाबान थी, नुबूवत के नूर से रोशन होकर इंसानी कायनात की गल्लाबान बन जाए और अल्लाह के सबसे बुज़ुर्ग पैग़म्बर व रसूल की रहमत के साए में तर्बियत पाकर पूरी कायनात के लिए 'ख़ैरे उम्मत' का लक़ब पाए, तो अब देखना यह है कि अरब जैसी, सरकश, जाहिल और तहज़ीब से कोरी क़ौम और अख़्लाक़ी व फ़िक्री जज़्बात व एहसासात से बिल्कुल ही हटी हुई क़ौम पर 'इस्लाम की दावत' ने फ़ौरी तौर पर क्या असर किया, ताकि हम आसानी से यह अन्दाज़ा कर सकें कि जिस मज़हब के बुनियादी उसूल और अ़क़ीदे और सोच-ख़्याल ने ऐसी क़ौम की ज़िंदगी के शोबों में हैरत में डालने

Copyright OfflineDeeniApp

वाला और शानदार इंक़िलाब पैदा करके उससे रूहानी दुनिया का इंसान बना दिया, उस मज़हब के सच्चे होने के लिए अकेले यह एक कारनामा ही रोशन दलील बन सकता है।

मक्का के मुश्रिकों की लगातार मुख़ालफ़त, ईज़ा पहुंचाने और अज़ाब देने के हौलनाक तरीक़ों ने जब मुसलमानों की एक मुख़्तसर जमाअ़त को अफ़रीक़ा के मशहूर मुल्क हब्शा की जानिब हिजरत करने पर मजबूर कर दिया और वे ईसाई हुकूमत असहमा की हुकूमत में शरणार्थी हो गए तो क़ुरैश इसको भी सहन न कर सके और असहमा के दरबार में बड़ों का एक वफ़्द भेजकर यह मांग की कि वह मुसलमानों को इसलिए उनके हवाले कर दे कि यह बद-दीन होकर और बाप-दादा के दीन को छोड़कर क़ौम में तफ़रक़ा पैदा करने की वजह बने और यहां रहकर भी हुक्मरां के दीन के मुख़ालिफ़ हैं।

असहमा के वफ़्द की मांग सुनकर मुसलमानों को जवाबदेही के लिए दरबार में तलब किया और इस्लाम के बारे में पूरी बात मालूम की, तब हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के बारे में तक़रीर फ़रमाई और उसकी मुक़द्दस तालीम का मुख़्तसर और जामे नक़्शा खींचकर अस्हमा को सही सुरतेहाल से आगाह किया। यही वह तक़रीर है जो असल में अरब-जाहलियत के दौर और इस्लाम क़ुबूल करने के दौर की इंक़िलाबी कैफ़ीयत का मुख़तसर मगर बेहतरीन ख़ाका है।

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने बादशाह और दरबारियों को मुख़ातब करके इर्शाद फ़रमाया।

'बादशाह! हम पर एक लम्बा अंधा ज़माना गुज़रा है, उस वक़्त हमारी जिहालत का यह हाल था कि एक ख़ुदा को छोड़कर बुतों की परस्तिश करते थे और ख़ुद के गढ़े पत्थरों की पूजा हमारा शेवा था। मुरदार खाना, ज़िनाकारी, लूटमार, रिश्तों का तोड़ना सुबह व शाम का हमारा मश्ग़ला था, पड़ोसियों के हक़ों से बेगाना, रहम व इंसाफ़ से नावाक़िफ़ और हक़ व बातिल के इम्तयाज़ से नावाक़िफ़, ग़रज़ हमारी ज़िंदगी पूरी की पूरी दरिंदों की तरह थी। मज़बूत कमज़ोर को कुचलने और मज़बूत क़मजोर को हज़्म कर लेने को अपने लिए फ़ख़्र और इम्तियाज़ी बात समझता था।

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह की रहमत का करिश्मा देखिए कि उसने हमारे अन्दर एक बुज़र्ग भेजा, जिसके नसब को हम जानते थे, जिसकी सच्चाई, अमानतदारी पर दोस्त-दुश्मन दोनों गवाह, जिसकी क़ौम ने उसको 'मुहम्मद अल-अमीन' का लक़ब दिया, वह आया और उसने बतलाया कि ख़ुदा का कोई शरीक नही, वह शिर्क से पाक है, बुतपरस्ती जिहालत का शेवा है, इसलिए छोड़ देने के क़ाबिल है और सिर्फ़ एक खुदा ही की इबादत बन्दे का हक़ है। उसने हमको हक़ कहने, सच बोलने की हिदायत की और रिश्तों को जोड़ने का हुक्म दिया। पड़ोसियों और कमज़ोरों के साथ अच्छा व्यवहार करना सिखाया, क़त्ल व ग़ारत की बुरी रस्म को मिटाया। ज़िनाकारी को हराम और फ़हश कह कर उस गन्दे इंसानी काम से हमको नजात दिलाई, निकाह में महरम-ग़ैर महरम का फ़र्क़ बताया। झूठ बोलने, नाहक़ यतीम के माल खाने को हराम फ़रमाया। नमाज़ और ख़ैरात व सदक़ात की तालीम दी और हर हैसियत में हमको हैवानियत (पशुता) के गहरे गढ़े से निकाल करं इंसानियत के बड़े दर्जे तक पहुंचाया।

बादशाह! हमने उस मुक़द्दस तालीम को क़ुबूल किया औ़र उस पर सच्चे दिल से ईमान लाए। यह है हमारा वह क़ुसूर जिसकी वजह से मुश्रिकों का वफ़्द (प्रतिनिधि-मंडल) तुझसे मांग करता है कि तू हमको उनके हवाले कर दे।'

(सीरत इब्ने हिशाम)

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के साफ़ और सादा, मगर रोशन उसूल को जब असहमा के सामने सच्ची हिम्मत के साथ पेश किया तो हब्शा के हुक्मरां ने मुसलमानों को अपनी पनाह से निकाल कर कुफ़्र के हवाले करने से इंकार कर दिया और फिर हज़रत जाफ़र रज़ि० ने बड़ी अच्छी आवाज़ में सूरः मरयम की कुछ आयतें तिलावत कीं तो हब्शा का नजाशी बेहद मुतास्सिर हुआ और आंखों में आंसू लाकर इस्लाम की सच्चाई पर ईमान लाया और हज़रत जाफ़र के हाथ पर मुसलमान हो गया।

यह है इस्लाम की दावत का मुख़्तसर ख़ाका जिसने दुनिया के सबसे तारीक इंसानी ख़ित्ते को एक बड़ी ही थोड़ी मुद्दत में सूरज की तरह रोशन और ताबनाक बना दिया। इस ख़ाके में एतक़ादात, अख़्लाक़ और भले आमाल का वह तमाम इल्म मौजूद है, जिससे क़ुरआन ने अलग-अलग सूरतों में हस्बे हाल

Copyright OfflineDeeniApp

और मुनासिब मुक़ाम पर ज़्यादा-से-ज़्यादा बयान किया है, बल्कि पूरा क़ुरआन इन्हीं रोशन हक़ीक़तों का रासा दिखाने वाला, और रहनुमाई करने वाला है।

मेराज

'इसरा' (मेराज) के मानी रात में ले जाने के है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वह बेमिसाल और हैरत में डालने वाला वाक़िया, जिसमें अल्लाह ने अपने रसूल को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) और वहां से मला-ए-आ़ला तक जिस्म के साथ (सशरीर) अपनी निशानियां दिखाने के लिए सैर कराई, चूंकि रात के एक हिस्से में पेश आया था, इसलिए 'इसरा' कहलाता है।

'मे राज' उरूज से निकला है, जिसके मानी चढ़ने और बुलन्द होने के हैं और इसीलिए मे राज ज़ीना को भी कहते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चूंकि इस रात में मला-ए-आ़ला की बढ़ती मंज़िलें तै फ़रमाते हुए सातों आसमान, सिदरतुल-मुंतहा और उससे भी बुलन्द होकर अल्लाह की निशानियां अपनी आंखों देखीं और इन वाक़ियों के ज़िक्र में वह्य के तर्जुमान ने 'अ-र-ज बी' का जुम्ला इस्तेमाल फ़रमाया, इसलिए इस अज़ीम वाक़िए को मेराज के नाम से याद किया जाता है।

वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार हुआ

इसलिए दो अलग-अलग ताबीरों और वाक़ियों की तफ़्सील में थोड़े-थोड़े इख़्तिलाफ़ को सामने रखते हुए रिवायतों में मेल पैदा करने की ग़रज़ से इस वाक़िए की ज़्यादा तायदाद का क़ायल होना तारीख़ी और तहक़ीक़ी निगाह से हरगिज़ सहीह नहीं है। मशहूर मुहक़्क़िक़, जलीलुल क़द्र मुहद्दिस, मुफ़स्सिर और तारीख़दां हाफ़िज़ इमादुद्दीन इब्ने कसीर का यह फ़रमाना कि 'इन तमाम रिवायतों को जमा करने से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो गई कि मेराज का वाक़िया सिर्फ़ एक ही बार पेश आया, हक़ीक़त खोल देती है।

Copyright OfflineDeeniApp

तारीख़ व सन् की तारीख़

यह वाक़िया कब पेश आया, इस बारे में बहुत-से क़ौल हैं, लेकिन इन दो बातों पर सब मुत्तफ़िक़ हैं–

एक यह कि मेराज का वाक़िया हिजरत से पहले पेश आया। दूसरी बात यह कि हज़रत ख़दीजा के इंतिक़ाल के बाद वाक़े हुआ और जबकि हिजरत के वाक़िए पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि 13 नबवी को पेश आया और जैसा कि बुख़ारी में ज़िक्र है हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़दीजा का इंतिक़ाल हिजरत से तीन साल पहले और एक दूसरी रिवायत के पेशेनज़र पांच वक़्त की नमाज के फ़र्ज़ होने से पहले हो चुका था तो अब मेराज के वाक़िए को हिजरत से पहले के इन तीन वर्षों के अन्दर ही होना चाहिए।

तो अब यह कहना आसान है कि मेराज का वाक़िया हिजरत से एक साल या डेढ़ साल पहले पेश आया। क़ौल यह है कि महीना रजब का था और तारीख़ 29 थी। चुनांचे इब्ने अ़ब्दुल बर्र, इमाम नववी और अ़ब्दुल ग़नी मुक़द्दसी रह० जैसे मशहूर हदीस के माहिरों व रुझान इसी तरफ़ है कि रजब था और बाद के तो फ़रमाते हैं कि 27 थी और दावा करते हैं कि उम्मत में हमेशा से इसी पर इत्तिफ़ाक़ रहा है।

क़ुरआन और मेराज का वाक़िया

क़ुरआन में इसरा या मेराज का वाक़िया दो सूरतों–बनी इसराईल और अन-नज्म–में ज़िक्र किया गया है। सूरः बनी इसराईल में मक्का (मस्जिदे हराम) से बैतुल मक़्दिस (मस्जिदे अक़्सा) तक सैर का ज़िक्र है और सूरः नज्म में मला-ए-आला के सैर व उरूज का भी ज़िक्र मौजूद है। अगरचे आमतौर पर यह समझा जाता है कि बनी इसराईल की सिर्फ़ शुरू ही की आयतों में इस वाक़िए का ज़िक्र है, मगर हक़ीक़त यह है कि पूरी सूरः इसी शानदार वाक़िए से मुताल्लिक़ है और सूरः की तमाम आयतें इसी को पूरा करती हैं। और इस

Copyright OfflineDeeniApp

दावे के लिए एक साफ़ और खुली दलील ख़ुद इसी सूरः में यह मौजूद है कि बीच सूरः में आयत 'व मा ज-अलनर्रोया अल्लती अरै ना-क इल्ला फ़ित-न-तल्लिन्नास' में मेराज के इसी वाक़िए का तज़्क़िरा हो रहा है। इससे पहले हज़रत मूसा और हज़रत नूह के दावत व तब्लीग़ के वाक़िए इसी सिलसिले में गवाह और नज़ीर के तौर पर पेश किए गए हैं कि इंकार करने वालों ने हमेशा इसी तरह ख़ुदा की सच्चाइयों को झुठलाया है, जिस तरह आज मेराज के वाक़िए को झुठला रहे हैं।

हदीसें और मेराज के वाक़िए का सबूत

मशहूर मुहद्दिस ज़रक़ानी रह० कहते हैं कि मेराज का वाक़िया 45 सहाबा से नक़ल किया गया है और फिर उनके नाम गिनाए हैं। इन सहाबा में मुहाजिरीन भी हैं और अंसार भी और यह हरगिज़ नहीं समझना चाहिए कि चूंकि अंसार सहाबा मक्का में मौजूद नहीं थे, इसलिए उनकी रिवायतें सिर्फ़ सुनी हुई हैं। इसलिए कि ऐसे अहम वाक़िए को जिसका इस्लाम की तरक़्क़ी के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ और हिजरत के वाक़िए के साथ ख़ास ताल्लुक़ है, सहाबा ने सीधे-सीधे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मालूम किया होगा और अगर मुहाजिरों से भी सुना होगा तो फिर ज़ाते अक़्दस से तस्दीक़ ज़रूर ही की होगी। चुनांचे शद्दाद बिन औस रज़ि० की रिवायत में ये लफ़्ज़ मौजूद हैं—

हमने (सहाबा ने) अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेराज किस तरह हुई? (तिर्मिज़ी)

अरबी लफ़्ज़ 'कुलना' यह साबित कर रहा है कि बेशक मेराज से मुताल्लिक़ सहाबा रज़ि० के आम मज्मे में नबी अकरम सल्ल० से पूछा जाता था, जिनमें मुहाजिरीन व अंसार सब ही शरीक होते थे और मालिक बिन सअसआ़ रज़ि० अंसारी सहाबी हैं। उनकी रिवायतें मेराज में है—

नबी अकरम ﷺ ने उनसे (सहाबा से) यह वाक़िया बयान किया।

(बुख़ारी, किताबुल मेराज)

Copyright OfflineDeeniApp

वाक़िए की शक्ल

चूंकि यह वाक़िया अपनी अहमियत के साथ-साथ लम्बा भी था, इसलिए बशर होने की वजह से वाक़िए के असल तफ़्सीली हालात में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और तवातुर की हद तक रिवायतों के नक़ल किए जाने के बावजूद कई रिवायतों में कुछ जगहों पर पाये जाने वाले इख़्तिलाफ़ से असल वाक़िए की हक़ीक़त पर बिल्कुल कोई असर नहीं पड़ता, ख़ासतौर से जबकि क़ुरआन ने इन अजीब और हैरत में डालने वाले वाक़ियों को क़तई नस्स से वाज़ेह पर दिया है, जिनके बारे में मुलहिद अपने हलहाद के ज़रिए बातिल तावील गढ़ करके इस वाक़िए की मोज़ाना हैसियत का इंकार करते हैं।

मेराज का वाक़िया और क़ुरआन

सूरः बनी इसराईल में वाकिया इसरा बैतुल मक़्दिस तक की सैर से मुताल्लिक़ है—

तर्जुमा—*पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने अपने बन्दे को (यानी पैग़म्बरे इस्लाम) को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक कि उसके आस-पास को हमने बड़ी ही बरकत दी है, सैर कराई और इसलिए सैर कराई कि अपनी निशानियां उसे दिखाएं। बेशक वही ज़ात है जो सुनने वाली, देखने वाली है'* (17 : 1)

तर्जुमा—*'और वह दिखलावा जो तुझको हमने दिखाया, सो लोगों की आज़माइश के लिए (दिखलाया)* (19 : 59)

और सूरः नज्म में मला-ए-आ़ला तक उरूज का ज़िक्र भी मौजूद है—

तर्जुमा—*'गवाह है सितारा जबकि डूबे, तुम्हारा साथी न गुमराह हुआ और न भटका और नहीं बोलता अपने नफ़्स की ख़्वाहिश से, यह नहीं है मगर हुक्म जो उसको भेजा गया है उसको बतलाया है सख़्त ताक़तों वाले ज़ोरावर (फ़रिश्ते) ने (कि यह ख़ुदा की वह्य है) जो सीधा बैठा और था वह आसमान के ऊंचे किनारे पर, फिर वह क़रीब हुआ, पस झुक आया, फिर रह गया (दोनों के दर्मियान) दो कमान बल्कि, उससे भी नज़दीक का फ़र्क़, पस ख़ुदा ने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, जो भी*

Maktaba-e-Nashaat
Copyright OfflineDeeniApp

वह्य भेजी, उस (बन्दे) ने जो देखा उसके दिल ने झूठ नहीं कहा, (यानी आंख की देखी, बात को झुठलाया नहीं, बल्कि तस्दीक़ की) तो क्या तुम उससे इस पर झगड़ते हो जो उसने ख़ुद देखा है (यानी वाक़िए पर झगड़ते हो) और उस (बन्दे) ने ख़ुदा को देखा एक (ख़ास) नुज़ूल के साथ, जबकि वह बन्दा सिदरतुल मुन्तहा के नज़दीक मौजूद था, जिसके पास आराम से रहने की बहिश्त (जन्नतुल मावा) है, उस वक़्त सिदरा (बेरी का पेड़) पर छा रहा था, जो कुछ छा रहा था। उसके देखने के वक़्त निगाह न बहकी और न हद से आगे बढ़ी, बेशक उस (बन्दे) ने (इस हालत में) अपने परवरदिगार के बड़े-बड़े निशान देखे।'

(53 : 1-18)

सूरः बनी इसराईल और वाक़िया मेराज

यहां बनी इसराईल और सूरः नज्म की तफ़्सीर का मौक़ा नहीं, सिर्फ़ इशारे ही काफ़ी मालूम होते हैं, क्योंकि अगर एक तरफ़ ये आयतें अपने मुकम्मल तफ़्सीरी हक़ की मांग करती हैं तो दूसरी ओर अपने-अपने आगे-पीछे की बातों को देखते हुए थोड़े ही में सब कुछ चाहती हैं। बहरहाल ज़रूरत के मुताबिक़ दोनों का ख़्याल करते हुए इतनी गुज़ारिश है कि बनी इसराईल की शुरू की आयत में मेराज के वाक़िए से मुताल्लिक़ जो कुछ कहा गया उसे अगर परखा जाए तो आसानी से यह फ़ैसला किया जा सकता है कि जहां तक क़ुरआन का ताल्लुक़ है, उसका फ़ैसला यही है कि मेराज का वाक़िया, जागते में पूरे जिस्म के साथ पेश आया है और इस मतलब से हट कर जब इसको सोते का ख़्वाब या रूहानी ख़्वाव कहा जाता है तो मज़बूत तावीलों के बग़ैर दावे पर दलील क़ायम नहीं हो सकती, क्योंकि क़ुरआन या सहीह हदीसें किसी की वज़ाहत के साथ यह ज़ाहिर करती हैं कि इसरा-मेराज का वाक़िया जिस्म के साथ जागते में पेश आया है और इन दलीलों की फ़ेहरिस्त के तौर पर इस तरह गिनाया जा सकता है—

1. सूरः बनी इसराईल की आयत 'असरा बिअब्दिही' में असरा के मानी वही है जो हज़रत मूसा और हज़रत लूत ﷺ से मुताल्लिक आयतों में हैं यानी बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ रात में ले चलना।

Copyright OfflineDeeniApp

2. 'वमाज-अ़लना-क रोयल्लती अरैना-क' में रोया आंखों से देखना है न कि ख़्वाब, या रूहानी तौर पर देखना और अरब भाषा में यह यानी मजाज़ नहीं, बल्कि हक़ीक़त है।

3. आयत 'इल्ला फ़ित-न-तल्लिन्नास' में क़ुरआन ने इस वाक़िए को इक़रार व इंकार की शक्ल में ईमान व कुफ़्र के लिए मेयार क़रार दिया है और अगरचे नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के रूहानी मुशाहदे या ख़्वाब पर भी मुश्रिकों और मुन्किरों का साफ़ इंकार मुम्किन और साबित है, लेकिन इस जगह कलाम यही ज़ाहिर करता है कि वाक़िए की अ़ज़्मत को सामने रखकर इंकार करने वालों का इन्कार इसलिए तेज़ से तेज़तर हुआ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस वाक़िए को आंखों देखे की तरह बयान किया है।

4. सूरः नज्म की आयत 'मा ज़ाग़ल ब-सरु व मा तग़ा' में जिब्रील का देखना नहीं, बल्कि इसरा के वाक़िए का आंखों देखा होना मुराद है और सूरः की आयत 'माज़ाग़ल बसरु व मा तग़ा' में यह बतलाना मक़्सूद है कि आंख ने जो कुछ देखा, दिल ने हू-ब-हू उसकी तस्दीक़ की और वाक़िए से मुताल्लिक़ आंखों के देखने ने टेढ़ अख़्तियार की और न दिल के देखने ने इस हक़ीक़त का इंकार किया, बल्कि दोनों के मेल ने इसकी सच्चाई पर तस्दीक़ की मुहर लगा दी।

5. सहीह हदीस में है कि जब मुश्रिकों ने इस वाक़िए के इंकार पर यह हुज्जत क़ायम की कि अगर यह सही है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल मक़्दिस की मौजूदा छोटी-छोटी तफ़्सील बताएं, क्योंकि हमको यक़ीन है कि न उन्होंने बैतुल मक़्दिस को कभी देखा है, और न बिन देखे छोटी-छोटी तफ़्सीलें बताई जा सकती हैं। तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने से बैतुल मक़्दिस के बीच के परदे अल्लाह की ओर से उठा दिए गए और आपने एक-एक चीज़ को देखते हुए मुश्रिकों के सवालों के सही जवाब दिए, जिनमें मस्जिद की तामीरी तफ़्सील भी आ गई। यह दलील है इस बात की कि मुश्रिक यह समझ रहे थे कि आप इसरा को बेदारी की हालत में और जिस्म के साथ होना बयान फ़रमा रहे हैं और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके ख़्याल को रद्द नहीं किया है, बल्कि

Copyright OfflineDeeniApp

उसकी ताईद के लिए मोजज़ों वाली तस्दीक़ का मुज़ाहरा फ़रमा कर उनको ला जवाब बना दिया।

6. तर्जुमानुल क़ुरआन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से सही सनद के साथ नक़ल किया गया है कि क़ुरआन में ज़िक्र किए गए रोया से मुराद 'ऐन रोया' (आंखों देखा) है न कि ख़्वाब या रूहानी मुशाहदा।

7. आयत 'व मा जअलनल रो यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित-न-त्तल-लिन्नासि, वश-श-ज-र-तु ल-मल ऊनतुन फ़िल क़ुरआन' में इसका ज़िक्र है कि इसरा का वाक़िया और जहन्नम के अन्दर सेढ के पेड़ का मौजूद होना और आग में न जलना ये दोनों वाक़िए इक़रार व इंकार की शक्ल में ईमान व कुफ़्र के लिए आज़माइश हैं। पस जबकि महीनों की ग़िज़ा के लिए एक माद्दी कांटेदार पेड़ का मौजूद होना, हरा-भरा रहना और आग से न जलना मुश्रिकों के इंकार की वजह बनी, बेशक इसरा के वाक़िए में भी आज़माइश का पहलू यही है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिस ज़मान का मकान की क़ैदों को तोड़कर जिम्म के साथ और बेदारी की हालत में वह सैर कर ली, जिसका ज़िक्र सूरः बनी इसराईल और वन्नज्म में है और सही हदीसों में है और यक़ीनन मुश्रिकों ने उसका इंकार किया, जिसके रद्द में क़ुरआन ने उसको 'इल्ला फ़ित-न-तल-लिन्नास' कह कर इतनी अहमियत दी, वरना तो नबियों के रूहानी मुशाहदों और ख़्वाब के वाक़िआत का इंकार तो उनके लिए एक आम बात थी।

8. इसरा का जब वाक़िया पेश आया तो सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिन सहाबा रज़ि० की महफ़िल में इस वाक़िया का ज़िक्र किया, उन सबकी यही राय है कि वह वाक़िया जिस्म के साथ हुआ और बेदारी की हालत में हुआ। जैसे, हज़रत अनस रज़ि० हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० वग़ैरह और इसके ख़िलाफ़ नीचे लिखे लोगों में हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि० और हज़रत आ़इशा रज़ि० के नाम हैं जिनका इस्लाम या हरमे नबवी से ताल्लुक़ इस वाक़िए से वर्षों बाद मदीने की पाक ज़िंदगी से जुड़ा हुआ है, इसलिए वाक़िए के दिनों में मौजूद सहाबियों के क़ौल को तर्जीह दी जाएगी। मेराज के वाक़िए की तफ़्सील अगरचे मुस्तनद और मक़्बूल

Copyright OfflineDeeniApp

रिवायतों और हदीसों से साबित है, लेकिन ख़ुद क़ुरआन में (सूरः नज्म) में उन तफ़्सीलों का खोलकर ज़िक्र हुआ है जिनको सूरः बनी इसराईल के इज्माल की तफ़्सीर कहना चाहिए।

मेराज शरीफ़ से मुताल्लिक़ तफ़्सील

बुख़ारी व मुस्लिम में नक़्ल कि गई मशहूर और मक्बूल रिवायतों का मजमूई बयान

नबी अरकम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक सुबह इर्शाद फ़रमाया—

'पिछली रात मेरे ख़ुदा ने मुझको अपने ख़ास मज्द व शरफ़ सें नवाज़ा, जिसकी तफ़्सील यह है कि पिछली रात जबकि मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में जिब्रील आए और मुझको जगाया। अभी पूरी तरह जाग भी न पाया था कि हरमे काबा में उठा लाए और थोड़ी देर लेटा था कि पूरी तरह बेदार करके पहले तो मेरा सीना चाक किया और (मला-ए-आ़ला के साथ) पूरी मुनासबत पैदा करने लिए दुनिया की कदूरतों को) धोया और ईमान व हिक्मत से भंर दिया।

इसके बाद हरम के दरवाज़े पर लाया गया और वहां जिब्रील ने मेरी सवारी के लिए ख़च्चर से कुछ छोटा जानवर वर्राक़ पेश किया जो सफ़ेद रंग का था। जब मैं उस पर सवार होकर रवाना हुआ तो उसकी हल्की चाल का हाल था कि निगाह की हद और रफ़्तार की हद बराबर नज़र आती थी कि अचानक बैतुल-मक़्दिस जा पहुंचे, यहां जिब्रील के इशारे पर वर्राक़ को मस्जिद के दरवाज़े के उस हिस्से से बांध दिया जिससे बनी-इसराईल के नबी मस्जिदे अक़्सा की हाज़िरी पर अपनी सवारियां बांधा करते थे (और जो उस वक़्त यादगार के तौर पर क़ायम था) फिर मैं मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल हुआ और दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।

अब यहां से मला-ए-आ़ला की तैयारी शुरू हुई तो पहले तो जिब्रील ने

Copyright OfflineDeeniApp

मेरे सामने दो प्याले पेश किए, उनमें एक शराब (ख़म्र) से लबालब भरा हुआ था और दूसरा दूध से। मैंने दूध का प्याला क़ुबूल किया और शराब का प्याला रद्द कर दिया।

जिब्रील ने यह देखकर कहा, आपने दूध का प्याला क़ुबूल करके फ़ितरत के दीन को क़ुबूल किया, यानी अल्लाह की ओर से आपको जो मैंने ये दो प्याले पेश किए, तो दरअसल यह तम्सील (मिसाल की शक्ल में) थी दीने फ़ितरत (प्राकृतिक दीन) और दीने ज़ैग़ (टेढ़ वाला दीन) की, मगर आपने इस हक़ीक़त को पहचान लिया और दूध के प्याले को क़ुबूल फ़रमाया, जो दीन फ़ितरत की मिसाल की शक्ल थी, दीने फ़ितरत को क़ुबूल फ़रमा लिया]

इसके बाद मला-ए-आ़ला का सफ़र शुरू हुआ और जिब्रील के साथ बुर्राक़ ने आसमान की ओर उड़ान भरी। जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिब्रील ने निगहबान फ़रिश्तों से दरवाज़ा खोलने को कहा। निगहबान फ़रिश्तों ने मालूम किया, कौन है? जिब्रील ﷺ ने कहा, मैं जिब्रील हूं। फ़रिश्ते ने मालूम किया, तुम्हारे साथ कौन है? जिब्रील ने जवाब दिया, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। फ़रिश्ते ने कहा, क्या ये बुलाने पर आए हैं? जिब्रील अलैहि० ने कहा, बेशक, फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, ऐसी हस्ती का आना मुबारक हो।

जब हम अन्दर दाख़िल हुए तो हज़रत आदम से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने मेरी ओर मुख़ातब होकर कहा, यह आपके वालिद (और इंसानी नस्ल के मूरिसे आ़ला) आदम ﷺ हैं। आप इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया 'मरहबा सालेह बेटे और सालेह नबी को'।

इसके बाद दूसरे आसमान तक पहुंचे और पहले आसमान की तरह सवाल व जवाब होकर दरवाज़े में दाख़िल हुए तो वहां यह्या व ईसा ﷺ से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने उनका तआरुफ़ (परिचय) कराया और कहा कि आप सलाम में पहल कीजिए। मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमया, ख़ुशआमदीद ऐ बरग़ज़ीदा भाई और बरगज़ीदा नबी।'

फिर तीसरे आसमान पर पहुंच कर यही मरहला पेश आया और जब मैं

Copyright OfflineDeeniApp

तीसरे आसमान में दाख़िल हुआ तो हज़रत यूसुफ़ ﷺ से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने सलाम में पहल करने के लिए कहा और मेरे सलाम करने पर यूसुफ़ ﷺ ने भी सलाम के जवाब के बाद यही कहा, 'ख़ुशआमदीद ऐ बरगज़ीदा भाई और बरगज़ीदा नबी।'

इसके बाद चौथे आसमान पर इस सवाल के साथ हज़रत इदरीस ﷺ से मुलाक़ात हुई और पांचवें आसमान पर हज़रत हारून से और छठे आसमान पर हज़रत मूसा ﷺ से इसी तरह मुलाक़ात हुई, लेकिन जब मैं वहां से रवाना होने लगा तो हज़रत मूसा ﷺ पर रिक़्क़त तारी हो गई (रुहांसे हो गए) जब मैंने वजह मालूम की तो फ़रमाया, मुझे यह रश्क हुआ कि अल्लाह की ज़ोरदार हिक्मत ने ऐसी हस्ती को जो मेरे बाद भेजी गई यह शरफ़ दे दिया कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में कई गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी। इसके बाद पिछले सवालों-जवाबों का मरहला तै होकर जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा तो हज़रत इब्राहीम ﷺ से मुलाक़ात हुई जो बैतुल मामूर से पीठ लगाए बैठे थे और जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं।

उन्होंने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया, मुबारक, ऐ मेरे वरग़ज़ीदा बेटे और बरगज़ीदा नबी! यहां से फिर मुझे सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचाया गया। (तुम्हारी बोल-चाल में यह एक इंतिहा की बेरी का पेड़ है), जिसका फल (बेर) हिज्र की ठेलिया के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं। इस पर अल्लाह के फ़रिश्ते जुग्नू की तरह बेतायदाद चमक रहे थे और ख़ुदा की ख़ास तजल्ली ने उसको हैरतनाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया था।

इसी सफ़र में मैंने चार नहरों का भी मुआयना किया। इनमें से दो ज़ाहिर नज़र आती थीं और दो बातिन में बह रही थीं, यानी दो नहरें जिनका नाम नील और फ़रात है दुनिया के आसमान पर नज़र पड़ीं और दो नहरें जन्नत के अन्दर मौजूद पाईं और इन सब चीज़ों के देखने के बाद मुहम्मद सल्ल० को शराब (ख़म्र), दूध और शहद के प्याले पेश किए गए और मैंने दूध को क़ुबूल कर लिया। इस पर जिब्रील ने मुझे बशारत सुनाई कि आपने 'दीने' फ़ितरत को

Copyright OfflineDeeniApp

क़बूल कर लिया (यानी जो हर क़िस्म की कदूरतों से पाक और शफ़्फ़ाफ़ है, अ़मल में मीठा, और ख़ुशगवार और नतीजे में हद दर्जा मुफ़ीद और अहसन है।

फिर अल्लाह तआ़ला का ख़िताब हुआ कि तुम पर रात व दिन में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ क़रार दी गईं। जब मैं इन असरारे इलाही (ईश्वरीय मर्म) के देखने से फ़ारिग़ होकर नीचे उतरने लगा तो बीच में (हज़रत) मूसा अ. से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मालूम किया, मेराज का क्या तोहफ़ा लाए हो? मैंने कहा, पचास नमाज़ें। उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारी उम्मत इस भारी बोझ को सह न सकेगी। इसलिए वापस जाइए और कम करने की दरख़्वास्त कीजिए; क्योंकि मैं तुमसे पहले अपनी उम्मत को आज़मा चुका हूं।

चुनांचे अल्लाह के दरबार में हाज़िर हुआ और अल्लाह की ओर से पांच नमाज़ों की कमी हो गई। मूसा तक लौट कर आया और उन्होंने फिर इसरार किया कि अब भी ज़्यादा है और कम कराओ और मैं इसी तरह कई बार आता जाता रहा, यहां तक कि सिर्फ़ पांच नमाज़ें रह गईं, मगर मूसा मुतमइन न हुए और फ़रमाया कि मैं बनी इसराईल का काफ़ी तजुर्बा और उनकी इस्लाह कर चुका हूं, इसलिए मुझे अन्दाज़ा है कि आपकी उम्मत यह भी न बरदाश्त कर सकेगी, इसलिए कम करने के लिए और कहिए। तब मैंने कहा, अब अ़र्ज़ करते शर्म आती है। मैं अब राज़ी-ब-रज़ा और फ़ैसले के सामने सरे नियाज़ झुकाता हूं।

जब मैं यह कह कर चलने लगा तो निदा आई, हमने अपना फ़र्ज़ लागू कर दिया और अपने बन्दों के लिए कमी कर दी, यानी अल्लाह की मशीयत पहले ही यह फ़ैसला कर चुकी है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्मत पर अदा के तौर पर अगरचे पांच नमाज़ें फ़र्ज़ रहेंगी मगर उनका अज्र व सवाब पचास ही के बराबर होगा और यह कमी हमारा फ़ज़्ल व करम है।

इन्हीं रिवायतों में है कि मैंने जन्नत व जहन्नम को भी देखा और फिर देखने की तफ़्सील भी नक़ल की गई है।

मेराज में अल्लाह को देखना

क्या मेराज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ाते अक़्दस

Copyright OfflineDeeniApp

के जमाले जहां आरा को बे-परदा देखा। सही रिवायतों में इस मसले के बारे में जो ताबीरें बयान की गई हैं उनसे यह मालूम होता है कि ज़रूर, फिर भी नबी अकरम ﷺ इस देखने की कैफ़ियत के हक़ीक़ी इज़्हार से इसलिए मजबूर हैं कि दुनिया की ताबीरों में कोई ऐसी ताबीर मौजूद नहीं कि बुलन्द से बुलन्द मख्लूक़ उसके जमाले जहांआरा की कैफ़ियत व हक़ीक़त को बयान कर सके। इसलिए आप वाक़िए का इक़रार करते हैं जैसा कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की रिवायत में नक़ल हुआ है। 'मैंने उसको नूर देखा' और देखने के बावजूद जमाले जहान आरा की बयान न कर पाने वाली कैफ़ियत का फिर इन लफ़्ज़ों में भी इज़्हार फ़रमाते जाते हैं 'नूरन इन्नी अराहु' इस नूरे हिक्मत का हक़ीक़ी तौर पर देखना कहां हो सकता था।

इज़ाफ़ा

मेराजे मुबारक से मुताल्लिक़ शेख सादी रह० के नातिया शेरों (पदों) में से जो शेअ्र अह्ले ज़ौक़ के लिए एक सरमाया बना है, वह पेश किया जाता है—

अगर यकसर मूए बर तर परम
फ़रोग़े तजल्ली ब सोज़द करम।

इस शेअ्र (पद) में उस वक़्त की कैफ़ियत (स्थिति) बयान की गई है जब आपने हज़रत जिब्रील अ० से फ़रमाया कि ऐ वह्य लानेवाले! आगे बढ़ो, आगे आओ, तो हज़रत जिब्रील अ० ने फ़रमाया—

'अगर अब मैं यहां से बाल बराबर भी आगे बढ़ूंगा तो तजल्ली-ए-इलाही की शिद्दत से मेरे बाल व पर जल जाएंगे।

हिजरत

हिजरत लफ़्ज़ 'हिज्र' से लिया गया है, जिसके मानी छोड़ देने के हैं और इस्लाम के नज़दीक, 'अल्लाह के लिए वतन छोड़ देना' ही हिजरत कहलाता है।

Copyright OfflineDeeniApp

हब्शा की हिजरत

अल्लाह के दीन पर जमाव और कलिमा-ए-हक़ की हिफ़ाज़त के लिए इस्लाम के फ़िदाकारों को वतन छोड़ देने की पहली आज़माइश उस वक़्त पेश आई, जबकि मक्का के कुफ़्फ़ार और क़ुरैशी मुश्रिकों ने हर क़िस्म के ज़ुल्म व सितम का निशाना बना कर मुसलमानों के लिए उनके महबूब वतन (मक्का) में दीने हक़ पर क़ायम रहते हुए ज़िंदगी गुज़ारना नामुम्किन बना दिया और वतन छोड़ देने के अलावा कोई रास्ता बाक़ी न छोड़ा। पस मुट्ठी भर मुसलमानों पर मुश्रिकों के बरदाश्त न करने के क़ाबिल ज़ुल्म और मुसलमानों को हैरत में डाल देने वाले जमाव ने, दुनिया की तारीख़ में एक नया बाब बढ़ा दिया, जो हब्श की हिजरत के नाम से जाना जाता है।

उस वक़्त हब्शा का फ़रमांरवा अस्हमा ईसाई था और ईसाई धर्म का आ़लिम भी, इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दे दी कि वे अभी हब्शा को हिजरत कर जाएं, उम्मीद है कि अस्हमा की हुकूमत उनका स्वागत करेगी और वे बिना किसी रुकावट के दीने हक़ पर क़ायम रह सकेंगे और जमे भी रहेंगे।

हिजरत के उस दौर की नुमायां शख़्सियत हज़रत उस्मान रज़ि० और उनकी बीवी, अल्लाह के रसूल सल्ल० की लड़की हज़रत रुक़ैया रज़ि० हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मुक़द्दस जोड़े को विदा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि लूत और इब्राहीम ﷺ के बाद यह पहला जोड़ा है जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत कर रहा है। फिर धीरे-धीरे यह तायदाद अस्सी तक पहुंच गई। इन मुहाजिरों में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र रज़ि० भी थे। यही वह निडर और हक़ बात कहने वाले शख़्स हैं, जिन्होंने क़ुरैश के वफ़्द की मुहाजिरों से मुताल्लिक़ वापसी की मांग के सिलसिले में इस्लाम पर बेमिसाल तक़रीर फ़रमाई और जिसका ज़िक्र पीछे के पन्नों में हो चुका है।

Copyright OfflineDeeniApp

मदीना की हिजरत की वजहें

सन् 11 नबवी हज के मौसम के मौक़े पर अल-हिरा और मिना के दर्मियान अक़बा नामी जगह में यसरिब (मदीना) के कुछ लोगों ने रात की तंहाई में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हक़ का पैग़ाम सुना और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। ये छः या आठ आदमी थे। दूसरे साल कुछ पिछले और कुछ दूसरे लोगों ने जो तायदाद में बारह थे, ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम पर बातें कीं और मुसलमान हो गए। उनके नाम मुहम्मद बिन इसहाक़ की रिवायत के मुताबिक़ ये हैं।

अबू उमामा, औफ़ बिन हारिस, राफ़ेअ् बिन मालिक, कुत्बा बिन आ़मिर मुआ़ज़ बिन हर्स, ज़क्वान बिन अ़ब्द क़ैस, ख़ालिद बिन मुख़ल्लद, उबादा बिन सामित, अ़ब्बास बिन उबादा, अबुल हैसम, अ़दीम बिन साइमा।

हज़रत उबादा बिन सामित फ़रमाते हैं कि हमने पहले उक़बा में नीचे लिखी शर्तों के साथ इस्लाम पर बैअ्त की थी—

1. एक अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश नहीं करेंगे।
2. चोरी नहीं करेंगे।
3. ज़िना नहीं करेंगे।
4. अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करेंगे।
5. किसी पर झूठी तोहमतें नहीं लगाएंगे और न किसी की ग़ीबत करेंगे।
6. और किसी भी अच्छी बात में आपकी (नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) नाफ़रमानी नहीं करेंगे।

बैअ्त के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अगर तुमने इन शर्तों को पूरा किया तो तुम्हारे लिए जन्नत की बशारत है और अगर तुम इन बुराइयों में से कोई भी कर बैठे, तो फिर तुम्हारा मामला ख़ुदा के हाथ में है, चाहे बख़्श दे, चाहे जुर्म पर सज़ा दे।

इस वाक़िए ने मदीना के हर घर में इस्लाम की चर्चा शुरू कर दी और धीरे-धीरे हर ख़ानदान में इस्लामी सूरज की किरणें पहुंचने लगीं और नतीजा यह निकला कि औस व ख़ज़रज की तमाम शाख़ों में से 13 नबवी को तिहत्तर

Copyright OfflineDeeniApp

मर्द और दो औरतें इसी अक़बा नामी जगह पर हज के ज़माने में, रात की अंधियारी में नुबूवत के सूरज की रोशनी से फ़ैज़ हासिल करने जा पहुंचे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी अपने चचा अ़ब्बास को साथ लेकर वहां पहुंच गए और उनके सामने इस्लाम पर एक असरदार वाज़ फ़रमाया, जिससे उनके दिल ईमान की रोशनी से जगमग हो उठे। इसके बाद अंसारी और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दर्मियान इस मामले पर बातें हुईं कि अगर ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना में तशरीफ़ ले आएं तो इस्लाम की इशाअ़त को भी फ़ायदा पहुंचे और हमको भी फ़ैज़ पाने का अच्छी तरह मौक़ा हाथ आए और इस सिलसिले में दोनों तरफ़ से मुहब्बत और ताल्लुक़ के क़ौल व क़रार भी हुए, जिनकी तफ़्सील सीरत और तारीख़ की किताबों में ज़िक्र हो चुकी है। इन्हीं लोगों में से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बारह लोगों को चुनकर दावत व इस्लाम की तालीम के लिए अपना नक़ीब (प्रतिनिधि) मुक़र्रर फ़रमाया।

यसरिब (मदीना) में इस्लाम की इशाअ़त ने जब इस तरह भारी तरक़्क़ी कर ली, तो अब अल्लाह की वह्य ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़ुबानी इस्लाम के जॉनिसारों को इजाज़त दी कि वे मक्का के मुश्रिक की पहुंचाई हौलनाक तक्लीफ़ों से बच जाने के लिए मदीना हिजरत कर जाएं और ख़ुदा के लिए वतन तर्क कर लें, चुनांचे धीरे-धीरे मुसलमानों ने मदीने की हिजरत शुरू कर दी। मक्का के मुश्रिकों ने यह देखकर मुसलमानों को हिजरत से रोकने के लिए ज़ुल्म व ज़्यादती में और बढ़ौतरी कर दी और हिजरत को रोकने के लिए मुम्किन ज़रियों को अख़्तियार किया, मगर इस्लाम के फ़िदाकारों का हिज़रत का जज़्बा थमा नहीं, बल्कि वे कसरत के साथ माल, जान, आबरू और औलाद की ज़िंदगी को ख़तरे मे डालकर अल्लाह की राह में अ़ज़ीज वतन को ख़ैरबाद करते रहे। अक्सर ऐसा हुआ कि जब मक्का वालों ने उनके माल और बाल बच्चों के साथ ले जाने से रोक दिया तो इन जवानों ने सब्र आज़मा ज़िंदगी के साथ हक़ के लिए हिजरत की ख़ातिर उनको भी वहीं छोड़ा और अकेले अल्लाह के भरोसे पर मदीना रवाना हो गए।

Copyright OfflineDeeniApp

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिजरत

अब मक्के के मशहूर मुसलमानों में से सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० और अ़ली रज़ि० ही बाक़ी रह गए थे और बहुत थोड़ी सी तायदाद बाक़ी मुसलमानों की थी, तब क़ुरैश ने सोचा कि मुहम्मद ﷺ को क़त्ल करके इस्लाम को मिटा देने का इससे बेहतर दूसरा कोई मौक़ा नहीं आएगा।

दारुन्नदवा

चुनांचे क़ुरैश के तमाम सरदार क़ुसई बिन किलाब के क़ायम किए हुए 'गवर्नमेंट हाऊस' (दारुन्नदवा) में जमा हुए और सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़त्ल से मुताल्लिक़ मश्विरे की साज़िशी मज्लिस क़ायम की। इस मज्लिस में उत्बा, शैबा, अबू सूफ़ियान, तुऐमा बिन अदी, जुबैर बिन मुतअ़म, हारिस बिन आ़मिर, नज़्र बिन हारिस, अबुत्तसजज़ी, रफ़आ़ बिन अस्वद, हकीम बिन हिज़ाम, अबू जहल, मुनब्बह बिन हज्जाज, उमैया बिन ख़ल्फ़ जैसे क़ुरैश-सरदार मश्विरे में शरीक थे। मश्विरा शुरू होने वाला ही था कि एक शैतान शैख़ नज्दी दारुन्नदवा के दरवाज़े पर आ मौजूद हुआ और मज्लिस में शिर्कत की ख़्वाहिश की। मक्का के क़ुरैश ने अपने ख़्याल का पाकर ख़ुशी से इजाज़त दे दी और अब मश्विरा शुरू हुआ। मुख़ालिफ़ राय देने वालों ने अलग-अलग राएं दीं, लेकिन शैख नज्दी ने हर एक राय को ग़लत क़रार दिया, आख़िर में एक आदमी ने कहा, तमाम क़बीलों में से एक-एक जवान लीजिए और उनसे कहिए कि वे एक ही वक़्त में मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर हमला करके क़त्ल कर दें। इससे काम भी बन जाएगा और बनू अ़ब्द मुनाफ़ किसी से बदला लेने की जुर्रात भी न कर सकेंगे और सिर्फ़ ख़ूंबहा पर मामला तै हो जाएगा। शैख नज्दी ने इस राय को बहुत सराहा और यही राय तै पा गई।

इधर जिब्रील ﷺ ने अल्लाह की वह्य के ज़रिए ज़ाते अक़्दस के सामने इस पूरी दास्तान को कह सुनाया और अर्ज़ किया कि ख़ुदा की मर्ज़ी यह है कि आप आज रात अपने बिस्तर पर हज़रत अ़ली रज़ि० को सुलाकर ख़ुद

Copyright OfflineDeeniApp

मदीना को हिजरत कर जाइए। चुनांचे अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ आप क़ुरैश के नवजवानों के घेरे के बावजूद सूरः यासीन की कुछ आयतें 'फ़ अग़्शैनाहुम फ़हुम ला मुब्सिरून०' पढ़ते हुए और 'शाहतिल वजूह' फ़रमाकर मुट्ठी भर ख़ाक उन के सरों पर डालते हुए साफ़ बचकर निकल गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के मकान पर जाकर और वह्य इलाही की ख़ुशख़बरी सुनाकर उनको साथ लिए मदीना को रवाना हो गए।

हिजरत का यह वाक़िया रबीउल-अव्वल 13 नबवी दो शंबा के दिन पेश आया। यह वाक़िया अपने ख़ुसूसी हालात और मोजज़ाना असरात के साथ बहुत मशहूर और सहीह हदीसों और रिवायतों में ज़िक्र किया गया है और सिद्दीक़े अकबर की सफ़रे हिजरत में साथ देने की अ़ज़्मत व जलालत के लिए रहती दुनिया तक क़ुरआन इस तरह कहता है—

तर्जुमा—*'दूसरा था दो का, जबकि वे दोनों ग़ार में थे कि यह अपने रफ़ीक़ (हज़रत अबूबक्र) से कह रहा था, अबूबक्र! ग़म न खा, बेशक ख़ुदा हमारे साथ है।'* (9 : 39)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर अबूबक्र रज़ि० के मुख़ातब करते हुए 'ला तहज़न' फ़रमाया, 'ला तख़फ़' नहीं फ़रमाया, यह इसलिए कि 'ख़ौफ़' (भय) और हुज़्न (ग़म) के मानी में एक फ़र्क़ यह भी है कि आमतौर पर ख़ौफ़ अपने नुक़्सान के सिलसिले में हुआ करता है। इससे यह मालूम हुआ कि अबूबक्र रज़ि० को अपनी जान और अपनी ज़ात का ख़ौफ़ नहीं था, बल्कि ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गिरफ़्तारी और मुश्रिकों के हाथों ज़ुल्म पहुंचने का ग़म उन पर सवार था। पस हुज़ूर क़ुदसी सिफ़ात ने अबूबक्र रज़ि० की इस हालत का अन्दाज़ा लगाया तो 'ला तख़फ़' की जगह 'ला जहज़न' इर्शाद फ़रमाया और साथ ही 'इन्नल्ला-ह मअना' फ़रमा कर अबूबक्र की रिफ़ाक़त की मक़्बूलियत पर भी मुहर तस्दीक़ लगा दी। दुनिया अपने बुग़्ज़-दुश्मनी से जो चाहे कहे, लेकिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि० का 'सच्चा साथ' के लिए क़ुरआन के जुम्ला (वाक्य) 'इन्नल्ला-ह म-अ़-ना' (बेशक अल्लाह हमारे साथ है) की हक़ीक़त को सारी कायनात भी मिल कर मिटाना चाहे, तो मिटा नहीं

Copyright OfflineDeeniApp

सकती।

'ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय-यशाउ वल्लाहु ज़ुल फ़ज़्लिल अज़ीम०
(यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहे दे, अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है)

कुरआन मजीद और मदीने की हिजरत

मेराज के वाक़िए में गुज़र चुका है कि हक़ीक़ते इसरा तम्हीद थी हिजरत के शानदार वाक़िए की, यानी वाक़िए इसरा की अ़जीब बातें इस बात की तम्हीद थीं कि अब आपकी तब्लीग़ी ज़िंदगी का दौर एक दूसरा रुख अख़्तियार करने वाला है जो कामरानियों और कामियाबियों से भरपूर है, इसलिए बहुत ज़रूरी है कि पहले आपको क़िबलतैन (दोनों क़िबले—काबा और बैतुलमक़्दिस) के रहस्यों को बता दिया जाए, ताकि मक्की ज़िंदगी जब मदनी ज़िंदगी में बदले तो इससे पहले नुबूवत व रिसालत के कमालात अपनी इंतिहा को पहुंच चुके हों और आपका हिदायत का मंसब उस बुलन्द मुक़ाम तक जा पहुंचा हो, जहां ख़ुदा के सबसे बुलन्द मख़्लूक़ का भी गुज़र न हुआ हो, ताकि आप 'अल-यौ-म अक-मलतु लकुम दीनकुम व अत-ममतु अ़लैकुम नेमती व रज़ीतु लकुमुल इस्ला-म दीना०' के शरफ़ को हासिल कर सकें।

पस सूरः बनी इसराईल शुरू से लेकर आख़िर तक मदीना की हिजरत के ही राज़ों और भेदों से भरी हुई है। चुनांचे शुरू की आयतों में असरा का बयान है और फिर ज़िक्र आ गया है रुश्द व हिदायत के उसूल का और बीच में पिछली उम्मतों और उनके रहबरों—नबियों और रसूलों के तब्लीग़ी वाक़ियों का तज़्किरा गवाह और नज़ीर बनकर सामने आ जाता है और इस सिलसिले में ये राज़ के हुक्म और असरा का भी ज़िक्र होता जाता है और उसके बाद 'रब्बि अद् ख़िलनी मद-ख़-ल सिदक़िन' से मक्का से निकलने और मदीने की हिजरत का ज़िक्र शुरू हो जाता है और यह ज़िक्र सूरः के आख़िर तक जारी रहता है। चुनांचे ह़ज़रत अ़ब्दुलल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० और हज़रत क़तादा रज़ि० ने लिखी गई हर दो आयत के मज़्मूनों के सिलसिले को मदीना की हिजरत से ही जोड़ दिया हैं।

तर्जुमा—*और क़रीब था कि वे (मुश्रिक) अलबत्ता तुझको आ़जिज़ कर*

Copyright OfflineDeeniApp

देते (मक्का) की सरज़मीन से, ताकि तुझको उससे निकाल दें और ऐसी हालत में उनकी हलाकत बहुत थोड़े अ़र्से में सामने आ जाती।' (17 : 76)

यह मुश्रिकों के हक़ में सख़्त क़िस्म का डरावा और धमकी है कि जब भी तुम्हारे ज़ुल्मों की बदौलत नबी अकरम ﷺ को मदीना की हिजरत पेश आएगी, तुम्हारी इज्तिमाई ज़िंदगी की हलाकत क़रीब से क़रीबतर हो जाएगी, गोया मदीने की हिजरत, इस्लाम की हर दिन बढ़ती तरक़्क़ी और इस्लाम दुश्मनों की मौत व हलाकत के लिए लिखी तक़्दीर है।

तर्जुमा—*'और कहिए, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको दाख़िल कर (मदीना में) अच्छा दाख़िला और निकाल मुझको (मक्का) से इ़ज़्ज़त के साथ और मेरे लिए अपनी तरफ़ से ज़बरदस्त मदद अ़ता कर।'* (17 : 80)

इसी तरह सूरः अनफ़ाल में कुछ वाक़ियों में मदीना की हिजरत का ज़िक्र मौजूद है।

तर्जुमा—*और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब इंकार करने वाले लोग तेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर रहे थे, ताकि तुझको क़ैद कर लें या मार डालें या (मक्का से) निकाल दें वे अपनी साज़िशों में लगे हुए थे, ख़ुदा उसके ख़िलाफ़ तदबीर कर चुका था, और अल्लाह तदबीर करने वालों में सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है।* (8 : 30)

और इसी तरह सूरः तौबा में सिद्दीक़े अकबर की अ़ज़्मत व जलालतेक़द्र के तज़्करे के साथ-साथ मदीने की हिजरत का ज़िक्र इस तरह मौजूद है—

तर्जुमा—*'अगर तुम अल्लाह के रसूल की मदद नहीं करोगे तो (न करो) उसकी अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त मदद फ़रमाई, जब उसको इंकार करने वालों ने (मक्का से) निकाला, जबकि वे दोनों (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि०) ग़ार में (हिरा में छिपे हुए थे) जब (रसूल अपने साथी अबूबक्र से) कह रहा था, तू ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह़ ने उस पर अपना सकीना (तमानियत) उतारी और उससे ऐसी फ़ौज के ज़रिए क़ूवत पहुँचाई कि तुम उसको नहीं देख रहे थे और (इस तरह) ख़ुदा ने काफ़िरों का कलिमा पस्त कर दिया और अल्लाह का कलिमा ही सबसे बुलन्द है और बेशक अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।'* (9 : 40)

Copyright OfflineDeeniApp

हिजरत

इस्लाम में हिजरत एक अहम फ़रीज़ा है। कौन नहीं जानता कि इंसान के लिए वतन, माल (बाल-बच्चे कितने प्यारे होते हैं और इन्हीं क़ीमती पूंजी पर) अपनी दुनिया का ऐश, राहत, और ज़िंदगी को बाक़ी रखने का मदार (आधार) समझता है, लेकिन उसकी इंसानियत और इंसानियत की तरक़्क़ी ज़िंदगी के इन तमाम मक़्सदों से भी एक बुलन्द मक़्सद चाहती है और वह है कायनात पैदा करने वाले और रब्बुल-आ़लमीन की मारफ़त जिसकी शफ़क़त और मुहब्बत ने उसको यह रुख़ दिया। इसी मारफ़त का नाम 'दीन' और 'मिल्लत' है। इंसान जब इस हक़ीक़ी मक़्सद को पा लेता है तो फिर उसकी निगाह में इस दर्जा फैलावं और बुलन्दी पैदा हो जाती है कि दुनिया की उन तमाम रंगीनियों और नैरंगियों का फैला हुआ दामन भी उसको तंग नज़र आता और वह इस तंगदामनी से आ़जिज़ होकर आख़िरकार 'रूहानी ज़िंदगी' की गोद में ही तस्कीन पाता है और जब इस मरहले पर पहुँच जाता है तो फिर दीने हक़ के लिए वह दुनिया की तमाम क़ीमती पूंजी, तन-मन-धन यहां तक कि बाल-बच्चों को भी तज देता है और उस क़ीमती मोती को आंच नहीं आने देता, जिसका नाम 'ईमान' है। इसी हक़ीक़ते हाल को इस्लाम के मुक़द्दस 'लफ़्ज़ों' में हिजरत कहा जाता है।

इसी वजह से 'हिजरत' एक सच्चे ईमान वाले और मुख़्लिस मुसलमान और मुनाफ़िक़ और काफ़िर हस्ती के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करने के लिए बेहतरीन 'कसौटी' और 'मेयार' है, साथ ही रूहानी फ़िज़ा का टेम्प्रेचर मालूम करने के लिए 'जिहाद' और हिजरत' ही दो ऐसे पैमाने हैं जिनसे मोमिनों के ईमान की हरारत का सही अन्दाज़ा हो जाता है।

क़ुरआन ने हिजरत की अहमियत पर जगह-जगह तवज्जोह दिलाई है और उसको ईमान व इस्लाम की कसौटी क़रार दिया है, जिसके लिए ये जगहें ख़ास तौर से पढ़ने लायक़ हैं–

2 : 218, 3 : 194, 8 : 74, 9 : 20, 16 : 111, 23 : 58, 4 : 100, 16 : 41, 4 : 97

Copyright OfflineDeeniApp

इस्लाम के शुरू में मक्का दारुल कुफ़्र और दारूल हर्ब था, इसलिए वहां से मदीने को हिजरत कर जाना इस्लाम के सबसे अहम फ़र्ज़ों में से था, ताकि मुसलमान मदीने में अम्न व आ़फ़ियत के साथ इस्लाम के हुक्मों की पैरवी कर सकें और न सिर्फ़ इसी क़दर बल्कि इस्लाम के बड़े मक़्सद 'अम्र बिल मारूफ़ (भलाई का हुक्म देना) और नह्यि अनिल मुन्कर (बुराइयों से रोकना) की या दूसरे लफ़्ज़ों में 'ऐ लाए कलि मतुल्लाह' (अल्लाह के कलिमा को बुलन्द करने) की सही ख़िदमत अंजाम दे सकें, मगर जब सन् 08 हिजरी में 'फ़त्हे मुबीन' (खुली जीत) ने मक्का की इस हालत को बदल कर 'दारुल इस्लाम' बना दिया तो अब हिजरत का यह ख़ास फ़र्ज़ ख़त्म हो गया और वह्य की ज़ुबान में 'ला हिज-र-त बादल फ़त्हि' (फ़त्ह के बाद कोई हिजरत नहीं) फ़रमाकर इस हक़ीक़त का एलान कर दिया, अलबत्ता अब भी तौहीद के मर्कज़ से बेपनाह इश्क़ व मुहब्बत के जज़्बे में मक्का और मदीना हिजरत करके जाना अज्र व सवाब का ज़रूरी हक़ पैदा करता है।

और अगर किसी जगह और किसी देश में भी मुसलमानों के लिए ईमानी ज़िंदगी के पेशेनज़र वही सूरते हाल पैदा हो जाए जो इस्लाम के शुरुआ़ती दौर (मक्की दौर) में थी तो उस वक़्त मुसलमानों के लिए वही हुक्म लागू हो जाएंगे जो 'मक्की दौर' के मुताबिक़ क़ुरआन व हदीस और उससे निकले 'इस्लामी फ़िक़्ह' में पाए जाते हैं और उसूली तौर पर उस वक़्त सिर्फ़ दो ही इस्लामी मांगें सामने आएंगी– या 'अल्लाह के रास्ते के जिहाद' के ज़रिए उस हालत में इंक़िलाब या फिर 'हिजरत' और किसी तरह भी यह जायज़ नहीं होगा कि मौजूदा हालत पर क़नाअत करके इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ारी जाए।

मक्का जव दारुल कुफ़्र और दारुल हर्ब था तो उस वक़्त मदीना की हिजरत को इस्लाम ने किस दर्जा अहमियत दी और इस ऊंचे मक़्सद के लिए मुसलमानों से किस दर्जा क़ुरबानी और नफ़्स के ईसार की मांग की, नीचे की आयतों से इस हक़ीक़त का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो सकता है–

तर्जुमा– *'जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और मेरी राह में लड़े और मारे गए, मैं ज़रूर उनके गुनाह उनसे दूर कर दूंगा और उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करूंगा जिनके*

Copyright OfflineDeeniApp

(पेड़ों के) नीचे नहरे जारी हैं। यह बदला है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह के पास अच्छा बदला है।' (3 : 197)

तर्जुमा– *'जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक बहुत बुलन्द रहने वाले हैं और वही कामियाब हैं।'* (9 : 20)

तर्जुमा– *'बेशक जिनको फ़रिश्तों ने ऐसी हालत में मौत से दोचार किया कि वे अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे, उनसे (फ़रिश्तों ने) पूछा कि तुम किस हालत में थे। उन्होंने जवाब दिया कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे। फ़रिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की ज़मीन फैली नहीं थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते, सो यही हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है, मगर वे कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे जो हिजरत के लिए कोई हीला नहीं कर सकते और न (हिजरत के लिए) राह पाते हैं, तो ये वे हैं कि उम्मीद है अल्लाह तआ़ला उनको माफ़ कर दे और अल्लाह बेशक माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।* (4 : 97-99)

लड़ाइयां

ग़जवा व सरीया

अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के सिलसिले में जिस फ़ौज के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम नहीं थे, उसको सरीया और जिसमें आपने ख़ुद शिर्कत फ़रमाई उसको 'गज़वा' कहा गया है।

बद्र की लड़ाई (ग़ज़वा)

'बद्र' एक कुंए का नाम है जिसके ताल्लुक़ से यह घाटी भी बद्र कहलाती है। यह घाटी मक्का और मदीने के बीच मदीने से क़रीब मेन रोड पर वाक़े है। इस जगह वह ग़जवा पेश आया जिसको ग़ज़वा बद्र कहा जाता है। क़ुरआन ने जिन ग़ज़वों का ज़िक्र किया है उनमें इस ग़जवे को सबसे ज़्यादा नुमायां हैसियत हासिल है।

Copyright OfflineDeeniApp

वाक़िया

मदीने की हिजरत मुश्रिकों के लिए कुछ इस दर्जा भड़काने की वजह बनी और वह पैग़म्बर ﷺ और मुसलमानों को अपनी बरदाश्त न कर पाने लायक़ तक्लीफ़ पहुंचाने से महफ़ूज़ देखकर कुछ इस दर्जा ख़फ़ा हुए कि अब उन्होंने तै कर लिया कि जिस क़ीमत पर भी हो सके मुसलमानों को मिटा देना चाहिए, चुनांचे इसके लिए उन्होंने हिजरत से फ़ौरन बाद ही लड़ाई और झड़पों की शुरूआ़त कर दी और बवात और अशीरा जैसी छोटी-छोटी लड़ाइयाँ इसी सिलसिले में पेश आईं, मगर मक्का के मुश्रिकों की नफ़रत की आग के लिए यह काफ़ी न था और वे चाहते थे कि किसी तरह मुसलमानों के साथ एक फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई हो जाए।

इस इरादे को पूरा करने के लिए उन्होंने ज़रूरी समझा कि लड़ाई के सामान ज़्यादा से ज़्यादा मिल जाएं और इसके लिए बेहतरीन तरीक़ा यह सोचा कि अबू सुफ़ियान की सरबराही में तिजारत का एक क़ाफ़िला शाम (सीरिया) की मंडियों में जाए और भारी नफ़ा हासिल करके उससे लड़ाई का सामान जमा किया जाए और इस जज़्बे ने जोश व ख़रोश की यह कैफ़ियत पैदा कर दी कि जब तिजारत के क़ाफ़िले की तैयारी शुरू हुई तो मक्का के हर आदमी ने अपनी पूंजी का हिस्सा इस तिजारत के लिए पेश किया, यहां तक कि एक बुढ़िया ने भी अपनी मेहनत की मामूली पूंजी इस ख़िदमत के लिए पेश कर दी और लगभग सत्तर क़ुरैशियों पर मुश्तमिल यह क़ाफ़िला अबू सुफ़ियान की क़ियादत में शाम के लिए रवाना हो गया।

क़ुरैश का यह तिजारती क़ाफ़िला जब भारी मुनाफ़ा हासिल करके शाम से वापस होकर मक्का जा रहा था और बद्र के क़रीब होकर गुज़रा, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इल्म हुआ। आपने फ़ौरन सहाबा को जमा करके मश्विरा फ़रमाया, तब कुछ लोगों ने ख़ुशी-ख़ुशी उसके मुक़ाबले के लिए आमादगी ज़ाहिर की और कुछ ने यह समझ कर कि यह किसी अहम लड़ाई का मामला नहीं है, उसका पीछा करने पर तैयार होने का सबूत नहीं दिया।

Copyright OfflineDeeniApp

मुसलमानों का यह लश्कर जो क़ाफ़िले का पीछा करने निकला, लड़ाई के सामान से बेपरवा होकर मदीना से निकला। मशहूर रिवायत के मुताबिक़ उनकी तायदाद सिर्फ़ तीन सौ तेरह थी, जबकि अल्लाह का शुक्र है कि मदीना के अन्दर ही मुसलमानों की आबादी हज़ारों बालिग़ लोगों पर मुश्तमिल थी और कुछ तलवारें, दो तीन घोड़े, साठ ज़िरह (कवच) और सिर्फ़ साठ ऊंट उनके जंग का सामान था, जबकि मुसलमानों के पास बल्कि ख़ुद निकलने वाले मुजाहिदों के पास मदीने में लड़ाई के ज़्यादा से ज़्यादा सामान और ऊंट-घोड़े मौजूद थे। ग़रज़ यह फ़ौज लड़ाई की फ़ौज न थी, बल्कि तौहीद के फ़िदाकारों का एक मुख़्तसर-सा क़ाफ़िला था जो क़ुरैश के लड़ाई के सामान पर क़ब्ज़ा करके दुश्मन को बे-सामान बनाने निकला था।

अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के पीछा करने का हाल मालूम हुआ तो घबराया और फ़ौरन ज़मज़म नामी एक आदमी को अजीर बनाकर (मुआवज़ा देकर) मक्का रवाना किया कि वह क़ुरैश को इस मामले की ख़बर दे और मदद तलब करे। क़ुरैश ने जब हक़ीक़ते हाल को सुना तो उनमें बहुत ज़्यादा जोश पैदा हो गया और क़ुरैश के तमाम सरदार लड़ाई पर तैयार होकर अपने-अपने लश्कर को लेकर निकल खड़े हुए और इस शान से निकले कि तायदाद में एक हज़ार थे नेज़े और तलवारें सजे, ढालें और बकतर लगाए, ग़ुरूर के नशे में झूमते हुए बद्र की ओर बढ़े।

इधर मुसलमान आगे बढ़ते हुए जब सफ़रा घाटी के क़रीब पहुंचे तो नबी अकरम ﷺ ने बसबस बिन अम्र और अदी बिन ज़ग़बा को जासूस बनाकर भेजा कि वे क़ाफ़िले का हाल मालूम करके आएं। इस मुद्दत में मुसलमान सफ़रा घाटी से गुज़र कर ज़फ़रान घाटी तक पहुंच चुके थे। यहां उतरे तो एक तरफ़ बसबस और अदी से यह मालूम हुआ कि बहुत जल्द अबूसुफ़ियान का क़ाफ़िला बद्र पहुंचने वाला है। दूसरी ओर यह पता लगा कि मक्का से क़ुरैश एक हज़ार की फ़ौज लेकर पूरी शान के साथ मुसलमानों से लड़ने की ग़रज़ से बद्र की जानिब बढ़ रहे हैं।

बहरहाल मुसलमानों को जब ज़फ़रान घाटी में ये दोनों ख़बरें मिलीं, तो नबी अकरम ﷺ ने सहाबा से दोबारा मश्विरा ज़रूरी समझा, क्योंकि अब

Copyright OfflineDeeniApp

मामला कठिन था। मुसलमान बेसर व सामान और थोड़ी तायदाद में थे और दुश्मन हर तरह वक़्त के हथियारों से मुसल्लह, लड़ाई के भारी समान के साथ थे और तायदाद में तीन गुने से भी ज़्यादा और सीरते अंसार लिखने वालों के मुताबिक़ अगरचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सफ़र करने पर हज़ार बार फ़ख्र करते। और साथ रहत थे लेकिन दूसरी अक़्बा के वक्त वे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ यह समछौता कर चके थे कि जब तक क़ुरैश या ग़ैर-क़ुरैश अपनी जानिब से मदीना पर हमलावर न हों, अंसार मदीना से बाहर निकल कर लड़ाई के लिए मजबूर नहीं होंगे।

मश्विरे के लिए ये अहम वज्हें थीं जिनके पेशे नज़र नबी अकरम सल्ल० ने सहाबा से मश्विरा फ़रमाया, आपने इर्शाद फ़रमाया कि दुश्मन सर पर है और क़ाफ़िला क़रीब। अब बताओ क्या चाहते हो? लड़ाई लड़कर हक़ व बातिल का फ़ैसला या बग़ैर कांटा लगे क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा?

मुसलमानों ने जब यह सुना तो कुछ ने फ़ितरी तौर पर लड़ने से मना किया और इस बारे मे बोझ महसूस किया। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम लड़ने के इरादे से नहीं निकले थे, इसलिए बेसर व सामान हैं। हम तो अब भी यही चाहते हैं कि कि क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा करके वापस चले जाएं। नबी अकरम ﷺ ने इस कमज़ोर राय को नापसन्द फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया, क़ाफ़िले को छोड़ दो, अब इस क़ौम के बारे में राय दो, जो तुम्हारे मुक़ाबले के लिए मक्के से निकल आई। कुछ लोगों ने जब दोबारा उज़्र किया, तो आपने फिर पहली बात लौटा दी। तब बड़े सहाबा रज़ि० अबूबक्र, उमर, अ़ली रज़ि० समझ गए कि मुबारक मर्ज़ी हक़ व बातिल की लड़ाई से जुड़ी हुई है, इसलिए उन्होंने वफ़ादारी के जज़्बे को ज़ाहिर करते हुए अर्ज़ किया कि हम हर तरह लड़ाई के लिए तैयार हैं और इस्लाम के लिए आपके पसीने की जगह ख़ून बहाने को हाज़िर हैं और हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने तो इस तेज़ी से फ़िदाकाराना जज़्बे का इज़्हार किया कि सहाबा को उनकी तक़रीर पर रश्क होने लगा, मगर आप अब भी अपनी मुबारक निगाह से किसी बात के तालिब नज़र आ रह थे।

यह देखकर अंसार में से हज़रत साद बिन मुआज रज़ि० खड़े हुए और

Copyright OfflineDeeniApp

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या हम अंसार की तरफ़ इशारा है कि वे कुछ अर्ज़ करें और फिर अंसार की ओर से पूरी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाते हुए बड़ी असरदार तक़रीर फ़रमाई।

मुहाजिरों और अंसार की ये तक़रीरें सुनकर सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा ख़ुशी से तमतमा उठा और आपने इर्शाद फ़रमाया–

अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो और बशारत हासिल करो, क्योंकि अल्लाह ने मुझसे वायदा फ़रमाया है कि दो गिरोह (क़ाफ़िला और मक्का के मुश्रिकों का लश्कर) में से एक को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दूंगा और क़ाफ़िला नहीं, बल्कि मुश्रिकों का लश्कर तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया जाएगा और अल्लाह का वायदा बेशक सच्चा है और ख़ुदा की क़सम! मैं लड़ाई से पहले अभी से क़ौम के सरदारों की क़त्लगाह को देख रहा हूं और सहीह मुस्लिम में है कि आपने बद्र पहुंच कर ज़मीन पर हाथ रखकर बताया 'कि इस जगह फ़्लां क़ुरैशी मारा जाएगा और यहां फ़्लां क़त्ल होगा।'

पहले और आज के तमाम तफ़्सीर लिखने वाले, हदीस के माहिर और सीरत व तारीख़ के जानकार इस पर एक राय हैं कि यही वह मश्विरा है जिसके बारे में सूरः अंफ़ाल की ये आयतें उतरी हैं–

तर्जुमा–*('अनफ़ाल' अल्लाह और रसूल के लिए हैं) इसलिए कि तेरे परवरदिगार ने तुझको हक़ के लिए तेरे घर में निकाला और हालत यह हो गई कि मुसलमानों का एक फ़रीक़ इस निकलने पर बोझ महसूस कर रहा था और वे तुझसे हक़ के बारे में हक़ के ज़ाहिर हो जाने के बाद झगड़ा कर रहे थे, गोया वे आंखों देखे मौत के मुंह में हंकाए जा रहे हैं और (यह वाक़िया उस वक़्त पेश आया) जबकि अल्लाह तुमको वायदा दे रहा था कि दोनों फ़रीक़ (क़ाफ़िला और मक्का के मुश्रिकों की फ़ौज) में से एक फ़रीक़ को तुम्हारे क़ब्ज़े में दे देगा और तुम यह शुबहा करते थे कि तुमको वह गिरोह मिले, जिसके मुक़ाबले में कांटा भी न लगे और अल्लाह का इरादा यह था कि वह अपने वायदों के कलिमों से हक़ को साबित कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे और इस तरह हक़को हक़ कर दे और बातिल को बातिल, अगरचे मुज्रिमों*

Copyright OfflineDeeniApp

को यह बात पसन्द न आए।' (8 : 5-8)

अब मुसलमान आगे बढ़े और बद्र के क़रीब पहुंच कर मदीना की तरफ़ वाले रुख 'उदवतुद्दुनया' पर ख़ेमे गाड़ कर ठहर गए और मक्का के मुश्रिक आगे बढ़े तो बद्र पहुंच कर मदीने से दूर मक्का की तरफ़ वाले रुख 'उदवतुल क़स्वा' पर उतरे और लड़ाई के मोर्चे का नक़्शा इस तरह बना कि मुसलमान और मुश्रिक आमने-सामने थे और अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला उस वक़्त साहिल की तरफ़ नीचे-नीचे मक्का के मुश्रिकों के लश्कर की पीठ पर से गुज़र रहा था कि जब वे चाहें तो मक्का के मुश्रिकों की नुसरत व मदद के लिए बे-रोक-टोक आ सकते और कुमक का काम दे सकते हैं।

और फिर यह अजीब सूरतेहाल थी कि मुसलमानों का मोर्चा इतना ज़्यादा रेतीला था कि इंसानों और चौपायों दोनों के क़दम रेत में धंसे जा रहे थे और चलना मुश्किल हो रहा था, मगर मुश्रिकों का मोर्चा हमवार और पक्के फ़र्श की तरह था। ग़रज़ मुकम्मल दुश्मन तायदाद में तीन गुने से ज़्यादा, लड़ाई के सामान में पूरी तरह मुकम्मल, आने जाने के साधनों पर पूरा इत्मीनान, रुकने की जगह बहुत उम्दा और इन तमाम बातों के साथ क़ाफ़िले को कुमक की आशा भी थी और ख़ुद अपनी हालत यह कि तायदाद में बहुत कम, लड़ाई के हथियार नाम भर के लिए, न होने के बराबर, सवारियों की गिनती नाम के लिए, ठहरने की जगह इस दर्जा ख़राब और उन तमाम नासाज़गार हालात के साथ कुमक क़तई तौर पर जिसकी उम्मीद नहीं और हद यह कि दुश्मन पानी पर क़ाबिज़ और मुसलमान उससे महरूम।

ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में अगर मुसलमानों को उनकी ज़ाती राय पर छोड़ दिया जाता तो उनकी अ़क़्ल, ज़ाहिर को देखकर इसके अलावा और फ़ैसला कर सकती थी कि वे इस वक़्त को टाल दें और दुश्मन से किसी ऐसे दूसरे वक़्त के लिए जंग का क़ौल व क़रार करें कि वह दुश्मन की तरह हर हैसियत से जंग के लिए तैयार हों, चुनांचे इसी बुनियाद पर मुसलमानों ने ज़फ़रान घाटी में मश्विरा करते वक़्त शुरू में यही कहा था, मगर अल्लाह की वह्य के ज़रिए चूंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह मालूम हो चुका था कि ख़ुदा का यह वायदा कि तुमको 'और और नफ़ीर' दोनों में

Copyright OfflineDeeniApp

से एक पर मुसल्लत कर दिया जाएगा, सिर्फ़ इस शक्ल में पूरा होने वाला है कि मुसलमान मुश्रिकों के लश्कर (नफ़ीर) का मुक़ाबला करें और हक़ व बातिल की इस लड़ाई में मुसलमान कामियाब हों और मुश्रिक नाकाम व नामुराद, इसलिए मुसलमानों ने पैग़म्बर ﷺ की मर्ज़ी पाकर हर क़िस्म की बे-सर व सामानी के बावजूद ख़ुद को पूरे शौक़ के साथ फ़िदाकारी के जज़्बे के साथ पेश कर दिया।

ऐसी सूरतेहाल का क़ुरआन ने इस असर भरे ढंग के साथ बयान किया है—

तर्जुमा—*अगर तुम अल्लाह पर और उस (ग़ैबी मदद) पर यक़ीन रखते हो, जो हमने फ़ैसले कर देने वाले दिन अपने बन्दे पर नाज़िल की थी, जबकि फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में आ खड़ी हुई थीं तो चाहिए कि इस तक़्सीम पर (यानी माले ग़नीमत की तै की हुई तक़्सीम पर) कारबंद हो और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। यह वह (बद्र का) दिन था कि तुम उधर क़रीब के नाके पर थे, इधर दुश्मन दूर के नाके पर और क़ाफ़िला तुमसे निचले हिस्से में था (यानी समुन्दर के किनारे-किनारे गुज़र रहा था) और अगर तुम आपस में लड़ाई की बात ठहराते तो ज़रूर लड़ाई के वक़्त के बारे में तुम इख़्तिलाफ़ करते, क्योंकि तुम चाहते हो कि किसी हालत में लड़ाई न हो और दुश्मन चाहता है कि ज़रूर लड़ाई हो। (यानी तुम्हें दुश्मनों की भारी तायदाद और अपनी बेसर व सामानी का अन्देशा था और क़ाफ़िले पर क़ब्ज़ा आसान नज़र आ रहा था और दुश्मन अपनी भारी तायदाद और साज़ व सामान के बल पर घमंड किए हुए था, अल्लाह ने दोनों फ़ौजों को भिड़ा दिया ताकि जो बात होने वाली थी, उसे कर दिखाए साथ ही इसलिए कि जिसे हलाक होना है, हुज्जत पूरी होने पर हलाक हो और जो ज़िंदा रहने वाला है, हुज्जत के बाद ज़िंदा रहे और बेशंक अल्लाह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है।'* (8 : 41-42)

तर्जुमा—*'और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र की लड़ाई में और तुम कमज़ोर हालत में थे। पस अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (यह जब हुआ) कि तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुमको काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद को आसमान से उतरने वाले तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजे। हां, बिला शुबहा अगर तुम सब्र करो और तक़्वा का*

Copyright OfflineDeeniApp

रास्ता अख़्तियार करो और फिर ऐसा हो कि दुश्मन उसी वक़्त तुम पर चढ़ आए, तो तुम्हारा परवरदिगार (भी) पांच हज़ार निशान रखने वाले फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। अल्लाह ने यह सिर्फ़ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो, उसकी वजह से तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएं और मदद व नुसरत जो कुछ भी है, अल्लाह ही की तरफ़ से है, उसकी ताक़त सब पर ग़ालिब है और वह अपने तमाम कामों में हिक्मत रखने वाला है और साथ ही इसलिए ताकि हक़ के इंकार करने वालों की जमईयत व ताक़त का एक हिस्सा बेकार कर दे, उन्हें इस दर्जा ज़लील व ख़्वार कर दे कि वे नामुराद होकर उलटे पांव फिर जाएं। (3 : 124-127)

मदद की दुआ़

ग़रज़ इस हालत में दोनों फ़रीक़ों ने लड़ाई के लिए लाइन बन्दी कर ली। तो पहले आपने मुसलमानों की सफ़ों को दुरुस्त फ़रमाया और फिर उस अरीश (ख़सपोश टूटी झोंपड़ी) के नीचे जाकर जो आपके लिए लड़ाई के मैदान में बना दी गई थी, अल्लाह के दरबार में गिडगिड़ा-गिड़गिड़ा कर दुआ़ शुरू कर दी और अ़र्ज़ किया–

ऐ अल्लाह! तूने मुझ से जो वायदा (मदद का) फ़रमाया, उसको पूरा कर, ऐ अल्लाह! अगर ये मुट्ठी भर मुसलमान हलाक हो गए, तो फिर इस धरती पर कोई तेरा इबादतगुज़ार बाक़ी नहीं रहेगा।

सिद्दीक़े अकबर रज़ि० ने देखा तो क़रीब आए और अ़र्ज़ किया, 'ख़ुदा के रसूल! बस कीजिए, अल्लाह तआ़ला अपना वायदा ज़रूर पूरा करेगा।'

ग़ैबी मदद

1. और आख़िर यही हुआ भी कि हर क़िस्म के नासाज़गार हालात और इस दर्जा कमज़ोरी के बावजूद कि किसी मुसलमान का इस लड़ाई से सही व सालिम बच कर निकल जाना ख़ुद एक मोजज़ा होता, मुसलमानों को ग़ैबी नुसरत व इमदाद ने बामुराद व कामियाब किया, फ़त्ह व नुसरत ने क़दम चूमे और दुनिया की तारीख़ का एक बेनज़ीर और हैरत में डाल देने वाला इंक़िलाब

Copyright OfflineDeeniApp

पेश कर दिया और कुरैश के मुश्रिकों के तमाम सरदार और मशहूर योद्धा ही नहीं क़त्ल हुए, बल्कि शिर्क व कुफ़्र की इज्तिमाई ताक़त ही का ख़ात्मा हो गया।

यह ग़ैबी मदद क्या थी? कुरआन इसका जवाब कई आयतों में देता है—

तर्जुमा—*'मुसलमानों की निगाह में दुश्मनों की तायदाद असल तायदाद से कम नज़र आई, ताकि मुसलमान मर्ऊब न हों और मुश्रिकों की निगाहों में मुसलमान मुट्ठी भर मालूम हुए, ताकि वे लड़ाई से जी न चुराएं और हक़ व बातिल का मारका टल न जाए और एक वक़्त में दोगुने मालूम हुए, ताकि मुसलमानों से मरऊब होकर रह जाएं।* (8 : 43-44)

तर्जुमा—*अभी हो चुका है तुमको एक नमूना, दो फ़ौज़ों में जो भिड़ी हुई थीं, एक फ़ौज है कि लड़ती है अल्लाह की राह में और दूसरी मुंकर है, ये उनको देखते हैं अपने दो बराबर, खुली आंखों से और अल्लाह ज़ोर देता है अपनी मदद का जिसको चाहे, उसी में ख़बरदार हो जावें जिनको आंख है।'*

(आले इमरान 3 : 13)

2. मुसलमानों की दुआ पर पहले उनकी मदद एक हज़ार फ़रिश्तों से की गई।

तर्जुमा—*जब तुम लगे फ़रियाद करने लगे रब से, तो पहुंचा तुम्हारी पुकार को कि मैं मदद भेजूंगा तुम्हारी हज़ार फ़रिश्ते जंगी पीछे आवें।'*

(8 : 9)

और फिर यह तायदाद बढ़ाकर तीन हज़ार कर दी गई—

तर्जुमा—*'जब तू कहने लगा मुसलमानों को क्या तुमको क़िफ़ायत नहीं कि तुम्हारी मदद भेजे रब तुम्हारा तीन हज़ार फरिश्ते आसमान से उतरे (हुए)*

(3 : 124)

और अगर दुश्मन तुम पर एक साथ हमला कर दे तो हम तीन हज़ार के बजाए पांच हज़ार फ़रिश्तों से मदद करेंगे।'

तर्जुमा—*'अलबत्ता अगर तुम ठहरे रहो और परहेज़गारी करो और वे आवें तुम पर उसी दम, तो मदद भेजे तुम्हारा रब पांच हज़ार फ़रिश्ते पले हुए घोड़ों पर।'*

(3 : 125)

3. मुसलमानों पर ठीक लड़ाई के वक्त ऊंघ तारी कर दी, जिसके कुछ

Copyright OfflineDeeniApp

मिनट बाद उनकी बेदारी ने उनमें एक नई ताज़गी और नई रूह पैदा कर दी।

तर्जुमा—*'जिसने डाल दी तुम पर ऊंघ अपनी तरफ़ से तस्कीन को और उतारा तुम पर आसमान से पानी कि उससे तुमको पाक करे और दूर करे तुमसे शैतान की नजासत और मज़बूत गिरह दे तुम्हारे दिल पर और साबित करे तुम्हारे क़दम।'* (8 : 11)

4. आसमान से पानी बरसा कर मुसलमानों के लिए रेतीली ज़मीन को पक्के फ़र्श की तरह बाना दिया और नीचे होने की वजह से हौज़नुमा गढ़े में पानी इकट्ठा कर दिया और दुश्मनों को ज़मीन की कीचड़ की तरह दलदल बना डाला।

तर्जुमा—*'जब हुक्म भेजा तेरे रब ने फ़रिश्तों को कि मैं साथ हूं तुम्हारे सो तुम दिल साबित करो मुसलमानों के मैं डाल दूंगा दिल में क़ाफ़िरों के दहशत, सो मारो और ऊपर गरदनों के और मारो उनके पोर-पोर।'* (8 : 12)

जंग का नतीजा

बहरहाल जंग का मारका बरपा हुआ और दोनों और से भिड़ गए तो एक दूसरे के मुक़ाबल में आकर 'हल मिम बारिज़' पुकारने और ललकारने लगे और फिर यकायक हुजूमी लड़ाई शुरू हो गई। मुसलमान एक तो जम कर लड़े, मगर दुआ से फ़राग़त के बाद जब लड़ाई के मैदान में आकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने 'शाहतिल वुजूह' (चेहरे रूस्याह हों) पढ़ते हुए मुट्ठी भर ख़ाक और कंकड़ियां दुश्मनों की तरफ़ फेंकी तो अल्लाह की मोजज़ाना कुदरत ने हवा के ज़रिए उसके ज़र्रे तमाम मुश्रिकों की आंखों तक पहुंचा दिए और वे इस यकायक पेरशानी से बेचैन होकर आंखें मलने लगे और जंग जीत की शक्ल में बदल गई।

तर्जुमा—*'(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और तूने जब कंकड़ियां फेंकी, तो हक़ीक़त में तूने नहीं फेंकी, बल्कि अल्लाह ने फेंकीं थीं (क्योंकि इंसानी हाथ एक मुट्ठी से इतने बड़े लश्कर के हर आदमी को कंकड़ियां नहीं फेंक सकता था, पर जो कुछ हुआ, नबी के हाथ ख़ुदा का मोजज़ा हुआ)।* (8 : 17)

Copyright OfflineDeeniApp

और देर नहीं लगी कि मुश्रिकों के बड़े-बड़े आदमी मारे गए और दुश्मनों के पैर उख़ड़ गए। वे भागते थे, मगर भागने का मौक़ा न पाते थे, चुनांचे उनके सत्तर आदमी क़त्ल हुए और सत्तर गिरफ़्तार और बाक़ी ने भागने का रास्ता अख़्तियार किया।

मुसलमान अगरचे ख़ुदा की नुसरत और उसके फ़ज़्ल से कामियाब हुए और फ़त्ह व कामरानी के मालिक बने, फिर भी बाईस मुजाहिदों ने भी जामे शहादत नोश किया।

बद्र की लड़ाई ने दुनिया की तारीख़ का रुख़ बदल दिया

बद्र की लड़ाई तारीख़ और सीरत लिखने वालों से भी अगरचे अपनी तारीख़ी अहमियत का एतराफ़ कराती है और वे यह कहने पर मजबूर हो जाते हैं कि बद्र की लड़ाई एक हंगामी लड़ाई नहीं थी, बल्कि उसने मक्का के क़ुरैश की ताक़त का हमेशा के लिए ख़ात्मा कर दिया और मुसलमानों के लिए अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने की राहें खोल दीं।

उहुद की लड़ाई

उहुद मदीना मुनव्वरा के एक पहाड़ का नाम है। यही वह जगह है जहां शव्वाल 03 हि0 625 ई० में मुसलमानों और मुश्रिकों के दर्मियान हक़ व बातिल की लड़ाई हुई। बद्र में जो घाव क़ुरैश को लग चुका था, उसका इंतिक़ाम लेने के लिए अबू सुफ़ियान की सरबराही में तीन हज़ार सूरमाओं की भारी फ़ौज मक्का से निकली और उहुद के सामने आकर जम गई।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब अबू सुफ़ियान की तैयारियों का हाल मालूम हुआ तो सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया, उम्र वाले और तजुर्बेकार सहाबा रज़ि० ने यह राय दी कि हमको बाहर निकल कर लड़ाई की ज़रूरत नहीं है, बल्कि फ़ायदेमंद तरीक़ा यह है कि हम मदीना के अन्दर ही रह कर दुश्मन का इन्तिज़ार करें और जब वह मदीने पर हमलावर हो तो उसका ज़ोरदार मुक़ाबला करें। हमारे इस तरीक़े में एक तो दुश्मन को हिम्मत न होगी कि मदीने पर हमलावर हो और अगर उसने क़दम उठाया तो बिला

Copyright OfflineDeeniApp

शुबहा ज़बदस्त हार का सामना करके भागने का रास्ता अख़्तियार करेगा, मगर उन सहाबा रज़ि० ने जो बद्र में शरीक नहीं हुए थे और जो बद्र की फ़ज़ीलत को इस वक़्त हासिल करना चाहते थे, यह राय पसन्द नहीं आई और नवजवानों ने भी उनका साथ दिया और अक्सरीयत की राय यह क़रार पाई कि हमको दुश्मनों का मुक़ाबला मैदान ही में करना चाहिए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब अक्सरीयत का रुझान यह पाया तो उसका साथ दिया और मुबारक हुजरे में तशरीफ़ ले गए तो तजुर्बेकार और बड़े सहाबा रज़ि० ने अपने छोटों को उनकी राय पर मलामत की, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रुझान के ख़िलाफ़ क्यों अपनी आज़ाद राय से आपको परेशान किया। चुनांचे जब आप बाहर तशरीफ़ लाए तो उन नवजवानों और इस्लामी शमा के परवानों ने अपनी राय पर नदामत ज़ाहिर की और अ़र्ज़ किया कि आप मदीना ही के अन्दर दुश्मन का मुक़ाबला करें, यही मुनासिब है।

यह सुनकर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'नबी की शान के यह ख़िलाफ़ है कि जब ख़ुदा की राह में हथियार सज कर तैयार हो जाए तो फिर हक़ व बातिल के मारके के बग़ैर ही उनको उतार दे। अब ख़ुदा का नाम लेकर मैदान में निकलो।'

नबी अकरम ﷺ जब मदीने से निकले, तो साथ में एक हज़ार का लश्कर था। इस तश्कर में तीन सौ मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की रहनुमाई में साथ थे। ये मदीना ही में मक्का के मुश्रिकों के साथ साज़िश कर चुके थे कि मुख़्लिस मुसलमानों को बुज़दिल बनाने के लिए यह तरीक़ा अख़्तियार करेंगे कि पहले मुसलमानों के लश्कर के साथ निकलेंगे और राह से ही उनसे कट कर मदीना वापस आ जाएंगे। चुनांचे मुनाफ़िक़ों का सरदार बहाना करके इस्लामी फ़ौज से कटकर जुदा हो गया और मदीना वापस आ गया कि जब नबी अकरम ﷺ ने हम जैसे तजुर्बेकारों की बात न मान कर अल्हड़ नवजवानों की राय को तर्जीह दी तो हमको क्या ज़रूरत है कि ख़ामख़ाह अपनी जानो को हलाकत में डालें।

मगर मुनाफ़िक़ों का मक़्सद पूरा न हुआ और इस्लाम के इन फ़िदाकारों

Copyright OfflineDeeniApp

पर उन के पलट जाने का क़तई तौर पर कोई असर न हुआ और इस्लाम के ऐसे जांबाज़ और निसार होने वालों पर असर ही क्या पड़ता जिनके बच्चों की जांबाज़ी और इस्लाम पर फ़िदाकारी का जज़्बा और वलवला यह हो कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मदीना से बाहर जब इस्लामी फ़ौज का जायज़ा लिया और कमसिन लड़कों को वापसी का हुक्म दिया, तो राफ़ेअ बिन ख़दीज जो, अभी नवउम्र ही थे, यह देखकर पंजों के बल खड़े हो गए कि लम्बे क़द के बनकर जंग के सिपाही रह सकें। चुनांचे उनकी तदबीर कारगर हो गई।

इसी तरह समुरा बिन जुन्दुब छोटी उम्र के समझे गए तो रोने लगे और अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अगर राफ़ेअ लड़ाई में शरीक हो सकते हैं, तो मैं क्यों ख़ारिज किया जा रहा हूं, जबकि में राफ़ेअ को कुश्ती में पछाड दिया करता हूं।' आख़िर दोनों की कुश्ती कराई गई और समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया और वे मुजाहिदीन में शामिल कर लिए गए, अलबत्ता मुसलमानों के दो क़बीले बनू सलमा, बनू हारिसा में कुछ बद-दिली सी पैदा हो चली थी, मगर फ़िदाकार मुसलमानों के जोश और वलवले को देखकर उनकी हिम्मत भी बुलन्द हो गई।

नबी अकरम ﷺ ने इस्लामी फ़ौज की इस तरह सफ़ें बनाईं कि उहुद को पीछ ले लिया और पचास तीरंदाज़ों को हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की कमान में पहाड़ की एक घाटी पर मुक़र्रर फ़रमा दिया कि हार-जीत किसी हाल में भी अपनी जगह से हरकत न करें, ताकि पीछे की ओर से दुश्मन हमलावर न हो सके।

अब लड़ाई शुरू हो गई और दोनों सफ़ें आमने-सामने खड़े होकर वीरता के जौहर दिखाने लगीं। अभी लड़ाई को कुछ ज़्यादा देर नहीं लगी थी कि मुसलमानों का पलड़ा भारी हो गया और मक्का के मुश्रिकों का लश्कर बिखर कर भागने लगा। लड़नेवाले मुसलमानों ने जब ग़नीमत का माल जमा करने का इरादा किया तो तीरदांज़ों से सब्र न हो सका और वे घाटी छोड़ने पर तैयार हो गए। कमान अफ़सर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने बहुत रोका और फ़रमाया, नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी

Copyright OfflineDeeniApp

न करो, मगर उन्होंने यह कह कर जगह छोड़ दी कि आपका हुक्म लड़ाई तक था, जब लड़ाई ख़त्म हो गई तो ख़िलाफ़वर्ज़ी कैसी?

ग़नीमत के हासिल करने के शौक़ ने उधर मुसलमान तीरंदाज़ों से जगह ख़ाली करा दी, इधर ख़ालिद बिन वलीद (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) अपने जंगी दस्ते के साथ मैदान ख़ाली देखकर घाटी की जानिब से मुसलमानों पर टूट पड़े। अब मुसलमान घबराए और इस अचानक हमले से उनके पैर उखड़ गए और इस तरह यकायक जीत हार में बदल गई। अगरचे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के गिर्द व पेश अबूबक्र, उमर, अ़ली, तलहा और ज़ुबैर रज़िल्लाहु अन्हुम जैसे फ़िदाकार मौजूद थे, फिर भी मुसलमानों के भागने से दुश्मनों को मौक़ा मिल गया और एक शक़ी अज़ली ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पत्थर खींचकर मारा जिससे आपका मुबारक दांत शहीद हो गया, आप पत्थर के सदमे से क़रीब की एक घाटी में गिर गए। अभी आप संभले भी न थे कि एक मुश्रिक ने पुकारा दिया, 'इन-न मुहम्मदन क़द मा-त' (मुहम्मद सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया) इस आवाज़ ने मुसलमानों में और ज़्यादा इंतिशार और सख़्त बेचैनी पैदा कर दी, मगर मुसलमान फ़ौरन संभले और साबित क़दम सहाबा ने ललकारा कि अगर यह ख़बर सही है, तो अब हम ज़िंदा रहकर क्या करेंगे, आओ और जंग का फ़ैसला करके दम लो। इस हक़ की सदा ने मुसलमानों के दिल में ग़ैरत का जज़्बा पैदा किया। वे सब पलट पड़े और हमलावर होने की ग़रज़ से सिमट कर इकट्ठा हो गए, मगर जंग का नक़्शा बदल चुका था और क़ुरैश अपनी कामियाबी पर नाज़ां होकर मैदान से अलग हो चुके थे। मुसलमानों ने आंख उठाकर देखा तो आप पर नज़र पड़ते ही उनके दिल में भी सुकून पैदा हो गया और परवानावार आपके गिर्द जमा हो गए। ग़ार में गिर जाने से ख़ूद सर में घुस गया और ज़िरह की कड़ियों की ज़द में चेहरा मुबारक और बाज़ुओं पर भी हल्के घाव आ गए थे। हज़रत अ़ली और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने ख़ूद को सर से निकाला और घावों को धोया और बोरिया जलाकर राख को घाव के भीतर भर दिया, जिससे ख़ून बंद हो गया।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत

इस ग़ज़वे में सत्तर मुसलमान शहीद और बहुत से ज़ख़्मी हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सगे चचा, दूध शरीक भाई, बे-तक्ल्लुफ़ दोस्त और जांनिसार सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत इस वाक़िया का ज़बरदस्त सानहा है, वह्य की ज़ुबान में उन्हें 'सैयदुश-शुहदा' का लक़ब अ़ता फ़रमाया।

मक्का के मुश्रिकों ने इस लड़ाई में परिंदों और ख़ूंख़्वार हैवानों की तरह मुरदा लाशों तक के नाक-कान काट डाले और पेट चाक करके दिल व जिगर को नेज़ों की अनी में छेद-छेद कर दिल का बुख़ार निकाला। अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दा ने तो सैयदुश शुहदा का जिगर चाक करके दांतों से चबा डाला। हज़रत हमज़ा रज़ि० को हब्शी ग़ुलाम वह्शी ने शहीद किया था, जिसकी ख़ुशी में हिन्दा ने उसको अपना सोने का हार अ़ता किया।

अबू सुफ़ियान अपनी कामियाबी की मसर्रत में कह रहा था 'आला हुबलुन आला हुबलुन' (हुबल की जय हो, हुबल की जय हो) नबी अकरम ﷺ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, तुम इसके जवाब में यह पुकारो, अल्लाह, आला व अजल्ल, अल्लाहु आला व अजल्लु' (अल्लाह ही सबसे बुलंद व आला बुज़ुर्ग है)

अबू सुफ़ियान ने फिर तैश में आकर कहा, 'लनल उ़ज़्ज़ा, वला उ़ज़्ज़ा लकुम' [हमारी मददगार उ़ज़्ज़ा देवी है और तुम्हारे पास उ़ज़्ज़ा का हमसर (बराबर का) कोई नहीं है।]

हुज़ूरे अक़्दस ने इर्शाद फ़रमाया, 'ऐ उमर! तुम यह जवाब दो, 'अल्लाहु मौलाना, व ला मौला लकुम' (हमारा वाली व मददगार अल्लाह तआ़ला है और तुम्हारा कोई भी मददगार नहीं है)

बहरहाल अबू सुफ़ियान यह कह कर कि अगले साल फिर बद्र में मारका होगा, अपनी फ़ौज लेकर वापस चला गया।

Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन और ग़ज़वा-ए-उहुद

मुसलमानों का ग़ज़वा उहुद (उहुद की लड़ाई) के लिए तैयार होना, मुनाफ़िक़ों का इस्लामी फ़ौज से जुदा होकर मुसलमानों में बिखराव पैदा करने की कोशिश करना, मुसलमानों की एक बात यह कि अल्लाह की मदद से कामियाब होना और फिर अपनी ग़लतकारी और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की ख़िलाफवर्ज़ी के बदले में हार खा जाना और जीत का हार में बदल जाना, अल्लाह तआ़ला का मुसलमानों की तसल्ली करना, इन तमाम बातों को क़ुरआन ने आले इमरान में थोड़ी तफ़्सील के साथ बयान किया है, चुनांचे मुहम्मद बिन इसहाक़ से नक़ल किया गया है—

अल्लाह तआ़ला ने उहुद की लड़ाई की शान में आले इमरान की साठ आयतें नाज़िल फ़रमाई हैं।

और इब्ने अबी हातिम ने मिस्वर बिन मख़रमा के वास्ते से रिवायत किया है कि वे कहते थे, मैंने अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से अ़र्ज़ किया, आप उहुद की लड़ाई का अपना क़िस्सा बयान फ़रमाएं। उन्होंने फ़रमाया, तुम आले इमरान की एक सौ बीस आयतें पढ़ो तो तुमको सारा वाक़िया मालूम हो जाएगा। ये आयतें यहां से शुरू होकर 'इज़ ग़दव-त्त मिन अह्लिक....' पर ख़त्म होती हैं—

तर्जुमा—*'और (ऐ पैग़म्बर! ज़िक्र के क़ाबिल है वह बात) जबकि तुम सुबह सवेरे अपने घर से निकले थे (और उहुद के मैदान में) लड़ाई के लिए मोर्चों पर मुसलमानों को बिठा रहे थे और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जानने वाला है फिर जब ऐसा हुआ था कि तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया था कि हिम्मत हार दें (और वापस लौट चलें) हालांकि अल्लाह मददगार था और जो ईमान रखने वाले हैं उनको चाहिए कि हर हाल में अल्लाह ही पर भरोसा रखें।* (3 : 121-122)

तर्जुमा—*'और देखो, न तो हिम्मत हारो, न ग़मगीन हो, तुम ही सबसे बरतर व आला हो, बशर्ते कि तुम सच्चे मोमिन हो। अगर तुमने (उहुद) में ज़ख़्म खाया तो दूसरों को भी वैसे ही ज़ख़्म (बद्र में) लग चुके हैं। असल में ये (हार-जीत) के औक़ात हैं जिन्हें हम इंसानों में इधर-उधर फिराते रहते हैं।*

Copyright OfflineDeeniApp

इसके अलावा यह इसलिए था ताकि इस बात की आज़माइश हो जाए, कौन सच्चा ईमान रखने वाला है, कौन नहीं और इसलिए कि तुममें से एक गिरोह को (इन वाक़ियों और दिनों के नतीजों का) गवाह बना दे और यह ज़ाहिर है कि अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को दोस्त नहीं रखता।' (3: 139-140)

अह्ज़ाब की लड़ाई (ख़ंदक़ की लड़ाई)

अह्ज़ाब की लड़ाई तमाम लड़ाइयों में ख़ास अहमियत रखती है और शक्ल के एतबार से निराली है। इसलिए कि इस ग़ज़वे में मुसलमानों को तमाम काफ़िर जमाअ़तों से एक ही वक़्त में वास्ता पड़ा था और अरब क़बीले यहूदी और उनके मित्र सबके सब जमा होकर मुसलमानों को ख़त्म करने निकले थे और मदीने के अन्दर भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह ख़ुफ़िया उनकी मदद कर रहा था। 'हिज़्ब' के मानी चूंकि गिरोह हैं और अह्ज़ाब उसकी जमा (यानी बहुवचन) है, इसलिए यह अह्ज़ाब की लड़ाई कहलाया और जबकि हज़रत सलमान रज़ि० के मश्विरे से मुसलमानों ने पहली बार ख़ंदक़ खोद कर मदीना को दुश्मन से महफ़ूज़ रखने की तदबीर अपनायी, इसलिए इसको ख़ंदक़ का ग़ज़वा या ख़दंक़ की लड़ाई भी कहते हैं।

यह ग़ज़वा शव्वाल 05 हि० मुताबिक़ फ़रवरी 629 ई० में पेश आया, जबकि अबू सुफ़ियान दस हज़ार लोगों पर मुश्तमिल भारी फ़ौज के साथ मदीने पर चढ़ाई के लिए मक्का से निकला। मुख़्तसर तौर पर वाक़िआ़त की तफ़्सील यह है कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत-फिरत मालूम हुई, तो दस्तूर के मुताबिक़ आपने सहाबा से मश्विरा फ़रमाया। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम फ़ारस वालों का यह दस्तूर है कि ऐसे मौक़े पर ख़ंदक़ खोद कर दुश्मन से ख़ुद को महफ़ूज़ कर लेते हैं और उसको मजबूर बना देते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मश्विरे को क़ुबूल फ़रमा कर ख़ंदक़ खोदने का हुक्म दिया और कुदाल लेकर ख़ुद भी शिर्कत फ़रमाई। इंसानी कायनात की तारीख़ में आक़ा और ग़ुलाम, हाकिम और महकूम, अफ़सर और मातहत, मख़दूम और ख़ादिम के दर्मियान यह पहला मंज़र था

Copyright OfflineDeeniApp

जो आंखों ने देखा और कानों ने सुना कि दो जहां के सरदार हाथ में कुदाल लिए तीन दिन के फ़ाक़े से पेट पर पत्थर बांधे, मुहाजिरीन व अंसार के साथ ख़ंदक़ खोदने में बराबर का शरीक नज़र आता है, बल्कि एक सख़्त पत्थर को रोक बन जाने पर जब सब सहाबा ने ज़ोर लगाया और उसने अपनी जगह से हरकत न की और ख़िदमते अक़्दस में इस वाक़िए को पेश किया गया तो आपने 'बिस्मिल्लाह' कहकर कुदाल की एक चोट से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

आपके साथ सहाबा भी तीन रात-दिन भूख से पेट पर पत्थर बांधे दीने हक़ की हिमायत और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने लिए लगे हुए थे।

एक तरफ़ अगर 'हमने तीन दिन ऐसे गुज़ारे कि कुछ चखा नहीं था' का मुज़ाहरा था, तो दूसरी तरफ़ ज़ुबान पर दुआ के ये 'कलिमे' जारी थे, 'ऐ ख़ुदा! ऐश तो आख़िरत का ऐश है। पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा', और जब तौहीद पर निसार होने वाले, शमा नुबूवत के परवाने यह सुनते तो वाक़ई परवानों की तरह पूरे जोश में आकर यह कह-कह कर क़ुरबान होने लगते–

'हम वह हैं जिन्होंने ज़िंदगी भर के लिए मुहम्मद ﷺ के हाथ पर जिहाद की बैअत कर ली है–

'ऐ अल्लाह! ख़ैर व नेकी तो आख़िरत ही की है, पस तू अंसार और मुहाजिरों के दर्मियान अपनी बरकत नाज़िल फ़रमा।'

और बरा बिन आज़िब फ़रमाते हैं, कि ग़ज़वा-ए-ख़ंदक़ में ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हालत यह थी कि ख़ंदक़ से मिट्टी उठाकर इधर-उधर मुंतक़िल कर रहे थे और मुबारक जिस्म गर्द से अट रहा था और यह रजज (वीर-गाथा) पढ़ते जाते थे–

'ख़ुदा की क़सम, अगर ख़ुदा की हिदायत रहनुमाई न करती तो हमको हिदायत नसीब होती और न सदक़ा व नमाज़, पस ऐ ख़ुदा! तू हम पर इत्मीनान उतार और जंग के मैदान में हमको साबित क़दम रख और जिन लोगों ने हम पर सरकशी करते हुए चढ़ाई की है, जब उन्होंने फ़ित्ने का इरादा किया तो हमने इंकार कर दिया (उनको नाकाम कर दिया)। और तंज़ जोश

Copyright OfflineDeeniApp

के साथ 'अबैना' को ऊंची आवाज़ से कहते जाते थे।'

ख़दक़ की खुदाई का काम कुछ दिन जारी रहा और इस तरह दुश्मन से हिफ़ाज़त का पूरी तरह सामान हो गया, लेकिन जब घेराव को बीस दिन हो गए, तो बनू कुरैज़ा के यहूदियों की अहद शिकनी और लगातार घेराव से कुछ उकताने और बेचैनी महसूस करने लगे। हुआ यह कि काफ़िरों की फ़ौज में एक आदमी नुऐम बिन मसऊद नख़ई था, यह गो अभी तक मुसलमान नहीं हुआ था, लेकिन उसके दिल में इस्लाम की सच्चाई घर कर चुकी थी, इसलिए उसने अपनी होशियारी से मक्का के मुश्रिकों और मदीना के यहूदियों के दर्मियान बे-एतमादी पैदा कर दी और लड़ाई के मामले में दोनों फ़रीक़ में ऐसा इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि एक ने दूसरे के साथ मिलकर मुसलमानों के साथ लड़ाई करने से इंकार कर दिया और अभी मक्का के मुश्रिक वापस भी न हुए थे कि कुदरत की तरफ़ से तेज़ हवाओं का ऐसा तूफ़ान उठा कि जिसने आन की आन में दुश्मन की तमाम फ़ौज को तहस-नहस कर दिया। ख़ेमे उखड़ कर गिरने लगे, चौपाए भड़क-भड़क कर भागने लगे और सारी फ़ौज में अबतरी फैल गई और दुश्मन के घेराव छोड़कर भागने का रास्ता अख़्तियार किया और इस तरह अल्लाह ने मुसलमानों को उनके फ़ित्ने से नजात दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसी मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया—

'अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुझको पुरवा हवा के ज़रिए जीत अ़ता की गई और आद पछुवा हवा से हलाक किए गए थे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब दुश्मन की ख़बर मालूम करने की ज़रूरत पेश आई थी तो तीन बार आपने मालूम किया कि इस ख़िदमत को कौन अंजाम देगा और तीनों बार हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम नें आगे बढ़ कर अर्ज़ किया, इस ख़िदमत के लिए मैं हाज़िर हूं।

तब आपने ईशाद फ़रमाया— हर एक नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी ज़ुबैर रज़ि० हैं। और इसी मौक़े पर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई—

Copyright OfflineDeeniApp

'ऐ किताब (क़ुरआन) के नाज़िल करने वाले ख़ुदा! ऐ जल्द हिसाब लेने वाले! तू मुश्रिकों की जमाअ़त को हरा दे, ऐ अल्लाह! उनको भगादे और उन को डगमगा दे।'

'कोई ख़ुदा नहीं अल्लाह की ज़ात के सिवा, जो यक्ता व बेहमता है, उसने अपने लश्कर (मुसलमानों) को इ़ज़्ज़त बख़्शी और अपने बन्दे की मदद की और यक्ता ज़ात अह्ज़ाब (सब जमाअ़तों) पर ग़ालिब है और उसके अलावा सब फ़ानी है।'

यही वह लड़ाई है जिसमें जिहाद की मश्ग़ूली की वजह से हुज़ूरे अकरम सल्ल० और सहाबा रज़ि० की अ़स्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और आपने मग़रिब के वक़्त दोनों नमाज़ों को अदा किया। (बुख़ारी, बाबुल जिहाद)

क़ुरआन और अह्ज़ाब की लड़ाई

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं—

'यह आयत (जिस का तर्जुमा—नीचे दिया जा रहा है) ख़ंदक़ की लड़ाई के बारे में ही नाज़िल हुई—

तर्जुमा—*'और जब चढ़ आए (मुश्रिक) तुम पर ऊपर की जानिब से और नीचे की जानिब से और जब फिर गई (दहशत की वजह से) आंखें और पहुंच गए दिल गलों तक (यानी कलेजे मुंह को आ गए)* (33 : 10)

क़ुरआन में इसी ग़ज़वे के तअ़ल्लुक से इस सूरः का नाम ही 'अह्ज़ाब' हो गया। इस सूरः के दूसरे और तीसरे रुकूअ में इसी वाक़िए का ज़िक्र है—

तर्जुमा—*'ऐ ईमान वालों, अल्लाह की नेमत को याद करो जो तुम पर उस वक़्त की गई जब तुम पर (मुश्रिकों के) लश्कर चढ़े थे। पस हमने उन पर हवा को और ऐसी फ़ौजों को भेज दिया, जिनको तुम नहीं देख रहे थे और जो काम भी तुम करते हो, अल्लाह उन कामों को देखने वाला है—'व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन क़दीर' तक।'* (33 : 9-27)

Copyright OfflineDeeniApp

हुदैबिया का वाक़िया

हुदैबिया मक्का मुकर्रमा से जिद्दा की तरफ़ एक मंज़िल पर वाक़े एक कुएं का नाम है। यही वह जगह है जिसके साथ 'फ़त्हे मुबीन' (खुली जीत) और बैअते रिज़वान की मुक़द्दस तारीख़ जुड़ी हुई है।

6 हिजरी मुताबिक़ फ़रवरी 628 ई० माह ज़ीक़ादा, दिन सोमवार, वह मुबारक वक़्त था कि सरवरे दो आलम ﷺ चौदह सौ सहाबा के साथ उमरा की अदाएगी के इरादे से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हुए और जब ज़ुल-हुलैफ़ा पहुंचे, तो कुरबानी के जानवरों के क़ालादा डाला और एहराम बांधा और बनी खुग़ायाके एक आदमी को जासूस बनाकर भेजा कि वह क़ुरैश के हालात का अन्दाज़ा लगाकर ख़बर दे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० जब ग़दीर अशतात पंहुचे तो जासूस ने आकर ख़बर दी कि क़ुरैश को आपकी आमद की इत्तिला हो चुकी है और वे क़बीलों को जमा करके मुक़ाबले की तैयारियों में लगे हैं, उनका इरादा है कि आप को मक्का मुकर्रमा में दाख़िल न होने दें।

नबी अकरम ﷺ ने सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया तो सिद्दीक़े अकबर रज़ि० ने अ़र्ज़ किया—

'ख़ुदा के रसूल ﷺ! हम तो बैतुल्लाह के इरादे से निकले हैं, लड़ाई या क़त्ल व क़िताल हमारा मक़्सद नहीं है, इसलिए हम बैतुल्लाह की ज़ियारत को अपना मक़्सद समझते हुए ज़रूर आगे बढ़ते रहेंगे और जो जमाअ़त ख़ामख़ाही रास्ते की रुकावट बनेगी, उससे मजबूरी में लड़ना पड़ेगा।

मश्विरे के बाद ज़ाते अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया 'अब ख़ुदा का माम ले कर बढ़े चलो।' (बुख़ारी)

बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वाले ख़ुदा के इश्क़ में चूर और बैतुल्लाह की ज़ियारत में मसरूर मक्का की तरफ़ क़दम बढ़ाए चल रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ालिद बिन वलीद फ़ौज का दस्ता लिए अतीम में घात लगाए तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा है, इसलिए मुनासिब यह है कि इस ओर से कावा काट कर दाहिनी तरफ़ चलें और अचानक बेख़बरी में उनके

Copyright OfflineDeeniApp

सामने पहुंच जाएं।

जब मुसलमान अचानक ख़ालिद बिन वलीद की फ़ौजी टुकड़ी के सामने आ गए तो अपनी घात को नाकाम देखकर ख़ालिद घबरा गए। दस्ते को लेकर तेज़ी के साथ मक्का के मुश्रिकों के पास जा पहुंचे और उनको मुसलमानों के आने की ख़बर दी।

नबी अकरम ﷺ जब उस टीले पर पहुंचे कि उसके बाद घाटी में उतर कर मक्का पहुंच जाना था तो अचानक आपकी ऊंटनी क़सवा बैठ गई। सहाबा ने यह देखकर उसको चौके दिए, भड़काया और कोशिश की किसी तरह उठ खड़ी हो, मगर वह न उठी, लोग जब बार-बार हल-हल (ऊंटनी को बिठाने के लिए बोलते हैं) कहकर थक गए तो कहने लगे, 'क़सवा नाफ़रमान हो गई।'

नबी अकरम ﷺ ने यह सुना तो फ़रमाया, क़सवा हरगिज़ नाफ़रमान नहीं हुई और न यह इसकी आदत है, बल्कि इसको उस ख़ुदा ने रोक दिया था जिसने हाथी वालों को रोक दिया था यानी कुरैशे मक्का की बेहूदगी और जंगी ज़ेहनियत की वजह से चूंकि जंग की हालत पैदा हो गई है, इसलिए ख़ुदा की मर्ज़ी यह है कि हम उस वक़्त तक आगे न बढ़ें, जब तक कि काबे की हुर्मत का अ़ह्द न कर लें।'

चुनांचे इस इर्शाद के बाद ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, वे मुझसे जो भी ऐसी बात चाहेंगे कि उसमें अल्लाह की हुर्मतों की अ़ज़्मत उनके पेशेनज़र हो तो ज़रूर उसको पूरा करूंगा।

हुज़ुरे अक़्दस ﷺ जब यह एलान फ़रमा चुके तो अब जो क़सवा को खड़ी होने के लिए डपटा, वह फ़ौरन खड़ी हो गई और चल पड़ी और हुदैबिया के मैदान में जा पहुंची।

जब बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों का मुक़द्दस क़ाफ़िला हुदैबिया में ठहरा तो मश्विरे मे यह तै पाया कि हज़रत उस्मान रज़ि० को मक्का भेजा जाए, ताकि वे मक्का के मुश्रिकों पर यह वाज़ेह करें कि हमारा इरादा, बैतुल्लाह की ज़ियारत के अलावा और कुछ नहीं, इसलिए तुमको रोकना

Copyright OfflineDeeniApp

मुनासिब नहीं है।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब मक्का में दाख़िल हुए और अबू सुफ़ियान वग़ैरह ने मिलकर बातचीत की तो उन्होंने एक न सुनी और कहने लगे कि तुम अगर चाहते हो कि अकेले बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लो तो कर लो, वरना हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके दूसरे साथियों को हरगिज़ मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, यह तो मैं हरगिज़ नहीं कर सकता कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बग़ैर तवाफ़ और उमरा को अदा कर लूं। क़ुरैश ने हज़रत उस्मान रज़ि० का यह इसरार देखा तो उनको वापस जाने से रोक लिया।

बैअते रिज़वान

यह ख़बर मुसलमानों तक इस तरह पहुंची कि उस्मान रज़ि० क़त्ल कर दिए गए। मुसलमानों के लिए यह ख़बर एक बहुत बड़ा सानहा था जिससे हर आदमी बेचैन और बेक़ाबू हुआ जा रहा था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसी वक़्त एक पेड़ के नीचे बैठकर मुसलमानों से इस बात पर बैअ़त ली कि मर जाएंगे, मगर हममें से कोई एक भी फ़रार का रास्ता नहीं आख़्तियार करेगा। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) जब सब मुसलमानों से बैअ़त ले चुके, तो उनमें हैरत में डालने वाला ज़बरदस्त जोश व ख़रोश पैदा हो गया, जिसकी ख़बर धीरे-धीरे मक्का भी पहुंच गई। मक्का के मुश्रिक बहुत घबराए और ख़ौफ़ खाकर मुसलमानों तक यह ख़बर पहुंचाई कि उस्मान रज़ि० के क़त्ल की ख़बर ग़लत है और हज़रत उस्मान रज़ि० सही व सलामत हुदैबिया वापस तशरीफ़ ले आए।

चूंकि जिहाद की यह बैअत बहुत ही अहम और नाज़ुक मौक़े पर ली गई थी और मुसलमानों ने पूरे वलवले और जोश के साथ यह बैअ़त की थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की इस फ़िदाकारी की क़द्र फ़रमाई और सूरः फ़त्ह में रिज़ा और ख़ुश्नूदी कर परवाना देकर उनके इस कारनामे को हमेशा के लिए ज़िंदा बना दिया और इसी हक़ीक़त के पेशेनज़र इस्लामी

Copyright OfflineDeeniApp

तारीख़ में उसका नाम 'बैअते रिज़वान' क़रार पाया—

तर्जुमा—बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जबकि वह तेरे हाथ पर उस पेड़ के नीचे बैअ़त करने लगे और जान लिया अल्लाह ने जो उनके जी में था, पस उतारा उन पर इत्मीनान व सुकून और इनाम में दिया उनको एक क़रीबी फ़त्ह।' (18 : 48)

मुसलमानों के फ़िदाकाराना जोश और वालिहाना जज़्बे ने मक्का के मुश्रिकों पर ऐसा असर किया कि अब वे ख़ुद सुलह पर तैयार हो गए और आगे बढ़कर सुहैल बिन उमर को सफ़ीर बनाकर भेजा कि वह नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से सुलह की शर्तें तै करें, ताकि यह झगड़ा ख़त्म हो जाए, मगर यह शर्त हर हाल में रहेगी कि मुसलमान इस साल नहीं बल्कि अगले साल उमरा करेंगे।

समझौता

सुहैल बिन उम्र जब मुसलमानों के कैम्प में पहुंचा तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुलह के ख़्याल से पसंदीदगी की नज़र से देखा और लम्बी बात-चीत के बाद नीचे की धाराओं पर दोनों तरफ़ से समझौते कि तस्दीक़ व तौसीक़ अ़मल में आई।

1. इस साल मुसलमान मक्का में दाख़िल हुए बग़ैर ही वापस चले जाएं।

2. अगले साल मक्का में उमरे की ग़रज़ से इस तरह दाख़िल होंगे कि मामूली हिफ़ाज़ती हथियारों के अलावा कोई जंगी हथियार नहीं होगा और तलवारें नियाम के अन्दर ही रहेंगी और सिर्फ़ तीन दिन क़ियाम करेंगे और जब तक वे रहेंगे हम मक्का छोड़कर पहाड़ों पर चले जाएंगे।

3. समझौते की मुद्दत के अन्दर दोनों तरफ़ अम्न व आफ़ियत के साथ आने-जाने का सिलसिला जारी रहेगा।

4. अगर कोई आदमी मक्का से अपने वली की इजाज़त के बग़ैर मुसलमान होकर भी मदीना चला जाएगा तो उसको वापस करना होगा और अगर मदीना से कोई मक्का भाग आएगा तो हम उसे वापस नहीं करेंगे।

5. तमाम क़बीले आज़ाद हैं कि दो फ़रीक़ में से जो जिसका दोस्त बनना

Copyright OfflineDeeniApp

पसन्द करे, उसका दोस्त (हलीफ़) बन जाए।

6. यह समझौता दस साल तक क़ायम रहेगा और कोई फ़रीक़ इस मुद्दत के अन्दर इसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करेगा।

समझौता लिखते वक्त मुबारक नाम के साथ 'रसूलुल्लाह' लिखने पर सुहैल ने एतराज़ किया था।

आपने फ़रमाया कि 'है तो यह वाक़िया और ऐसी हक़ीक़त जिससे इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन हमको चूंकि सुलह चाहिए है, इसलिए तुम अगर यह पसन्द नहीं करते, तो मुझको इसरार नहीं और यह फ़रमा कर आपने समझौता लिखने वाले हज़रत अ़ली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह इस जुम्ले को मिटा दें। हज़रत अ़ली से यह कब मुम्किन था कि वह अपने हाथ से इस जुम्ले को मिटाएं, जिससे के ताल्लुक़ ने सारी कायनात में इंक़िलाब पैदा करके अंधेरे को रोशनी से, शिर्क को ईमान से और जह्ल को इल्म (अज्ञानता को ज्ञान) से बदल डाला। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब यह महसूस किया तो लिखे की जगह को मालूम करके अपने मुबारक हाथों से जुम्ले को मह्व कर दिया। (मिटा दिया)

समझौता जब मुकम्मल हो गया तो मुसलमानों ने यह महसूस किया कि इसमें हमारा पहलू कमज़ोर रहा और सूरतेहाल यह हो गई कि गोया हमने दब कर सुलह की है, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० से ज़ब्त न हो सका और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और इस्लाम की सरबुलन्दी के जज़्बे ने मजबूर किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस मे अर्ज़ करें, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या यह हुदैबिया का वाक़िया 'फ़त्ह' है?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हां, ख़ुदा की क़सम! बेशक यह 'फ़त्ह' है। (फ़त्हुलबारी)

यह वाक़िया जो समझौते की धाराओं के एतबार से मुसलमानों के हक़ में देखने में हार और ज़िल्लत की वजह नज़र आता था 'खुली फ़त्ह' कैसे था, तो इसका जवाब बुज़ुर्ग हदीस के माहिरों की ज़ुबानी सुनिए। हदीस व सीरत

Copyright OfflineDeeniApp

के इमाम जुहरी रह० फ़रमाते हैं–

'इस्लाम में जो शानदार फ़त्हें गिनी गई हैं, उनमें सबसे पहली 'बड़ी फ़त्ह' हुदैबिया की सुलह है, इसलिए कि इससे पहले बराबर कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों से जंग व पैकार का सिलसिला जारी था और जब यह 'सुलह' अ़मल में आ गई, तो इसकी वजह से हर दो फ़रीक़ को अम्न व इत्मीनान के साथ एक दूसरे से मिलने और बातें करने का मौक़ा मयस्सर आया और ख़्यालों के तबादले की आज़ादी नसीब हुई। नतीजा यह निकला कि जो आदमी भी इस्लाम को अपनी सही अ़क़्ल से जांचता और उसकी हक़ीक़त पर ग़ौर करता, उसके लिए इसके अलावा कोई चारा बाक़ी न रहता था कि वह तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर ले। चुनांचे इन दो सालों में (जब तक समझौते पर अ़मल रहा और मुश्रिकों ने अपनी तरफ़ से उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की) लोग इतने ज़्यादा मुसलमान हुए कि इससे पहले की पूरी मुद्दत में उतने ही या उससे कम मुसलमान हुए थे। (फ़त्हुलबारी)

और हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी इर्शाद फ़रमाते हैं–

'इस जगह 'फ़त्हे मुबीन' से मुराद हुदैबिया का वाक़िया है। हुदैबिया के समझौते ने हक़ीक़त में 'फ़त्हे मुबीन' 'फत्ह मक्का' के लिए रास्ता खोल दिया,, यह इसलिए कि जब लड़ाई का ख़तरा बीच में जाता रहा और अम्न और इत्मीनान की शक्ल पैदा हुई तो मक्का और मदीना के दर्मियान आने-जाने का सिलसिला बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के होने लगा और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ि० जैसे बहादुर और सूझ-बूझ वाले लोगों का इस्लाम क़ुबूल करना इसी सुलह का कारनामा है और तरक़्क़ी की यही वज्हें धीरे-धीरे 'मक्का की जीत' की वजह बनी। (फ़त्हुलबारी)

और इब्ने हिशाम और इमाम ज़ुहरी तौजीह की ताईद करते हुए लिखते हैं–

'ज़ुहरी के क़ौल के मुताबिक ताईद इस हक़ीक़ते हाल से अच्छी तरह हो जाती है कि हुदैबिया के वाक़िए में जब नबी अकरम ﷺ निकले हैं तो चौदह सौ मुसलमान साथ थे और दो साल बाद जब मक्का जीतने के लिए निकले हैं, तो दस हज़ार की तायदाद थी। (फ़त्हुलबारी)

Copyright OfflineDeeniApp

अल-फ़त्हुल आज़म (महान विजय)

रमज़ानुल मुबारक 08 हिजरी मुताबिक़ जनवरी 630 ई० में 'फ़त्हे मक्का' (मक्का विजय) का शानदार वाक़िया पेश आया।

इस वाक़िए की तारीख़ी हैसियत यह है कि हुदैबिया के समझौते में यह तै पा गया था कि अरब के क़बीले इसके लिए आज़ाद होंगे कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और क़ुरैश में से जिसके भी हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, बन जाएं। जब समझौते पर दोनों तरफ़ से दस्तख़त हो गए तो फ़ौरन अरब के क़बीला ख़ुज़ाआ ने एलान किया कि हम मुसलमानों के हलीफ़ होना पसन्द करते हैं और क़बीला बनूबक्र ने कहा कि हम क़ुरैश के हलीफ़ बनना चाहते हैं और दोनों क़बीले इस तरह अलग-अलग दो जमाअ़तों के हलीफ़ हो गए।

लगभग डेढ़ साल तो समझौते पर हर दो तरफ़ से पूरी तरह अ़मल होता रहा, लेकिन डेढ़ साल बाद एक नया वाक़िया पेश आया। वह यह कि बनी ख़ुज़ाआ और बनूबक्र के दर्मियान अर्से से लड़ाई-झगड़े का सिलसिला जारी रह चुका था, जो इस दर्मियानी मुद्दत में अगरचे बन्द रहा, मगर अचानक किसी बात पर फिर लड़ाई छिड़ गई और बनू-बक्र एक रात को ज़नीरा नामी जगह में बनू ख़ुज़ाआ पर जा चढ़े। क़ुरैश को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने आपस में मश्विरा किया और कहने लगे, रात का वक़्त है और मुसलमान यहां से बहुत दूर हैं, आज मौक़ा है कि बनी ख़ुज़ाआ को पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के हलीफ़ होने का मज़ा चखाया जाए। चुनांचे उन्होंने भी बनी-बक्र का साथ देते हुए बनी ख़ुज़ाआ को तहे तेग़ करना शुरू कर दिया।

अम्र बिन सालिम ने जब यह हाल देखा तो एक वफ़्द लेकर दरबारे क़ुदसी में इस्तिग़ासा किया और बनी ख़ुज़ाआ की दर्दनाक हालत को पेश करते हुए मदद का तालिब हुआ। नबी अकरम सल्लल्लाहु व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया– ख़ुदा की क़सम मैं जिस चीज़ को अपनी ज़ात से रोकूंगा, तुमको भी उससे ज़रूर महफ़ूज़ रखूंगा।'

इधर क़ुरैश को यह इल्म हुआ तो वे दौड़े, अपनी बेजा हरकत पर शर्मिंदा

Copyright OfflineDeeniApp

हुए और उन्होंने अबू सुफ़ियान को इस बात पर लगाया कि वह मदीना जाए और मुसलमानों के भड़कने को दूर करने की यह तदबीर करे कि क़ुरैश चाहते हैं कि पिछले समझौते की मुद्दत में और इज़ाफ़ा हो जाए और नए सिरे से समझोते की तौसीक़ हो जाए।

अबू सुफ़ियान मदीना पहुंच कर सबसे पहले अपनी बेटी उम्मे हबीबा रज़ि० के घर में दाख़िल हुए, जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवन-साथी थीं, अबू सुफ़ियान ने ज्यों ही इरादा किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बिछे हुए बिस्तर पर बैठ जाए, उम्मे हबीबा रज़ि० ने फ़ौरन उसको समेट दिया और कहने लगीं, 'बाप! यह अल्लाह के नबी का बिछौना है।'

अबू सुफ़ियान ने कहा कि 'फिर क्या हुआ, मैं तेरा बाप हूं।'

उम्मे हबीबा ने कहा, यह सही है, मगर तू मुश्रिक है और ख़ुदा के पैग़म्बर का पाक बिस्तर।

अब सुफ़ियान अगरचे वहां से उस वक़्त बड़बड़ाता हुआ चला गया, मगर हैरत में डाल देने वाले इस वाक़िए ने उसकी आंखें खोल दीं और वह समझा कि हक़ीक़ते हाल क्या है?

ग़रज़ वह दरबारे अक़्दस में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़-मारूज़ करने लगा। आपने मालूम किया, यह तज्दीद व तौसीक़ की क्या ज़रूरत है? क्या कोई नया वाक़िया पेश आ गया है? अबू सुफ़ियान ने अ़र्ज़ किया, नहीं, कोई नई बात नहीं है।

तब आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम मुतमइन रहो कि हम अपने अह्द पर क़ायम हैं।

अबू सुफ़ियान इस जवाब को सुनकर मुतमइन न हुआ। इसलिए कि वह हक़ीक़ते हाल को छिपाकर झूठ बोल चुका था और चाहता था कि इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को धोखा देकर अपना मक़्सद पूरा कर ले। लेकिन इसी साफ़ और सच्चे जवाब ने ओस डाल दी और उसका मक़्सद पूरा न हो सका, तब उसने सिद्दीक़े अकबर रज़ि०, फ़ारूक़े आज़म

Copyright OfflineDeeniApp

रज़ि० अ़ली हैदर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अलग-अलग बातें कीं और चाहा कि मामला क़ुरैश की ख़्वाहिश के मुताबिक़ तै हो जाए, लेकिन उसकी मुराद पूरी न हो सकी और बिना किसी कामियाबी के नाकाम व नामुराद मक्का वापस गया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिद्दीक़े अकबर रज़ि० को सूरतेहाल की ख़बर दी। हज़रत सिद्दीक़े अकबर अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हमारे और क़ुरैश के दर्मियान तो समझौता है?' आप ने इर्शाद फ़रमाया, 'मगर क़ुरैश ने ख़ुद अह्द तोड़ा है।'

अब जिहाद की तैयारी शुरू हुई मगर आमतौर से किसी को मालूम न हो सका कि किस तरफ़ का इरादा है। आपने मदीना के आसपास आम ऐलान कर दिया कि जो आदमी भी अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता है, वह रमज़ान तक मदीना पहुंच जाए। आप पूरी कोशिश फ़रमा रहे थे कि किसी तरह हमारी तैयारी का हाल क़ुरैश को न मालूम हो पाए, क्योंकि आपकी दिली ख़्वाहिश यह थी कि मक्के में लड़ाई न छिड़ने पाए और क़ुरैश रौब खाकर हार मान लें कि इसी बीच एक हादसा पेश आ गया।

हातिब बिन अबी बलतआ़ का वाक़िया

हातिब बिन अबी बलतआ़ एक बद्री सहाबी थे, उनके बाल-बच्चे मक्का ही में थे कि यह सूरतेहाल पेश आ गई। उन्होंने यह ख़्याल करते हुए कि इस वाक़िए का हाल बहरहाल मुश्रिकों को मालूम हो ही जाएगा, सो अगर मैं भी मक्का के क़ुरैश को इसकी इत्तिला कर दूं तो हमारा (मुसलमानों का) कोई नुक़सान भी नहीं होगा और मैं उनकी हमदर्दी हासिल करके अपने घर वालों को उनके ख़तरों से भी महफ़ूज़ रख सकूंगा। मक्का के मुश्रिकों के नाम एक ख़त लिख दिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह की वह्य के ज़रिए यह मालूम हो गया और आपने हज़रत अ़ली रज़ि०, मिक़्दाद रज़ि० और ज़ुबैर रज़ि० को इस पर लगाया कि रौज़ा ख़ाख़ जाओ, वहां ऊंट पर सवार औरत मिलेगी वह जासूस है। उसके पास एक ख़त है, वह उससे

Copyright OfflineDeeniApp

छीन लो। ये लोग रोज़ा ख़ख़ पहुंचे तो औरत को मौजूद पाया, उन्होंने ख़त की मांग की, औरत ने इन्कार किया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं है, मगर जब उन्होंने जामा तलाशी की धमकी दी तो मजबूर होकर उसने सर के बालों में से एक पर्चा निकाल कर दिया।

यह पर्चा जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो वह हज़रत हातिब का ख़त था। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनकी जानिब मुख़ातब होकर इर्शाद फ़रमाया, हातिब! यह क्या? हातिब ने अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल! जल्दी न फ़रमाएं, यह ख़त मैंने इसलिए लिखा कि मैं जानता हूं कि मदीने में मुक़ीम सब मुहाजिरों का मक्का के क़ुरैशियों के साथ किसी न किसी क़िस्म का रिश्ता और ताल्लुक़ है। एक मैं ही ऐसा हूं जिसका उनके साथ कोई रिश्ता नहीं है तो मैंने यह सिर्फ़ इस यक़ीन पर किया है कि मुसलमानों को तो इस बात से कोई नुक़सान नहीं होगा और मैं इस तरह क़ुरैश की हमदर्दी हासिल करके अपने बाल-बच्चों को महफ़ूज़ कर सकूंगा। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ख़ुदा की क़सम मैंने हरगिज़ यह काम इर्तिदाद और कुफ़्र की नीयत से नहीं किया, मैं अब भी इस्लाम का शैदाई और फ़िदाई हूं।'

नबी अकरम ﷺ ने यह सुनकर इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब ने तुम्हारे सामने सच-सच बात कह दी।'

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अ़ल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझको इजाज़त दीजिए कि मैं मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं।

नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'हातिब बद्र के मुजाहिद हैं और अल्लाह ने बद्र में शरीक होने वालों के लिए यह इर्शाद फ़रमाया है कि, 'अमिलू माशेतुम फ़क़द ग़फ़रतु लकुम' हातिब के वाक़िए पर ही क़ुरआन की यह आयत उतरी—

तर्जुमा—*ऐ ईमान वालो! न पकड़ो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त, उनको पैग़ाम भेजते हो दोस्ती से और वे इंकारी हुए हैं उससे जो तुमको आया सच्चा दीन, निकालते हैं रसूल को और तुमको इस पर कि तुम मानो अल्लाह अपने रब को, अगर तुम निकले हो लड़ाई को मेरी राह में और चाह कर मेरी*

Copyright OfflineDeeniApp

रज़ामंदी, तुम उनको छिपे पैग़ाम भेजते हो दोस्ती के और मुझको ख़ूब मालूम है जो छुपाया तुमने और जो खोला तुमने और जो कोई तुम में यह काम करे वह भूला सीधी राह।' (60 : 1)

बहरहाल रमज़ान की शुरुआती तारीख़ें थीं कि ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दस हज़ार जाँनिसारों के साथ मक्का की तरफ़ चले। आप जब क़दीद और अस्फ़ान के दर्मियान क़दीद तक पहुंचे तो देखा कि मुसलमानों पर रोज़े की सख़्ती हद से आगे बढ़ रही है, तब आपने पानी तलब फ़रमाया और मज्मे के सामने पिया (बुख़ारी), ताकि सहाबा देख लें और समझ लें कि सफ़र और फिर जिहाद के मौक़े पर इफ़्तार की इजाज़त है और क़ुरआन की दी हुई रुख़्सत का यही मतलब है।

इसी सफ़र में ज़ाते अक़्दस ﷺ के चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ि० मुसलमान होकर ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने हुक्म दिया कि बाल-बच्चों को मदीना भेज दो और तुम हमारे साथ रहो।

इस्लामी लश्कर जब मक्का के क़रीब पहुंचा तो अबू सुफ़ियान छुपकर लश्कर का सही अन्दाज़ा कर रहे थे कि अचानक मुसलमानों ने गिरफ़्तार करके ख़िदमते अक़सदस में पेश किया। आपने अबू सुफ़ियान पर करम की निगाह डालते हुए माफ़ कर दिया और क़ैद से आज़ाद कर दिया। अबू सुफ़ियान 'दुनियाओं के लिए रहमत' सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह बर्ताव देखा तो फ़ौरन इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसी तरह अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमैया भी इस्लाम के शैदाई बनकर ख़िदमत में हाज़िर हुए और इर्शाद फ़रमाया—

'तुम पर आज कोई इलज़ाम नहीं। अल्लाह तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।' (6 : 92)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ब्बास रज़ि० से फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान को अभी मक्का वापस न जाने दो और सामने की पहाड़ी पर ले जाओ, ताकि वह मुसलमानों की ताक़त व शौकत का अन्दाज़ा कर सके।

अबू सुफ़ियान और हज़रत अ़ब्बास पहाड़ी पर खड़े हुए इस्लामी लश्कर का नज़ारा कर रहे थे और मुहाजिरीन और अंसार क़बीलों के जुदा-जुदा लश्कर

Copyright OfflineDeeniApp

अपने परचम लहराते हुए सामने से गुज़र रहे थे और अबू सुफ़ियान उनको देख-देख कर मुतास्सिर हो रहे थे कि अंसारी क़बीले का एक लश्कर पास से गुज़रा। उस लश्कर का झंडा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के हाथ में था। उन्होंने अबू सुफ़ियान को देखा तो जोश में आकर कहने लंगे—

आज का दिन जंग का दिन है, आज काबा में जंग हलाल है। अबू सुफियान की नस्ली अस्बियत फड़क उठी और कहने लगा 'ऐ अ़ब्बास! लड़ाई का दिन मुबारक हो।

जब सब लश्कर इसी तरह गुज़र गए तो आख़िर में एक छोटी-सी जमाअ़त के साथ सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सामने से गुज़रे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के हाथ में झंडा था और आगे-आगे चल रहे थे। अबू सुफ़ियान की निगाह जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर पड़ी तो उसने ख़िदमते अक़्दस में साद और अपने दर्मियान की बात-चीत का हाल सुनाया, यह सुन कर ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'साद ने झूठ कहा (आज का दिन वह दिन है कि अल्लाह तआ़ला उसमें काबा की अ़ज़्मत को बुलन्द करेगा और काबे पर ग़िलाफ़ चढ़ाया जाएगा।)' और यह फ़रमा कर हज़रत साद को बरतरफ़ करके झंडे और फ़ौज की सरबराही हज़रत साद के बेटे को अ़ता कर दी।

अब नबी अकरम ﷺ ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को हुक्म फ़रमाया कि तुम मक्का के निचले हिस्से की तरफ़ से दाख़िल होना और किसी को क़त्ल न करना, हां अगर कोई ख़ुद आगे बढ़े तो बचाव की इजाज़त है और ख़ुद मक्का के बुलन्द हिस्से से दाख़िल हुए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कुछ क़बीले के लोग टकराए, इसलिए उनके हाथों कुछ क़त्ल हो गए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बिना किसी रुकावट के मक्का में दाख़िल हुए। (बुख़ारी)

जब मुर्रज़्ज़हरान में हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने अबू सुफ़ियान को इस्लाम क़ुबूल करने के लिए ख़िदमते अक़्दस में पेश किया था, तो यह भी अ़र्ज़ किया था, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! अबू सुफ़ियान में फ़ख़्र का माद्दा है, इसलिए

Copyright OfflineDeeniApp

इसको अगर कोई इम्तियाज़ी हैसियत नसीब हो जाए तो बेहतर हो।

आपने इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी अबू सुफ़ियान के मकान में दाख़िल हो जाएगा, उसको अमान है।

ग़रज़ जब आप इज़्ज़त व इजलाल के साथ मक्का में दाख़िल हुए तो उस वक़्त यह एलान करा दिया–

1. जो मकान बन्द करके बैठ जाए, उसको अम्न है,
2. जो अबू सुफ़ियान के मकान में पनाह ले, उसको अमान है,
3. जो मस्जिदे हराम में पनाह ले, उसको अमान है।

अलबत्ता इस आम अमान और ज़बरदस्त माफ़ी के रवैए से कुछ ऐसी हस्तियों को अलग कर दिया जिन्होंने इस्लाम के ख़िलाफ़ बड़ा ज़हर फैलाया था और मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था, मगर उनमें से अक्सर उस वक़्त छुप गए या फ़रार हो गए और धीरे-धीरे आम माफ़ी का फ़यदा उठा कर मुसलमान हो गए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि आपका झंडा सफ़ेद रंग का था और उसमें बना उक़ाब काले रंग का था। सर पर मग़्फ़र ओढ़े और उस पर स्याह अ़मामा बांधे हुए थे और सूरः 'इन्ना फ़तहना' पढ़ते हुए आयतों को ऊंची आवाज़ से दोहराते जाते थे और तवाज़ो का यह आ़लम था कि अल्लाह के दरबार में खुशूअ़-खुज़ूअ़ के साथ ऊंटनी पर इस दर्जा झुके हुए थे कि मुबारक चेहरा ऊंटनी की पीठ को मस कर रहा था।

बुत-शिकनी

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए तो सबसे पहले आपने हुक्म फ़रमाया कि काबे से तमाम बुत निकाल कर फेंक दिए जाएं और दीवारों पर जो तस्वीरें नक़्श हैं, वे मिटा दी जाएं। चुनाचे जब तीन सौ साठ बुतों के टूटने का वक़्त आया तो दो मूर्तियां हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ﷺ की इस हालत में सामने आईं कि उनके हाथों में बांसो के तीर थे। आपने देखकर फ़रमाया ख़ुदा उन मुश्रिकों को मारे, ये ख़ूब

Copyright OfflineDeeniApp

जानते थे कि ये दोनों मुक़द्दस हस्तियां उस नापाक बात से मुक़द्दस और पाक थीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने काबे का तवाफ़ किया और फिर बुतों के सामने खड़े होकर लकड़ी से उनको चरका देते जाते और पढ़ते जाते थे, 'हक़ आ पहुंचा और बातिल उड़ गया और बातिल न किसी चीज़ को पैदा करे और न फेरकर लाए (यानी बातिल तो ख़ुद फ़ना होने के लिए है)

रहमतुल्लिल आ़लमीन की शान

काबा जब बुतों की नजासत और नापाकी से पाक कर दिया गया, तो नबी अकरम ﷺ काबे में दाख़िल हुए और उसके कोनों में घूमते हुए ऊंची आवाज़ से तक्बीरें कहते रहे और नमाज़ नफ़्ल अदा की, बाहर तशरीफ़ लाए तो इब्राहीमी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ अदा की। जब आप और सहाबा वुज़ू फ़रमा रहे थे तो मुश्रिक दांतों तले उंगली दबाए हैरान खड़े थे कि इस कामियाबी और कामरानी के बावजूद न फ़त्ह की कामरानी का जुनून है, न किब्र व नख़वत का इज़्हार, बल्कि दरबारे इलाही में बन्दगी के इज़्हार के लिए हर एक मुजाहिद बेताब नज़र आता है। बेशक यह 'बादशाही' नहीं है, बल्कि दूसरी ही कोई दुनिया है। (तारीख़े इब्ने कसीर 3-256)

आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अ़ली रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप हमारे लिए दो ख़िदमतें 'हिजाबा और सक़ाया' जमा फ़रमा दीजिए और काबा की कुंजी हमारे हवाले कर दीजिए, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ि० के कई बार अ़र्ज़ करने का कोई जवाब न दिया और बार-बार यही फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? जब उस्मान हाज़िर हुए तो आपने काबा की कुंजी उनके हवाले करते हुए इर्शाद फ़रमाया, लो यह अपनी कुंजी आज का दिन भलाई और अह्द के वफ़ा का दिन है।'

नोट : यह वही उस्मान बिन तलहा हैं जिन्होंने, काबा की कुंजी तलब करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं दी थी, लेकिन

Copyright OfflineDeeniApp

रहमतुल्लिल आ़लमीन के दरबार में बदला लेना बे-हक़ीक़त चीज़ थी, इसलिए आपने उन्हीं के ख़ानदान में यह सआ़दत बाक़ी रहने दी। यही ख़ानदान आज तक काबे का मुजाविर और शेबी के लक़ब से मशहूर है, क्योंकि हज़रत उस्मान बिन तलहा रज़ि० बनू शेबा में से थे।

अब लोग इन्तिज़ार में थे कि देखिए जिन मुश्रिकों ने वर्षों तक आपको और मुसलमानों को हर क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचाई, मुसीबतों में डाला, आज उनके साथ क्या मामला होता है?

आपने तमाम क़ुरैशी क़ैदियों को हाज़िर होने का हुक्म दिया, जब सब ख़िदमते अक़्दस में पेश हुए तो आपने मालूम किया, 'ऐ क़ुरैशी गिरोह! तुम्हारा क्या ख़्याल है कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आऊं? उन्होंने जवाब दिया, हम आपसे ख़ैर की उम्मीद रखते हैं।'

आपने यह सुनकर इर्शाद फ़रमाया, 'जाओ तुम सब आज़ाद हो।'

यह सुनना था कि न सिर्फ़ क़ुरैश बल्कि हर सोचने-समझने वाले के सामने यह हक़ीक़त रोशन हो गई कि बादशाह और पैग़म्बर की ज़िंदगी का इम्तियाज़ी निशान क्या है? पैग़म्बराना ज़िंदगी न ज़ाती अदावत व कदूरत को कोई वक़अत देती है और न उसका ग़ैज़ व ग़ज़ब नफ़्सानी ख़्वाहिश के ताबे होता है। एक नबी को अगर सब्र आज़मा हद तक तक्लीफ़ दी जाए और फिर तक्लीफ़ देने वाला आदमी रहम की तलब करे तो वह बेशक 'माफ़ी और करम' ही पाएगा और अच्छे अख़्लाक़ के हर पहलू का मुज़ाहरा देखेगा, चुनांचे इस दर्मियान में जब एक आदमी लरज़ता, कांपता आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मिठास भरे लेहजे में इर्शाद फ़रमाया, घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं मैं तो सूखा गोश्त खाने वाली एक क़ुरैशी औरत ही का बेटा हूं। इसी रहम व माफ़ी का यह नतीजा निकला कि क़ुरैश के सरदार गिरोह दर गिरोह ख़िदमत में हाज़िर होते और इस्लाम की दौलत से मालामाल होकर सआ़दत हासिल कर लेते थे। चुनांचे हज़रत मुआ़विया रज़ि० और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के वालिद अबू क़हाफ़ा जैसे लोग उसी दिन मुसलमान हुए।

Copyright OfflineDeeniApp

ख़ुत्बा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर एक अहम ख़ुत्बा भी दिया जो इस्लाम के बहुत से हुक्मों की बुनियाद है। इस ख़ुत्बे के कुछ अहम एलान ये हैं–

1. मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते।

2. मामलों और फ़ैसलों में मुद्दई के ज़िम्मे गवाहों का पेश करना और गवाहों के न होने पर मुद्दआ़ अ़लैह के ज़िम्मे हलफ़ उठाना है।

3. किसी औरत को तीन दिन का सफ़र बग़ैर महरम के दुरुस्त नहीं है।

4. सुबह और अस्र के बाद कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं है और ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के दिन रोज़ा जायज़ नहीं है।

5. ऐ क़ुरैश के गिरोह! बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुमसे जाहिलियत पर और बाप-दादा के नाम व नसब पर फ़ख्र करने का ख़ात्मा कर दिया है। होशियार रहो कि तमाम इंसानी दुनिया आदम से है और आदमकी तख़्लीक़ मिट्टी से की गई है–

तर्जुमा– *'ऐ आदमियो! हमने तुमको बनाया एक नर और मादा से और रखी तुम्हारी ज़ातें, और गोतें ताकि आपस की पहचान हो, मुक़र्रर इ़ज़्ज़त अल्लाह के यहां उसी की बड़ी जिसका अदब बड़ा। अल्लाह सब जानता है ख़बरदार।* (49 : 13)

फ़त्हे मक्का और क़ुरआन

सूरः 'फ़त्ह', 'हदीद' 'नस्र' इन तीनों सूरतों में अल्लाह तआ़ला ने मक्का के फ़त्ह के बारे में इर्शाद फ़रमाए हैं, जैसे सूरः फ़त्ह में है–

तर्जुमा– *'तुममें बराबर नहीं हैं वे कि जिसने ख़र्च किया फ़त्हे मक्का के पहले और जिहाद किया। इन लोगों का दर्जा बड़ा है उनसे जो कि ख़र्च करें फ़त्हे मक्का के बाद और जिहाद करें और सबसे वायदा किया है अल्लाह ने ख़ूबी का।* (57 : 10)

और सूरः नस्र में है–

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– 'जब आ जाए अल्लाह की मदद और फ़त्हे मक्का और तुम देखो लोगों को कि वे अल्लाह के दीन में फ़ौज-फ़ौज करके दाखिल होने लगें।'

(110 : 1-2)

यहां पूरी उम्मत एक राय है कि 'फ़त्ह' से मुराद फ़त्हे-मक्का है। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० इमाम शाबी रह० से नक़ल फ़रमाते हैं–

'इन्ना फ़तहना ल-क फ़त्हम मुबीना' में 'फ़त्हे मुबीन' हुदैबिया-समझौता की तरफ़ इशारा है और 'फ़-ज-अ-ल मिन दूनि ज़ालि क-फ़त्हन क़रीबा' में 'फ़त्हे क़रीब' में से भी हुदैबिया समझौते के ही फल और नतीजे मुराद हैं और सूरः नस्र की आयत 'इज़ा जा-अ नस-रुल्लाहि वल-फ़त्हु' में नस्र व फ़त्ह से सबके नज़दीक 'फ़त्हे मक्का' मुराद है और इस नक़ल के बाद लिखते हैं–

'इन आयतों के मफ़हूम व मुराद में हुदैबिया-समझौता और मक्का जीत से मुताल्लिक़ जो अलग-अलग क़ौल पाए जाते हैं और मुश्किल पैदा करने की वजह बनते हैं, शाबी की इस तक़रीर से तमाम क़ौलों में मेल भी हो जाता है और इश्काल भी दूर हो जाता है।

सूरः फ़त्ह, नस्र और हदीद की ऊपर की आयतों में मुराद 'मक्का की फ़त्ह', है या हुदैबिया की सुलह इस बारे में अलग-अलग क़ौल और रिवायतें हैं और इमाम शाबी की तौजीह और उस पर हाफ़िज़े हदीस इब्ने हजर की ताईद व तस्दीक़ के पढ़ने के बाद भी हम यह कहने की जुर्रात कर सकते हैं कि सूरः फ़त्ह में 'फ़त्हे मुबीन', 'नसरुन अज़ीज़' और 'फ़त्हुनक़रीब' का ज़िक्र और फिर सूरः हदीद में अल्लाह के रास्ते के जिहाद और ख़र्च को अल-फ़त्ह के पहले और बाद के साथ दर्जों और फ़ज़ीलतों की तक़्सीम का तज़्किरा और फिर सूरः नस्र की एक आयत 'नसरुल्लाह वल फ़त्हु' में अन्नसरु वल फ़त्हु का इज्तिमाई ज़िक्र साफ़-साफ़ इस हक़ीक़त का एलान है कि इन जगहों पर ऐसे वाक़ियों का ज़िक्र है जिसकी शुरुआत जिहाद व क़िताल से होकर एक ऐसी फ़त्ह व नुसरत का नतीजा दे रही, जिसके वाद हिजाज़ की धरती हमेशा के लिए शिर्क व वुतपरस्ती से पाक हो जाए और ज़ाहिर है कि यह शरफ़ वेशक मक्का को ही हासिल है, अलवत्ता इसमें भी शुवहा नहीं कि सुलह हुदैविया के वक़्त सूरः अल-फ़त्ह का नाज़िल होना और 'इन्ना फ़तहना-ल-क-फ़तहम

Copyright OfflineDeeniApp

मुबीना' को बयान करने का अंदाज़ भी यह वाज़ेह करता है कि सुलह हुदैबिया चूंकि अपनी वज्हों और नतीजों और असरात (भावों के लिहाज़ से फ़त्हे मक्का का पेश-ख़ेमा और उसके लिए तम्हीद साबित हुई, इसलिए वह भी 'फ़त्ह मुबीन' (खुली जीत) कहलाने की हक़दार है, यानी वह वाक़िया 'फ़त्हे क़रीब', 'नस्र अज़ीज़' और 'अल-फत्ह', 'नस्र' की वजह हो वह यक़ीनन 'फ़त्हे मुबीन' कहलाने का हक़ रखता है।

हुनैन की लड़ाई

'फ़त्हे अ़ज़ीम' (भारी जीत) के बाद अरब के मुश्रिकों की शौकत और दबदबा का लगभग ख़ात्मा हो गया और अब अरब क़बीले गिरोह-दर-गिरोह इस्लाम में दाख़िल होने लगे, यह देखकर दो क़बीलों की जाहिलियत-हमीयत भड़क उठी और वे इस्लाम की तरक़्क़ी को बरदाश्त न कर सके—हवाज़िन और सक़ीफ़ इन दोनों क़बीलों के सरदारों की मीटिंग हुई और उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अपनी क़ौम (क़ुरैश) को मग़्लूब करके मुतमइन हो गए हैं, इसलिए अब हमारी बारी है। पस क्यों न हमीं पेशक़दमी करके मुसलमानों पर हमलावार हो जाएं और उनकी जड़ें उखाड़ दें। दोनों ने यह मंसूबा बांधा और मालिक बिन औफ़ नज़री को अपना बादशाह मान कर के हसद की आग को मुसलमानों के ख़ून से बुझानें की कोशिश की। मालिक ने बहुत से क़बीलों को अपने सांथ मिला कर जंग की तैयारी शुरू कर दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब यह मालूम हुआ तो सहाबा को जमा फ़रमाया और मश्वरों के बाद, बचाव के लिए तैयार होकर हुनैन को रवाना हो गए, उस वक़्त इस्लामी फ़ौज में बारह हज़ार जॉनिसार मौजूद थे। उनमें से दस हज़ार मुहाजिर व अंसार और मदनी जॉनिसार थे और दो हज़ार वे थे जो फ़त्हे मक्का के वक़्त मुसलमान हुए थे और अस्सी वे मुश्रिक (तुलक़ा) थे, जो इस्लाम न क़ुबूल करने के बावजूद रहमतुल-लिल-आलमीन के मुज़ाहरे देखकर ख़ुद अपनी ख़्वाहिश से मुसलमानों के जंग के साथी बन गए थे।

Copyright OfflineDeeniApp

10 शव्वाल, 8 हिजरी मुताबिक़ फ़रवरी 630 ई० के ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ इस्लामी मुजाहिदों की क़ौम हुनैन जा पहुंची, आपने दुश्मन के मुक़ाबले में जब इस्लामी फ़ौज को सफ़ बनाने का हुक्म दिया तो मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अ़ली रज़ि० को दिया और अंसार में से बनी ख़ज़रज का झंडा जनाब बिन मुंज़िर को बख़्शा और औस का उसैद बिन हुज़ैर को इनायत फ़रमाया और इसी तरह अलग-अलग क़बीलों के सरदारों को उनकी फ़ौज का झंडा थमा दिया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ुद भी हथियार सजे, दो ज़िरह (कब्ल) पहने, ख़ूद सर पर रखे अपने मशहूर ख़च्चर पर सवार इस्लामी फ़ौज की कमान कर रहे थे।

अभी लड़ाई ने मरने-मारने की सूरत नहीं देखी थी कि मुसलमानों के दिलों में अपनी फ़ौज की भारी तायदाद और उसकी फ़रावानी इस दर्जा असर कर गई कि कुछ मुसलमानों की ज़ुबान से 'इन्शाअल्लाह' कहे बग़ैर ही अपनी ताक़त के घमंड पर यह निकल गया कि आज हमारी ताक़त को कोई नहीं हरा सकता।

मुसलमान, एक अल्लाह का पुजारी, एक ख़ुदा पर भरोसा करने के बजाए अपनी तायदाद की ज़्यादती पर घमंड करे, यह उसकी भूल है इसलिए ख़ुदा को मुसलमानों का यह घमंड पसन्द न आया और इसलिए उन पर यह सबक़ का कोड़ा लगा कि जब लड़ाई शुरू हुई और मुसलमानों की फ़ौज ने पेशक़दमी की तो अचानक दुश्मन की इन टोलियों ने जो गोरिल्ला जंग लड़ने के लिए पहाड़ की अलग-अलग घाटियों में घात लगाए बैठी थीं, हर तरफ़ से इस्लामी फ़ौज पर बारिश की तरह तीर चलाना शुरू कर दिया।

इस्लामी फ़ौज को इस भारी तीर-वर्षा की उम्मीद न थी, इसलिए उनकी सफ़ें डगमगा गईं और थोड़ी ही देर में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और मशहूर मुहाजिर व अंसार सहाबा के अलावा तमाम बदवी क़बीलों और मदनी फ़ौज की अक्सरीयत ने भागने का रास्ता आख़्तियार किया।

नबी अकरम ﷺ इस हालत में भी यह रजज़ (जोश दिलाने वाले जुमले)

Copyright OfflineDeeniApp

पढ़ते और बहादुरी का मुज़ाहरा करते जाते थे–

अनन्नबीयु ला कज़िब अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब

(इसमें तनिक भी झूठ नहीं, मैं नबी हूं। मैं हूं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा)

ग़रज़ उसी वक़्त नबी अकरम ﷺ के इशारे पर हज़रत अ़ब्बास रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से भागते मुसलमानों को ललकारा, 'ऐ अंसार क़बीले के लोगो!' 'ऐ बैअ़ते रिज़वान के लोगो!'

हज़रत अ़ब्बास रज़ि० की हक़ की आवाज़ गूंजी ही थी कि एक-एक मुसलमान अपनी हालत पर अफ़सोस करता हुआ पलट पड़ा और मिनटों में तमाम जांनिसार नबी अकरम ﷺ के गिर्द जमा हो गए और बहादुरी से लड़ने लगे, नतीजा यह निकला कि हार जीत में तब्दील हो गई और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम ने हार को 'जीत' से बदल दिया।

मुश्रिकों की जमाअ़त में एक मशहूर राय देने वाले दरीद बिन समद नामी शख़्स था। उसने मालिक के इस तरीक़े की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त की थी कि मैदान में औरतों, बच्चों और माल व दौलत के ख़ज़ानों को साथ ले जाए, मगर मालिक ने उसकी राय पर अ़मल न किया और सबको साथ लाया था, चुंनाचे यह सब माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ लगा और मुश्रिकों की रही-सही ताक़त का भी ख़ात्मा हो गया।

बहुत से मुश्रिकों और उनके क़बीलों पर अगरचे इस्लाम की सच्चाई रोशन हो चुकी थी, मगर फिर भी वह अपने ख़्याल में माद्दी शौकत को सब कुछ समझते थे, चुनांचे मुसलमानों पर अल्लाह तआ़ला के इस फ़ज़्ल व करम को जब उन्होंने इस तरह देख लिया तो अब वे भी अपनी मर्ज़ी और चाव से इस्लाम की गोद में आ गए।

हुनैन की लड़ाई और क़ुरआन

हुनैन की लड़ाई में मुसलमानों का अपनी भारी तायदाद पर घमंड और उसके नतीजे में शुरू ही में हार और फिर अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़त्ह व नुसरत का हाल क़ुरआन ने सूरः तौबा में अपने ख़ास अंदाज़ के साथ इस तरह बयान किया है।

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– *'बेशक अल्लाह बहुत मैदानों में तुम्हारी मदद कर चुका है और हुनैन के दिन (भी) जब तुम अपनी बड़ी तायदाद पर इतरा गए थे तो देखो वह बड़ी तायदाद तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन अपने पूरे फैलाव के बावजूद तुम पर तंग हो गई और आख़िरकार ऐसा हुआ कि तुम मैदान को पीठ दिखाकर भागने लगे, फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी ओर में दिल से सुकून व क़रार नाज़िल फ़रमाया और ऐसी फ़ौज उतार दी, जो तुम्हें नज़र नहीं आई थी और उन लोगों को अ़ज़ाब दिया, जिन्होंने कुफ़्र की राह आख़्तियार की थी और जो कुफ़्र की राह अख़्तियार करते हैं, उनका बदला यही है। इसके बाद अल्लाह जिस पर चाहेगा, अपनी रहमत से लौट आएगा और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला रहमत वाला है।'*

(9 : 25-26-27)

तबूक की लड़ाई और तौबा के कुबूल होने का अजीब वाक़िया

तबूक शाम का एक मशहूर शहर है। सन् 9 हि० में सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह ख़बर मिली कि क़ैसरे रूम हिरक़्ल एक शानदार फ़ौज मुसलमानों पर चढ़ाई के लिए तैयार कर रहा है और कई लाख ज़ोरावर वालॅटियर अब तक भर्ती हो चुके थे।

यह कड़ी आज़माइश का वक़्त था। सैकड़ों मील की राह, हवा के गर्म झोंके और तपती हुई रेत से वास्ता, मगर इस्लाम के फ़िदाकार, दुनिया के ऐश और मौसम की मुसीबतों से बेपरवा और बे-ख़ौफ़ होकर परवानावार इस्लाम पर निसार होने के लिए मदीना में जमा हो रहे थे।

नबी अकरम ﷺ का यह दस्तूर था कि जब किसी लड़ाई का इरादा फ़रमाते तो आम तरीक़े से यह ज़ाहिर न होने देते कि कहां का क़स्द है, ताकि दुश्मन सही हालात न पा सके लेकिन तबूक की लड़ाई में चूंकि सख़्त मौसम था, हिजाज़ में अकाल, हालात की नासाज़गारी और दुश्मन की ज़बरदस्त ताक़त का मुक़ाबला करना था, इसलिए इस कड़ी आज़माइश में ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अरब के तमाम क़बीलों में असल हक़ीक़त का एलान करा दिया ताकि जो आदमी भी इस कांटे भरी वादी में क़दम रखे, सोच-समझ कर रखे।

Copyright OfflineDeeniApp

माली मदद

ऊपर लिखे नाज़ुक हालात के पेशेनज़र यह पहली लड़ाई है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुजाहिदों की माली मदद करने पर उभारा और बड़े-बड़े इस्लाम के जां-निसारों को अपनी माली फ़िदाकारी का सबूत देने के लिए मौक़ा दिया, चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने दस हज़ार दीनार सुर्ख़, तीन सौ ऊंट और पचास घोड़े पेश किए और ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके इस इख़्लास भरे जज़्बे पर यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! तू उस्मान रज़ि० से राज़ी हो, इसलिए कि मैं उससे राज़ी हूं।'

हज़रत उमर रज़ि० ने अपना आधा माल पेश कर दिया, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने सौ औक़िया और हज़रत आसिम बिन अदी ने साठ वसक़ खजूरें पेश कीं और हज़रत अ़ब्बास व हज़रत तलहा ने सारी दौलत पेश की और औरतों ने भी अपने हौसले से ज़्यादा ज़ेवर पेश किए, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपना कुल माल ही इस्लाम पर क़ुरबान कर दिया। सिद्दीक़े अकबर रज़ि० जब अपना माल ले कर ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मालूम किया, अबूबक्र! तुम अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़कर आए हो? अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, हां, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने घर में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का नाम छोड़ आया हूं।'

ग़रज़ शानदार तैयारियों के बाद जब मुसलमानों का भारी लश्कर अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने के लिए फ़िदाकाराना वलवले और जोश के साथ तबूक की तरफ़ बढ़ा, तो हिरक़्ल को भी जासूसों ने ख़बर कर दी। हिरक़्ल या तो भारी भरकम फ़ौज के साथ लड़ाई की तैयारियों में मश्ग़ूल था या यह ख़बर सुनते ही होश व हवास खो बैठा और 'रूमी' मुसलमानों के बेनज़ीर ईसार व फ़िदाकारी के जज़्बे से मुतास्सिर होकर और डर कर तबूक में मुसलमानों के पहुंचने से पहले ही बिखर गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रास्ते के कुछ ईसाई सरदारों को अम्न का परवाना देते और

Copyright OfflineDeeniApp

समझौता करते हुए कामियाबी के साथ वापस आ गए।

बहाने बनाए

जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो मुनाफ़िक़ों ने इस शानदार आज़माइश में शरीक न होने के झूठे बहाने खोज कर ख़िदमते अक़्दस में रखा और जाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस्लाम के जमाअ़ती निज़ाम की मस्लहतों के पेशे नज़र उनसे दर-गुज़र फ़रमाया।

मगर उज़्र करने वाले ग्रुपों में तीन इस्लाम के मुख़्लिस लोग भी थे और वे थे काब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मुरारा बिन रुबैअ जैसी हस्तियां थीं।

उन्होंने मुनाफ़िक़ों की तरह हाज़िर होकर झूठ से काम नहीं लिया और साफ़-साफ़ अर्ज़ कर दिया, ऐ दीन व दुनिया के बादशाह! मैं चाहता तो मुनाफ़िक़ों की तरह कोई झूठा उज़्र पेश करके आपकी पकड़ से बच जाता। लेकिन अगर किसी दुनियादार से ऐसा मामला पेश आता तो कर भी लेता, मगर ख़ुदा के नबी के साथ ऐसा नहीं कर सकता। सच बात यह है कि मैं सिर्फ़ अपनी काहिली की वजह से ज़िहाद से महरूम रहा। हर दिन यह ख़्याल करता रहा कि आज अपने बाग़ों के लुत्फ़ से और सैर हो लूं, कल ज़रूर रवाना हो जाऊंगा और इस्लाम की फ़ौज को एक दो मंज़िल ही पर जा पकड़ूंगा। आख़िरकार इस काहिली का नतीजा महरूमी की शक्ल में ज़ाहिर हुआ, अब जो हुक्म हो उसके लिए हाज़िर हूं। यही हिलाल और मुरारा ने कहा और इस तरह तीनों मुज्रिमों की तरह अल्लाह के रसूल ﷺ का हुक्म सुनने के लिए कान लगा लिए।

सोशल बाइकाट (Social Boycott)

ये तीनों इस्लाम के फ़िदाई, ख़ुलूस के पैकर और रसूल सल्ल० के आशिक़ थे, इसलिए इसका मामला मुनाफ़िक़ों जैसा नहीं था कि वे जमाअ़ती निज़ाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर गुज़रें और जिहाद जैसे मिल्लत के बहुत बड़े रुक्न को सिर्फ़ काहिली और सुस्ती पर क़ुरबान कर दें और फिर उनको मामूली

Copyright OfflineDeeniApp

माज़रत पर माफ़ कर दिया जाए। इसलिए ज़रूरत थी कि इस मामले में ऐसा फ़ैसला दिया जाए कि आगे किसी मुख़्लिस मुसलमान को ऐसी ग़लतफ़हमी और निज़ाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की जुर्रात न हो सके। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'तुमने सच-सच बात कह दी, अब जाओ और ख़ुदा के फ़ैसले का इंतिज़ार करो।'

तीनों इस हुक्म के बाद घर वापस आ गए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा को हुक्म फ़रमा दिया कि इन तीनों से कलाम व सलाम सब तर्क कर दिया जाए। चुनांचे तमाम मुसलमानों ने उनका सोशल बाईकाट कर दिया।

नज्म व ज़ब्त की ज़ोरदार मिसाल

हज़रत काब ख़ुद फ़रमाते हैं कि इस वाक़िए ने हम तीनों पर जो कुछ असर किया, उसका अंदाज़ा दूसरा कोई नहीं कर सकता, मेरे दोनों साथियों पर तो इस दर्जा असर पड़ा कि उन्होंने बाहर निकलना ही छोड़ दिया, मगर मैं सख़्त जान था, बराबर नमाज़ों के वक़्तों में मस्जिदे नबवी में हाज़िर होता रहा।

जब मैं मस्जिद में हाज़िर होता तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सलाम करता और देखता रहता कि मुबारक लब को हरकत हुई या नहीं, मगर बदक़िस्मती और महरूमी के सिवा कुछ न पाता। अलबत्ता यह महसूस करता था कि जब मैं नमाज़ में मश्ग़ूल होता तो आप मेरी जानिब देखते रहते और जब मैं फ़ारिग़ होकर आपकी जानिब मुतवज्जह होता तो मेरी तरफ़ से मुबारक रुख़ फेर लेते।

लेकिन इस पूरे वाक़िए में मुसलमानों की इस्लाम दोस्ती और अल्लाह के रसूल सल्ल० के हुक्म पर ज़बरदस्त जमाव का यह हाल था कि जब मैं लोगों की इस सख़्ती से उकता गया तो एक दिन अपने सबसे महबूब अज़ीम और चचेरे भाई अबूक़तादा के पास गया, उस अबूक़तादा के पास, जो इससे पहले मुझ पर जान छिड़कता था और मेरा आशिक़ व जांनिसार था। मैंने उसको सलाम किया, मगर ख़ुदा की क़सम, उसने कोई जवाब न दिया। मैं इस हालत

Copyright OfflineDeeniApp

को देखकर तड़प गया और अबूक़तादा से कहा, अबूक़तादा! मैं ख़ुदा की क़सम देकर तुझ से मालूम करता हूं, क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं अल्लाह और उसके रसमूल को दोस्त रखता हूं और मैं अल्लाह और रसूल का आशिक़ हूं? अबूक़तादा फिर भी ख़ामोश रहा और कोई जवाब नहीं दिया। मैंने दो बार फिर इस बात को दोहराया, मगर उसने चुप्पी साध ली और कोई जवाब न दिया। आख़िर जब तीसरी बार कहा, तो सिर्फ़ यह कहकर चुप हो गया, 'ख़ुदा और रसूल ही ख़ूब जानता है।'

यह सुनकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और मेरी आंखें डबडबा आईं कि अल्लाहु अकबर यह इंक़िलाब! और यहीं तक मामला ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि चालीस दिन गुज़रने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि इन तीनों की बीवियों को भी चाहिए कि शौहरों का बॉइकाट करके अलग हो जाएं। चुनांचे इन अल्लाह की बंदियों ने हमारे साथ दिली ताल्लुक़ के बावजूद रसूल के हुक्म को मुक़द्दम समझा और अपने मैके चली गईं, अलबत्ता हिलाल बिन उमैया की जीवन-साथी ने दरबारे रिसालत में जाकर अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हिलाल बूढ़े हैं, उनकी ख़िदमतगुज़ार सिर्फ़ मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं अगर वे मेरी ख़िदमत से महरूम हो गए तो उनकी हलाकत का अंदेशा है, अब क्या हुक्म?

तब आपने फ़रमाया, 'ख़िदमत करती रहो, बाक़ी ताल्लुक़ात को अभी रोक दो।' यह सुनकर उसने सर झुका दिया। बात मान ली और इसके बावजूद कि शौहर और बीवी या अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के दर्मियान कोई दूसरा मौजूद नहीं होता था, तब भी क्या मजाल कि एक लम्हे के लिए भी किसी ने रसूल के हुक्म से हटने की जुर्रात की हो, अल्लाह! अल्लाह! यह है सच्ची शाने इताअ़त ख़ुदा और रसूल की!

रसूल के इश्क़ और इस्लाम की सच्चाई का हैरत में डाल देने वाला मेयार

काब बिन मालिक रज़ि० का चालीस दिन से लगातार समाजी बाइकाट है। ग़ैरों का ज़िक्र ही क्या, क़रीबी अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार, यहां तक कि

Copyright OfflineDeeniApp

जीवन-साथी भी इस्लाम और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म पर परवानावार निसार होते हुए काव का बाइकाट किए हुए हैं, गोया इस तरह काब पर ख़ुदा की ज़मीन तंग हो गई है। वह इस मायूसी और हैरानी की हालत में मदीना के बाज़ार से गुज़र रहे हैं कि अचानक शाम का एक नबती पुकारता हुआ नज़र आया, मुझको कोई काब बिन मालिक तक पहुंचा दे।'

लोगों ने हाथ के इशारे से बताया कि काब यह जा रहे हैं, नबती आगे बढ़ा और काब की राह रोक कर उनकी खिदमत में एक ख़त पेश किया। काब ने पढ़ा तो शाहे ग़स्सान का ख़त था, उसमें लिखा था—

अम्मा बाद! मुझको मालूम हुआ है कि तुम्हारे साथी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने तुम पर बड़ा ज़ुल्म कर रखा है। ख़ुदा ने तुम जैसी हस्ती को इस ज़िल्लत और बरबादी के लिए नहीं बनाया, पस तुम फ़ौरन यहां चले आओ, हम तुम्हारी ख़ातिरख़्वाह इज़्ज़त करेंगे। (फ़तुलबारी)

हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं, ख़त पढ़ते ही मुझको सख़्त रंज व मलाल हुआ और मैंने दिल में कहा कि यह आज़माइश व बला पहली आज़माइश से भी ज़्यादा कठिन है। मैं और शाहे ग़स्सान को मेरे बारे में यह गुमान कि इस इम्तिहान से घबरा कर उसके पास भाग जाऊं और ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल से मुंह मोड़ लूं। आह, यह बहुत ही तक्लीफ़ देने वाली सूरतेहाल है। बहरहाल शाहे ग़स्सान की इस ज़लील हरकत पर मुझे ऐसा ग़ुस्सा आया कि मैं एक तन्नूर के सामने पहुंचा और उसके ख़त को उसमें झोंक कर नबती से कहा, यह है तेरे वादशाह के ख़त का जवाब और मैं ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर वेचैनी के साथ अ़र्ज़ करने लगा, शाहे हर दूसरा, आख़िर यह एराज़ (मुंह फेरना) क्यों इस दर्जे को पहुंच गया कि अब मुश्रिक भी मुझे फुसलाने की जुर्रात करने लगे।

ग़रज़ इसी तरह पचास रातें गुज़र गईं और हमारी महरूमी की गिरह न खुली और अल्लाह के इर्शाद के मुताविक़ ख़ुदा की ज़मीन फैली होने के बावजूद हम पर तंग हो गई और अपनी जान वबाल नज़र आने लगी कि यकायक सुबह की नमाज़ के वाद सलअ् की चोटी पर से एक पुकारने वाले

Copyright OfflineDeeniApp

ने पुकारा, 'ऐ काब! बशारत हो।'

मैं तो हालत में इन्क़िलाब आने के इंतिज़ार में ही था, फ़ौरन समझ गया कि अल्लाह के दरबार में तौबा क़ुबूल हो गई। अब क्या था मारे ख़ुशी के फूला न समाया और वहीं सज्दे में गिर गया।

अब गिरोह-दर-गिरोह लोग आ रहे हैं और तौबा के क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी सुना रहे हैं और जीवन-साथी की तरफ़ से भी मुबारकबाद पेश की जा रही है। सबसे पहले जिस आदमी ने मुझसे तौबा क़ुबूल करने की तफ़्सील से ख़ुशख़बरी सुनाई, वह एक सवार था। मैंने इंतिहाई ख़ुशी में जो कपड़े पहने हुए था, उतार कर उसको दे दिए। ख़ुदा की शान कि मेरे पास और कपड़े भी नहीं थे, इसलिए उधार मांग कर पहने और रसूल सल्ल० के दरबार में हाज़िर हुआ, राह में भी लोगों का तांता बंधा हुआ था और मुझ पर मुबारकबादियों और ख़ुशख़बरियों के फूल बरसाए जा रहे थे। रसूल ﷺ के दरबार में पहुंचा, तो आंहज़रत सल्लम आगे बढ़े और मुझसे मुसाफ़ा किया और मुबारकबाद पेश की। इसी ख़ुशी के साथ मैं ने आपके चेहरे पर नज़र डाली तो देखा कि मुबारक चेहरा मारे ख़ुशी के बिजली की तरह चमक रहा है, मुस्कराते हुए इर्शाद फ़रमाया, इस मुबारक दिन में बशारत हासिल कर, तेरी पैदाइश से आज तक इससे बेहतर कोई दिन नहीं आया।'

मैंने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा का यह क़ुबूल होना आपकी तरफ़ से है या अल्लाह की तरफ़ से?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'मेरी तरफ़ से नहीं, ख़ुदा की तरफ़ से है।'

आपने यह जवाब दिया और रुख़े अनवर चांद की तरह रोशन नज़र आने लगा। मैं ने ख़ुश होकर कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! तौबा के मेरे क़ुबूल होने का एक हिस्सा यह भी हो जाए कि मैं अपना कुल माल अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दूं।'

आपने इर्शाद फ़रमाया, 'बेहतर यह है कि कुछ हिस्सा अपने लिए रख लो।'

'मैंने अर्ज़ किया, ख़ैबर का जो हिस्सा मेरे पास है उसे रोके लेता हूं।

'मैंने यह भी अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! यह सच्चाई का सदक़ा है कि

Copyright OfflineDeeniApp

आज बेपनाह माल से मालामाल हूं, इसलिए अह्द करता हूं कि उम्र भर सच कहने के अलावा मेरा शिआ़र कुछ न होगा।'

हज़रत काब फ़रमाते हैं, मेरे इस मामले में रंज व ग़म के हर दो साथी का भी ख़ुशी में यही हाल हुआ और हमारी तौबा क़ुबूल होने पर जो फ़ज़्ल की आयतें उतरी थीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमारे सामने उनकी तिलावत फ़रमाई।

तौबा का क़ुबूल होना और सूरः तौबा

तर्जुमा—*'बेशक अल्लाह अपनी ख़ुशी से नबी पर मुतवज्जह हो गया और मुहाजिरों और अंसार पर भी, जिन्होंने बड़ी तंगी और बेसर व सामानी की हालत में उसके पीछे क़दम उठाया और उस वक़्त उठाया कि क़रीब था उनमें से एक गिरोह के दिल डगमगा जाएं, फिर वह अपनी रहमत से उन सब पर मुतवज्जह हो गया, बेशक वह मुहब्बत रखने वाला रहमत करने वाला है और उन तीन आदमियों पर भी (अपनी रहमत के साथ रुजू हुआ जो लटकी हालत में छोड़ दिए गए थे, यहां तक कि नौबत यह आई कि) ज़मीन अपने तमाम फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई थी और वे ख़ुद भी अपनी जान से तंग आ गए थे और उन्होंने जान लिया था कि अल्लाह से भाग कर उन्हें कोई पनाह नहीं मिल सकती, मगर ख़ुद उसी के दामन में, पस अल्लाह उन पर अपनी रहमत के साथ लौट आया, ताकि वह रुजू करें। बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है, बड़ा ही रहमत वाला, ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ करो, डरते रहो और सच्चों का साथ अख़्तियार करो।'*

(9 : 117-119)

क़ुरआन और तबूक की लड़ाई

क़ुरआन ने सिर्फ़ इसी वाक़िया का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि तबूक की लड़ाई की अहमियत के पेशे नज़र उसकी बहुत-सी तफ़्सील बयान की और इस सिलसिले में पंद और नसीहत के जरिए मुसलमानों की रुश्द व हिदायत का सामान जुटाया है। चुनांचे इस सूरः में छठे रुकूअ् से लेकर आख़िर सूरः तक इसी लड़ाई और लड़ाई से मुताल्लिक़ हालात और नसीहतों का ज़िक्र है।

Copyright OfflineDeeniApp

अहम लड़ाइयां और नतीजे और नसीहतें

ग़ज़वा बदरुल-कुबस

1. जीत-हार की बुनियाद तायदाद की कमी-ज़्यादती नहीं है, बल्कि सिर्फ़ उसके फ़ज़्ल व करम पर है।

2. जो जमाअ़त फ़र्ज़ के एहसास के साथ अ़द्ल व इंसाफ़ के लिए मैदान में निकलती है, वह कभी नाकाम नहीं होती और ख़ुदा की मदद का पैग़ाम उसी को नसीब होता है।

3. बशरी तक़ाज़े के पेशेनज़र अपनी जान से ख़ौफ़ व हरास मलामत के क़ाबिल नहीं है और अल्लाह ज़रूर उससे जमाव देता है।

4. सब्र तल्ख़ अस्त वले बर शीरीं दारद—

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमां पैदा
आग कर सकती अंदाज़े गुलिस्तां पैदा

उहुद की लड़ाई

1. जिहाद मुख़्लिस व मुनाफ़िक़ की मारफ़त के लिए बेनज़ीर कसौटी है।

2. अमीर, ख़लीफ़ा और उसके नायबों का फ़र्ज़ है कि अहम मामलों में मुसलमानों से मश्विरा कर लें और सब एक राय होकर या अक्सरीयत से जो फ़ैसला हो, उसी को अपना अ़ज़्म बनाएं।

3. तमाम मामलों में आमतौर से और जिहाद व मैदान में ख़ासतौर से ज़ब्त व नज़्म अहम है। अगर किसी जमाअ़त में यह न हो तो सच्ची जमाअ़त का कामियाब होना मुश्किल है।

4. जिहाद के मैदान में मुनाफ़िक़ और कमज़ोर अंगों का जुदा रहना ही फ़ायदे और कामियाबी के लिए बहुत ज़रूरी है।

अह्ज़ाब की लड़ाई

1. यह भाईचारा और बराबरी का एक शानदार और बेमिसाल इल्मी व अ़मली नक़्शा है।

Copyright OfflineDeeniApp

2. हर ज़माने में वक़्त की तरक़्क़ी वाले दुनिया के साधनों को हक़ के मामले की हिमायत के लिए अख़्तियार करना और अपनाना इस्लाम से हटना नहीं, बल्कि बेहतरीन इस्लामी ख़िदमत है, बशर्ते कि वे सब साधन इस्लामी उसूल व अहकाम से टकराते न हों।

3. जिहाद इस्लाम का इतना शानदार मेम्बर है और उसके बाक़ी रखने और हिफ़ाज़त के लिए ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि फ़र्ज़ के इस अदा करने में लगा रहने में नबी अकरम ﷺ और सहाबा किराम रज़ि० का नमाज़ जैसा फ़रीज़ा क़ज़ा हो गया और आपने और सहाबा ने अस्र की नमाज़ मग़रिब के वक़्त अदा फ़रमाई। अगरचे जिहाद के वक़्त भी अल्लाह की इबादत से ग़ाफ़िल नहीं रखा गया और क़ुरआन ने 'ख़ौफ़ की नमाज़' का रास्ता निकाल कर नमाज़ की अहमियत वाज़ेह कर दी है।

4. लड़ाई में ऐसे तरीक़े अख़्तियार करना सही हैं, जिनमें झूठ और वायदा-ख़िलाफ़ी जैसी नापसन्दीदा बातों का दख़ल न होते हुए दुश्मन को बग़ैर लड़ाई ही के नुक़्सान व हार का मुंह देखना पड़ जाए।

मक्का की फ़त्ह

1. जब किसी ग़ैर-मुस्लिम ताक़त से समझौता कर लिया जाए तो समझौते की मुद्दत को अपनी तरफ़ से पूरा करना इस्लामी ज़िम्मेदारी है। अलबत्ता अगर दूसरी तरफ़ से ख़िलाफ़वर्ज़ी हो, तो मुसलमान ज़िम्मेदारी से अलग हैं।

2. फ़त्हे मक्का की ख़ास बात यह है कि वह ताक़त के ज़ोर पर फ़त्ह होने के बावजूद ख़ूरेज़ी से बचा रहा।

3. दुनिया के शहंशाह और नबी-ए-रहमत के दर्मियान अगर फ़र्क़ और इम्तियाज़ मालूम करना हो तो फ़त्हे मक्का उसके लिए रोशन दलील है।

4. काफ़िर व मुश्रिक गिरोह अगर इस्लामी ताक़त का हलीफ़ (मित्र) बनना चाहे, तो मुस्लिम मुफ़ाद को सामने रखकर उसको हलीफ़ बनाया जा सकता है, बल्कि कुछ हालात में उसको हलीफ़ बनाना बहुत ही ज़रूरी है।

Copyright OfflineDeeniApp

हुनैन की लड़ाई

1. जीत और हार का मदार हर हालत में तायदाद की ज़्यादती पर नहीं, बल्कि अल्लाह की मदद के साथ जुड़ा रहना चाहिए।

2. अगर इस्लाम और मुसलमान के फ़ायदे का तक़ाज़ा हो तो एक ग़ैर मुस्लिम ताक़त के मुक़ाबले में दूसरी ग़ैर मुस्लिम ताक़त या ग़ैर मुस्लिम जमाअ़त का मेल और मदद हासिल करना बेशक दुरुस्त और सही है।

तबूक

1. इस्लामी मुफ़ाद के पेशेनज़र जब आम जिहाद का एलान हो जाए तो फ़र्ज़ के अदा करने के मुक़ाबले में हर क़िस्म की मुश्किलें ख़त्म हो जानी चाहिए।

2. आम जिहाद के मौक़े पर माली मदद भी जिहाद ही का अहम शोबा है।

3. मुनाफ़िक़ों का जिहाद में शिर्कत न करना ही फ़ायदेमंद है। अलबत्ता अगरचे ख़ुलूस वाले लोग ऐसे मौक़े पर नजरें चुरा जाएं तो माफ़ न करने वाला जुर्म है, जब तक कि वे तौबा न कर लें।

4. इस्लामी हुक्मों की खुली ख़िलाफ़वर्ज़ी पर मुसलमानों के किसी मुस्लिम फ़र्द या मुस्लिम जमाअ़त के ख़िलाफ़ सोशल या समाजी बाइकाट दुरुस्त है, बल्कि कुछ अहम और नाज़ुक हालात के पेशेनज़र कभी भी वाजिब हो जाता है।

हुदैबिया का वाक़िया

1. इस्लामी इज्तिमाई मस्लहतें अगर तक़ाज़ा करें तो ख़लीफ़ा और अमीरुल मोमिनीन को अख़्तियार है कि वह कुफ़्फ़ार व मुश्रिकों से ऐसी सुलह करे जो देखने में हारी हुई नज़र आती हो, मगर गहरी नज़र और सूझ-बूझ का यह फ़त्वा हो कि नतीजे के लिहाज़ से यह मुसलमानों के हक़ में बेहतर साबित होगी।

2. मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के

Copyright OfflineDeeniApp

हुक्मों को हर मामले में नमूना बनाए और अपनी सूझ-बूझ पर भरोसा करके उनके ख़िलाफ़ करने पर तैयार न हो जाए।

3. 'वायदा तोड़ने' को ग़लत समझे और यक़ीन करे कि वायदे की पाबन्दी न करने वाला, न दुनिया में इज़्ज़त का मालिक हो सकता है और न आख़िरत में उसको फ़लाह नसीब हो सकती है।

4. हुदैबिया के समझौते ने यह साफ़ कर दिया कि मुस्लिम क़ौम अख़्लाक़ व आमाल और किरदार व गुफ़्तार, बल्कि ज़िंदगी के हर शोबे में सच्चा, इंसाफ़पसंद, हक़पसंद और हक़-आगाह है और उसकी जमाअ़ती और इंफ़िरादी ज़िंदगी के वक़्त का दर्जा तमाम क़ौमों और मिल्लतों से बुलंदतर है।

गोद लेकर बेटा बनाना

जाहिलियत की रस्मों में से एक रस्म 'तबन्ना' भी है। यह रस्म किसी न किसी शक्ल में हर मुल्क में पाई जाती रही है, बल्कि हिंदुओं में आज भी मौजूद है। यह रस्म हसब-नसब से ताल्लुक़ और समाजी निज़ाम, दोनों लिहाज़ से ख़राब और फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। इस रस्म के ख़त्म करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने जिस वाक़िए को चुना, वह इस तरह है—

हज़रत ज़ैद रज़ि०

हज़रत ज़ैद बिन हारिस बिन शुरहबील अरब के इज़्ज़तदार क़बीला बनी कलब के एक आदमी थे और एक हादसे की वजह से बचपन ही में ग़ुलाम बना लिए गए और उकाज़ के बाज़ार में हज़रत ख़दीजा रज़ि० के भतीजे हकीम बिन हिज़ाम ने उनको अपनी फूफी के लिए ख़रीद लिया। ख़दीजा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवन-साथी होने के बाद उनको हुज़ूरे अक़्दस की ख़िदमत में हिबा कर दिया। नबी करीम सल्ल० ने उनको आज़ाद कर के अपना बेटा बना लिया और उसी दिन से लोग बाग ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहने लगे। इत्तिफ़ाक़ की बात कि बनी कलब के कुछ लोग हज की नीयत से मक्का आए तो ज़ैद को पहचान लिया। ज़ैद के बाप हारिसा और उनके भाई काब को जब यह मालूम हुआ तो वह मक्का आए और हुज़ूरे

Copyright OfflineDeeniApp

अक़्दस की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया, अब ज़ैद को हमारे हवाले कर दीजिए और फ़िदए की रक़म ले लीजिए।

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, 'इससे बेहतर यह बात है कि ज़ैद आ जाएं और उसके सामने ये दोनों शक्लें रख दी जाएं, वह तुम्हारे साथ जाना क़ुबूल करता है या मेरे साथ रहना चाहता है और जो उसकी मर्ज़ी हो, उस पर हम भी राज़ी हो जाएं।'

हारिसा ख़ुशी-ख़ुशी इस पर राज़ी हो गए, क्योंकि वह यक़ीन रखते थे कि बेटा बहरहाल बाप ही को तर्जीह देगा। चुनांचे ज़ैद बुलाए गए। ज़ाते अक़्दस ﷺ ने मालूम किया, इनको पहचानते हो?

ज़ैद ने कहा, 'क्यों नहीं, यह मेरे वालिद हैं और यह मेरे चचा हैं।'

आपने फ़रमाया, 'ये लेने आए हैं। अब तुम मुख़्तार हो, इनके साथ चले जाओ या मेरे पास रहो।'

ज़ैद ने अ़र्ज़ किया, 'मैं आप पर किसी को तर्जीह नहीं दे सकता। मेरे बाप-चचा जो कुछ भी हैं, आप ही हैं।'

हारिसा ने यह सुना तो रंज व तक्लीफ़ के साथ कहा, 'ज़ैद! किस क़दर अफ़सोस है तुझ पर कि ग़ुलामी को आज़ादी पर और बाप-दादा और ख़ानदान पर अजनबी को तर्जीह दे रहा है।'

ज़ैद ने कहा, 'इस हस्ती के साथ रह कर मेरी आंखों ने जो कुछ देखा है, उसके बाद मैं दुनिया और उसकी हर चीज़ को उसके सामने हेच समझता हूं।'

तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हारिसा और हाज़िरीन को बतलाया कि मैं ने ज़ैद को आज़ाद कर दिया है। अब वह मेरा ग़ुलाम नहीं, बल्कि बेटा है। हारिसा ने यह सुना तो बहुत ख़ुशी ज़ाहिर की और बाप और चचा दोनों मुतमइन वापस हो गए और कभी-कभी आकर देख जाते और आंखें ठंडी कर लिया करते थे।

तिर्मिज़ी की एक मुख़्तसर रिवायत में हारिसा की जगह उसके दूसरे बेटे हबला के आने और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ ऊपर की बातचीत का ज़िक्र हुआ है।

Copyright OfflineDeeniApp

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद की मज़ीद क़द्रअफ़ज़ाई के लिए उनका निकाह अपनी दूध पिलाई उम्मे ऐमन के साथ कर दिया, जिसके पेट से हज़रत उसामा पैदा हुए और उसके बाद इरादा किया कि उनकी शादी अपनी फुफेरी बहन ज़ैनब बिन्त जहश के साथ कर दें। यह हाशमी ख़ानदान की बेटी और आपकी फूफी उमैया बिन्त अ़ब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं, इसलिए ज़ैनब और ज़ैनब के भाई इस निकाह पर राज़ी नहीं थे, तब अल्लाह की वह्य ने नाज़िल होकर यह हुक्म दिया कि जिस बात का हुक्म अल्लाह और उसका रसूल दे, फिर उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी किसी के लिए जायज़ नहीं है।

तर्जुमा—'जब अल्लाह और उसका रसूल ﷺ कोई फ़ैसला कर दे, तो फिर किसी मोमिन मर्द और औरत को उनके मामले में कोई अख़्तियार बाक़ी नहीं रहता और जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे, बेशक वह खुली गुमराही में पड़ गया। (33-36)

वह्य के नाज़िल होने पर हज़रत ज़ैनब और उसके भाइयों ने आपके फ़ैसले के सामने सर झुका दिया और इस तरह आपने ख़ानदान से ही अ़मली तौर पर नसब पर फ़ख़्र करने की जड़ काट दी, ताकि आपका अ़मल नमूना बने।

हज़रत ज़ैद रज़ि० का सबस बड़ा शरफ़ यह है कि क़ुरआन में उनका नाम खुलकर आया है। यह शरफ़ रसूल ﷺ के किसी सहाबी को नसीब नहीं हुआ।

बेटा बनाने की रस्म की रोक-थाम

हज़रत ज़ैद रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० अगरचे निकाह-बंधन में जकड़े हुए थे, लेकिन हज़रत ज़ैनब रज़ि० का यह फ़ितरी रुझान मिट न सका कि वह क़ुरैशी हाशमी हैं और उनका शौहर आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम। इसी तरह हज़रत ज़ैद को यह फ़ख़्र हासिल था कि वह बहरहाल अरब के मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीले के फ़र्द और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुंह बोले बेटे हैं और ज़ैनब रज़ि० पर उनको क़व्वाम (सरदार) होने का शरफ़ हासिल है।

Copyright OfflineDeeniApp

चुनांचे इन आपसी टकराव वाली ज़ेहनियतों ने उनके आपस में मुहब्बत का रिश्ता क़ायम न होने दिया और आख़िरकार ज़ैद इस पर तैयार हो गए कि हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दें। हज़रत ज़ैद ने कई बार इस इरादे का ज़िक्र हुज़ूरे अक़्दस से किया, लेकिन आप ने यह समझ कर कि शायद देर या मुद्दत का ज़्यादा हो जाना मुहब्बत के बढ़ने की वजह बने, ज़ैद को तलाक़ देने से रोका।

हज़रत ज़ैद और हज़रत ज़ैनब रज़ि० की नाचाक़ी ने अब सूरतेहाल बदल दी और अल्लाह की वह्य ने यह फ़ैसला कर दिया कि वक़्त आ गया है कि अब बेटा बनाने की बुरी रस्म ख़त्म कर दी जाए और जिस तरह हसब-नसब के फ़ख़्र के पहलू को अपने ख़ानदान ही में सबसे पहले तोड़ा, उसी तरह इसकी शुरूआत भी ख़ुद ज़ाते अक़्दस के ही अ़मल से हो और यह इस तरह कि ज़ैद रज़ि० जब तलाक़ दे दें तो फिर ज़ैनब रज़ि० का निकाह आप से हो जाए, क्योंकि इससे एक तरफ़ ज़ैनब और उनके ख़ानदान को जो सदमा पहुंचे, उसे दूर किया जा सके और दूसरी ओर गोद लिए बेटे की बुरी रस्म की रोक-थाम हो सके।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब वह्य इलाही ने यह नक़्शा बतलाया, तो एक बशर होने के नाते आपके दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि ज़ैद अगर ज़ैनब को तलाक़ न दें तो अच्छा है ताकि ज़ैनब के ख़ानदान को भी तौहीन महसूस न हो और मैं भी मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों के इस ताने से बचा रहूं कि वे यह कहेंगे, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने बेटे की बीवी को अपनी बीवी बना लिया, हालांकि दूसरों के लिए बेटे की बीवी को हराम बताते हैं। चुनांचे आप बराबर ज़ैद को तलाक़ से बाज़ रखते रहे, मगर जब किसी तरह आपस में निभ न सकी तब ज़ैद ने तलाक़ दे ही दी और इद्दत गुज़रने पर ख़ुदा का हुक्म हुआ कि अब आप ज़ैनब रज़ि० को अपनी बीवी बनाएं ताकि आगे मुंह बोले बेटे की रस्म का ख़ात्मा हो और मुसलमानों के समाज में यह तंगी न पैदा हो सके कि मुंहबोले बेटे की बीवी के निकाह को सुलबी बेटे की बीवी की तरह हराम समझा जाए और साथ ही अल्लाह तआ़ला की वह्य ने यह भी वाज़ेह कर दिया कि ख़ुदा जो फ़ैसला कर चुका

Copyright OfflineDeeniApp

है वह तो ज़ाहिर होकर ही रहेगा और तुम्हारे बशरी ख़ौफ़ से वह टलने वाला नहीं है और सच भी यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में इंसानी समाज का डर बिल्कुल बेकार की बात है।

कुरआन ने मुंह बोले बेटे की रोकथाम के मामले को दो हिस्सों में बांट दिया है कि एक ज़ेहनी व इल्मी इंक़िलाब और दूसरा अ़मली, चुनांचे ज़ेहनी इस्लाह व इंक़िलाब के लिए नीचे लिखी आयतें नाज़िल फ़रमाईं–

तर्जुमा–*'और अल्लाह ने तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा (हक़ीक़ी बेटा) नहीं बना दिया। यह क़ौल तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह सच बात कहता है और वही सीधी राह दिखाता है। तुम इन मुंह बोले बेटों को उनके (हक़ीक़ी) बापों की निस्बत से पुकारा करो। यही अल्लाह के नज़दीक इंसाफ़ का तरीक़ा है और अगर तुमको उनके बाप-दादों के नाम मालूम न हों तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं।'* (33 : 3-4)

चुनांचे सहाबा रज़ि० साफ़ करते हैं कि हमने उसी वक़्त से हज़रत ज़ैद को इब्ने मुहम्मद कहना छोड़ दिया और ज़ैद बिन हारिसा कहने लगे।

और बेटा बनाने के अ़मली पहलू की रोकथाम को रोशन करने के लिए ये आयतें उतरीं–

तर्जुमा–*'और (वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है) जब तुम उस आदमी से कहते थे, जिस पर अल्लाह ने और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रख (और तलाक़ न दे) और अल्लाह से डर और सूरते हाल यह थी कि तुम अपने जी में इस बात को छिपाए हुए थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। तुम लोगों के (तान व तंज़) से डरते थे और अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरा जाए, सो जब ज़ैद अपनी ज़रूरत पूरी कर चुका (और उसने तलाक़ दे दी) तो हमने उस (ज़ैनब) का निकाह तुझसे कर दिया ताकि (आगे) मुसलमानों पर तंगी न रहे कि वह अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों से निकाह कर सकें। जब उनके मुंह बोले बेटे अपनी हाजत पूरी कर लें (यानी तलाक़ दे दें) और अल्लाह का यह हुक्म अटल है।'* (33-37)

कुरआन की इन आयतों का मतलब अपने मुताल्लिक़ मस्अले के साथ इतना साफ़ और खुला हुआ है कि उसमें किसी दूसरे मतलब की गुंजाइश तक

Copyright OfflineDeeniApp

नहीं और न किसी क़िस्म की कोई पेचेदगी ही है कि जो मामले के रुख़ को किसी दूसरी ओर फेरने की वजह हो (इसलिए मुनासिब समझते हैं कि इस मामले से मुताल्लिक़ ख़ुराफ़ाती दास्तान से बिल्कुल ही आंखें फेर ली जाएं।)

सबक़ और नसीहत

इस बात के बावजूद कि पैग़म्बर व रसूल इस हक़ीक़त से आशना होते और उस पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह का फ़ैसला अटल और रद्द करने के क़ाबिल नहीं होता है, फिर भी अगर कोई बात ऐसी हो जिसमें उनकी ज़ात वक़्त के ख़ुद के गढ़े हुए अख़्लाक़ी पहलू की बुनियाद पर तान व तंज़ की वजह बनती हो, तो बशर के तक़ाज़े की बुनियाद पर वे उसकी मार से बचे रहने की कोशिश करते हैं और उम्मीद करते हैं कि अल्लाह तआ़ला जिस भले मक़्सद के लिए ऐसी सूरत पैदा करना चाहता है, काश वह किसी ऐसी शक्ल में ज़ाहिर हो कि उनके इस तान व तंज़ से बच जाए, लेकिन जबकि ख़ुदा की मस्लहत इसी ख़ास सूरत में छिपी होती है तो वक़्त आने पर नबी व रसूल अपनी ज़ाती ख़्वाहिश को पीठ पीछे डाल कर ख़ुदा के फ़ैसले पर सर झुका देता है।

बनू नज़ीर

यह वाक़िया 04 हिजरी में पेश आया। जो यहूदी क़बीले यमन से भागकर हिजाज़ (मदीना) में आ बसे थे, उनमें से यह भी मशहूर क़बीला है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मदीना तशरीफ़ फ़रमा हुए तो आपने मदीना और उसके आस-पास के यहूदियों से अह्द व पैमान करके 'सुलह व अह्द' की बुनियाद डाली।

यहूदियों ने अगरचे ज़ाहिरी तौर पर इस सुलह व अह्द पर रज़ामंदी का इज़्हार कर दिया था, लेकिन उनके रिवायती हसद व बुग़्ज़ और तारीख़ी मुनाफ़क़त (निफ़ाक़) ने इस अह्द पर उनको देर तक क़ायम नहीं रहने दिया और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अंदरूनी और बैरूनी साज़िशों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। इसी

Copyright OfflineDeeniApp

बीच बनू नज़ीर के ज़िम्मेदार लोगों ने एक दिन यह साज़िश की कि नबी अकरम ﷺ की ख़िदमत में जाकर अ़र्ज़ करें कि हमको एक मामले में आप से मश्विरा करना है और जब आप तश्रीफ़ ले आएं तो दीवार के क़रीब उनको बिठाया जाए और जब वे बातचीत में लग जाएं तो ऊपर से एक भारी पत्थर आप पर गिराकर आपका ख़ात्मा कर दिया जाए।

चुनांचे नबी अकरम ﷺ मदऊ (जिसे बुलाया जाए) होकर तश्रीफ़ लाए, अभी आप दीवार के क़रीब बैठे ही थे कि वह्य इलाही ने हक़ीक़ते हाल की इत्तिला दे दी और आप फ़ौरन ख़ामोशी के साथ वापस तश्रीफ़ ले आए और वहां जाकर मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को भेजा कि वह बनू नज़ीर तक यह पैग़ाम पहुंचा दें कि चूंकि तुमने ग़द्दारी की और वायदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है, इसलिए तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुक़द्दस हिजाज़ की सरज़मीन से जल्द जिला-वतन हो जाओ। मुनाफ़िक़ीन ने यह सुना तो जमा होकर बनू नज़ीर के पास पहुंचे और कहने लगे, तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान हरगिज़ तस्लीम न करो और यहां से हरगिज़ जिला-वतन न हो, हम हर तरह तुम्हारे शरीकेकार हैं।

बनू नज़ीर ने यह पुश्त-पनाही देखी तो हुक्म मानने से इंकार कर दिया और हालात का इंतिज़ार करने लगे, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिहाद की तैयारी की और अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे कुलसूम को मदीने का अमीर बनाकर बनू नज़ीर की गढ़ी (छोटा क़िला) पर हमलावरी के लिए निकले। हज़रत अ़ली रज़ि० के हाथ में इस्लामी परचम था और सहाबा घेरे हुए थे।

बनू नज़ीर ने यह देखा तो क़िलाबंद हो गए और यक़ीन कर लिया कि अब मुसलमान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। चुनांचे नबी करीम ﷺ छः दिन (दिन व रात) उनकी घेराबंदी किए रहे और फिर हुक्म दिया कि इनके इन पेड़ों को काट डालो जो इनके लिए फल मुहैय्या करते हैं और इनका वजूद इनके रसद पहुंचाने की ताक़त पहुंचाने की वजह है।

इन हालात को देखकर बनू नज़ीर के दिलों में रौब और ख़ौफ़ तारी हो गया और उनको मुनाफ़िक़ों की ओर से मायूसी और रुसवाई के सिवा और

Copyright OfflineDeeniApp

कुछ हाथ न आया। आख़िर मजबूर होकर उन्होंने दरख़्वास्त की कि इसको देश छोड़ देने का मौक़ा दिया जाए, इसलिए उनको इजाज़त दी गई कि लड़ाई के सामान के अलावा जितना सामान भी वे ऊंटों पर लाद कर ले जाना चाहते हैं, ले जाएं।

इजाज़तनामा हासिल हो जाने के बाद यह मंज़र भी देखने का था कि कल के बाग़ी, सरकश और फ़ितना फैलाने वाले ग़द्दार, आज अपने हाथों से अपने मकानों को बर्बाद करके (ताकि मुसलमान उसमें आबाद न हों सकें) इस वतन को ख़ैरबाद कह रहे थे, जिस जगह हिफ़ाज़त से रहने के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ुद अपने आप एक अह्द नामा के ज़रिए उनको दावत दी थी।

कुरआन और बनू नज़ीर

इसी वाक़िए के सिलसिले में सूरः हश्र नाज़िल हुई है और उसमें बनू नज़ीर की ग़द्दारी, मुनाफ़िक़ों का फ़िला, मुसलमानों पर ख़ुदा का एहसान व करम और लड़ाई के मौक़े पर हरे पेड़ों के काटने का हुक्म और ऐसी शक्ल में, जबकि लड़ाई न हो रही हो, ग़नीमत के माल का मसरफ़ और फ़ै का हुक्म, इन तमाम बातों का तफ़्सील के साथ ज़िक्र किया गया है।

नतीजा और नसीहत

1. मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ एक ख़ुशफ़रेबी होती है जो अंजाम के लिहाज़ से न ख़ुद अपने लिए फ़ायदेमंद साबित होता है और न मुनाफ़िक़ों पर एतमाद करने वाला ही उससे कोई फ़ायदा उठा सकता है, बल्कि कभी-कभी वह अपनी और अपने साथियों की ज़िल्लत और रुसवाई और हलाकत व बर्बादी का सामान जुटा देता है और हमेशा के घाटे की वजह बन जाता है।

2. जिस क़ौम में शर व फ़साद और मकर व फ़रेब 'अख़्लाक़' का दर्जा ले लेते हैं, उनके क़ौमी, जिस्मानी और रूहानी सलाह व ख़ैर की तमाम इस्तेदाद फ़ना हो जाती है और न वह दुनिया में किसी इ़ज़्ज़त व शौक़त की मालिक रहती है और न आख़िरत में उसके लिए ख़ैर का कोई हिस्सा बाक़ी

Copyright OfflineDeeniApp

रहता है।

3. आम तरीक़े पर लड़ाई में हरे पेड़ों और हरी खेतियों का काटना और बर्बाद करना लड़ाई की इस्लाहों के मनाफ़ी और मना है, लेकिन जब ये चीज़ें जंग के ज़माने में दुश्मन की ओर से ज़्यादा ताक़त की वजह बन कर फ़साद व शर की बक़ा में मददगार हों तो ऐसी हालत में आम हुक्म से अलग हैं, जैसा कि बनू-नज़ीर के वाक़िए में क़ुरआन ने बताया है।

इफ़्क का वाक़िया

शाबान 05 हिजरी मुताबिक़ दिसम्बर सन् 626 ई० में बनी-मुस्तलक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार के फ़ित्नों की वजह से बनू-मुस्तलक़ की लड़ाई पेश आई। मुनाफ़िक़ों का यह दस्तूर बन गया था कि जिस लड़ाई के ज़ाहिरी अस्बाब से गुमान ग़ालिब फ़त्ह का होता उससे माले ग़नीमत की लालच से ज़रूर साथ हो जाते। चुनांचे इस लड़ाई में भी मुनाफ़िक़ों का गिरोह मय अपने सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के मौजूद था, वापसी पर एक मामूली हादसा पेश आ गया।

बुख़ारी में इस वाक़िए की जिस तफ़्सील का ज़िक्र है, उसका हासिल यह है कि जब नबी अकरम ﷺ कामियाबी के साथ ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ से वापस हुए तो मदीना के क़रीब एक मंज़िल पर पड़ाव था कि रात के आख़िरी हिस्से में कूच का एलान हुआ।

हज़रत आइशा रज़ि० एलान सुन कर ज़रूरत पूरी करने के लिए तेज़ी के साथ क़ियामगाह से दूर चली गईं। फ़ारिग़ होने के बाद वापस हुईं तो गले में जो हार पहने हुए थीं, वह सीने पर न पाया, वह यह समझ कर कि टूट कर वहीं गिर गया होगा, जहां ज़रूरत पूरी करने के लिए गई थीं, उसको तलाश करने के लिए वापस गईं। इसी बीच जो जमाअ़त उनके हौदज को ऊंट पर सवार कराती थी, उसने हौदज उठा कर ऊंट पर कस दिया और चूंकि उस ज़माने में कम खाने की वजह से औरतें आमतौर पर मोटी नहीं होती थीं, और इसलिए वह भी बहुत दुबली थीं, इसलिए हौदज पर लगी टीम ने उनके न होने का मुतलक़ एहसास नहीं किया और ऊंट पर हौदज रख कर रवाना हो गए।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत आ़इशा रज़ि० जब हार को तलाश करती हुई वापस हुईं तो क़ाफ़िला जा चुका था और अब हार भी हौदज के क़रीब ही मिल गया। वह बहुत परेशान हुईं फिर सोचा कि ज्योंही मुसलमानों को यह महसूस होगा कि मैं हौदज में नहीं हूं तो फ़ौरन नबी अकरम ﷺ इसी जगह सवारी भेज देंगे, इसलिए मुनासिब यह है कि क़ाफ़िले का पैदल पीछा करने के बजाए उसी जगह इंतिज़ार किया जाए। रात का आख़िरी हिस्सा था, उजाला होने वाला था कि उनकी आंख लग गई।

उधर सफ़वान बिन मुअ़त्तल सह्मी इस ख़िदमत पर लगे हुए थे कि क़ाफ़िले से बहुत पीछे रह कर निगरानी करते हुए और जो चीज़ भी क़ाफ़िले की रह जाए उसको लेते हुए आएं। वह पीछे से चलते हुए जब उस जगह पहुंचे तो उन्होंने महसूस किया कि यहां कोई इंसान मौजूद है। क़रीब आए तो उनको पहचान लिया, क्योंकि हिजाब की आयत से पहले वह उनको देख चुके थे।

उन्होंने देखते ही फ़ौरन बुलंद आवाज़ से 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। हज़रत आ़इशा रज़ि० आवाज़ सुन कर बेदार हो गईं और सिमट कर बैठ गईं। सफ़वान ने एक लफ़्ज़ कहे बग़ैर ऊंट को बिठाया और वह ख़ामोशी के साथ ऊंट पर हौदज में सवार हो गईं और सफ़वान महार पकड़े हुए रवाना हुए और दोपहर के क़रीब लश्कर में जा पहुंचे।

जब यह ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को मालूम हुई तो उसने और उसकी जमाअ़त ने मौक़े को ग़नीमत जाना और तेज़ी के साथ इफ़्तिरा और बोहतान को फ़ौज में फैला दिया, मगर मुसलमानों ने किसी तरह उसको बावर नहीं किया, अलबत्ता सिर्फ़ तीन मुसलमान (दो मर्द और एक औरत) हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा और हमना बिन्त जह्श अपनी सादगी से मुनाफ़िक़ों के जाल में फंस गए।

ख़ुदा का करम व फ़ज़्ल देखिए कि ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि अल्लाह तआ़ला ने वह्य (क़ुरआन) के ज़रिए मुनाफ़िक़ों की ख़बासत को आशकारा कर दिया और हज़रत आ़इशा रज़ि० की पाक दामनी पर मुहर लगा कर बुहतान लगाने वालों पर कोड़ों की सज़ा जारी करने का हुक्म दिया और इस तरह झूठ

Copyright OfflineDeeniApp

बोलने वाले और बुहतान लगाने वाले अपने नतीजे को पहुंचे।

क़ुरआन ने इस वाक़िए पर मुसलमानों को साफ़ तौर पर बतला दिया कि झूठ और बुहतान पर गढ़ी यह दास्तान सुन कर तुमने ख़ुद ही क्यों न कह दिया कि यह सिर्फ़ झूठ और बुहतान है।

तर्जुमा—*'जिन लोगों ने बुहतान का यह तूफ़ान उठाया है, वह तुममें से ही एक जमाअ़त (मुनाफ़िक़ों की जमाअ़त) है। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इसको अपने हक़ में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (यानी अल्लाह की मस्लहत के राज़ ने इसमें तुम्हारी बेहतरी का अंजाम पोशीदा रखा है) इनमें से हर एक आदमी के लिए वह सब कुछ है, जो उसने गुनाह कमाया है और जिसने इस गुनाह का बड़ा बोझ उठाया है, उसके वास्ते बहुत बड़ा अ़ज़ाब है। जब तुमने इस बुहतान को सुना था, क्यों न ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतों ने अपने लोगों पर नेक ख़्याल क़ायम कर लिया और क्यों यह न कह दिया कि यह खुले बुहतान का तूफ़ान है। वे (तूफ़ान उठाने वाले अपने बुहतान पर) क्यों चार गवाह न लाए, पस जब वे गवाह न पेश कर सके तो यही लोग अल्लाह के यहां बिल्कुल ही झूठे हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत दुनिया और आख़िरत दोनों में तुम पर न होती तो पड़ जाती इस झूठी चर्चा करने में तुम पर कोई बड़ी आफ़त, जबकि तुम इस (बुहतान) को अपनी ज़ुबानों पर जारी करने लगे और ऐसी बात मुंह से निकालने लगे, जिसकी तुमको ख़बर तक नहीं और तुम इसको हल्की बात समझते हो, हालांकि (बुहतान और इफ़्तिरा) अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात है और जब तुमने उसको सुना था, तो क्यों न कहा कि हमारे लिए मुनासिब नहीं कि ऐसी झूठी बात मुंह से निकालें, 'अल्लाह ही के लिए पाकी है' यह तो बहुत बड़ा बहुतान है। अल्लाह तुमको समझाता है कि ऐसा काम फिर कभी न कर बैठना, अगर तुम वाक़ई सच्चे ईमान वाले हो और अल्लाह तुम्हारे लिए पते की बातें वाज़ेह करता है और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिक्मत वाला है।*

जो लोग चाहते हैं कि बदकारी की चर्चा हो ईमान वालों में, उन चाहने वालों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, दुनिया में भी, आख़िरत में भी। बेशक अल्लाह (हक़ीक़ते हाल का) जानने वाला है और तुम जानने वाले नहीं हो और

Copyright OfflineDeeniApp

अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता और उसकी रहमत न होती तुम पर और यह बात न होती कि वह नर्मी करने वाला है और मेहरबान है तो क्या कुछ न हो जाता।"

(24 : 11-20)

सूरः की इन आयतों ने आ़इशा की तहारत और पाकदामनी का ही सिर्फ़ एलान नहीं किया, बल्कि मुसलमानों को यह तंबीह भी की कि उनको एक लम्हे का इन्तिज़ार किए बग़ैर इस क़िस्म के झूठ बोलने वालों के झूठ बोलने पर साफ़-साफ़ कह देना चाहिए था कि यह सिर्फ़ झूठ और बोहतान है।

ये आयतें इस वजह से 'आयते बरअत' भी कहलाती हैं कि उनमें हज़रत आइशा रज़ि० की बरअत (छूट जाने) का एलान है और मुनाफ़िक़ों और दुश्मनों की ज़िल्लत व ख़्वारी का इज़्हार।

सबक़ और नसीहत

इस वाक़िए ने क़ुरआन में जिन सबक़ों और नसीहतों का सामान जुटाया है, उनमें ये ख़ुसूसियत के साथ तवज्जोह के क़ाबिल हैं—

1. फ़ासिक़ व फ़ाजिर या बद बातिन इंसानों की दी हुई ख़बर, ख़ासतौर से जबकि वह इस्मत व इफ़्फ़त और तक़्वा और ख़ैर के ख़िलाफ़ हो, हरगिज़ तवज्जोह के क़ाबिल नहीं और इसके लिए सिर्फ़ इतना कह देना ही काफ़ी है कि सिर्फ़ झूठ है, जब तक कि ख़बर देने वाला उस पर रोशन दलील व हुज्जत क़ायम न कर दे।

2. बेगुनाह पर इलज़ाम और तोहमत लगाना बहुत बड़ा गुनाह है और चूंकि इस गुनाह का करने वाला बन्दों के हक़ों में एक हक़ को निशाने पर रखता है और उसकी तौहीन करता है, इसलिए न सिर्फ़ अख़्लाक़ की निगाह में, बल्कि इज्तिमाई क़ानून की नज़र में भी हद-दर्जा मुज्रिम है। क़ुरआन की आयतों ने इसके लिए हद्दे क़ज़फ़ (बे-गुनाह पर तोहमत लगाने की सज़ा) के लिए अस्सी कोड़े तज्वीज़ किए हैं, ताकि आगे किसी को भी जुर्रात न हो सके कि वह एक पाकबाज़ इंसान पर तोहमत लगाए या बग़ैर गवाही के उसका प्रोपगंडा करे।

3. यह वाक़िया जो शुरूआ़त के एतबार से नबी अकरम सल्लल्लाहु

Copyright OfflineDeeniApp

अ़लैहि व सल्लम के लिए बहुत सख़्त तक्लीफ़ की वजह बना और अह्ले बैत को उसने बेहद परेशान ख़ातिर बनाया, लेकिन अंजाम के पेशेनज़र अह्ले बैत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए यह पूरी तरह ख़ैर साबित हुआ, क्योंकि इससे एक तरफ़ मुनाफ़िक़ों का भेद खुल गया और दूसरी तरफ़ हज़रत सिद्दीक़ा आइशा रज़ि० और अह्लै बैते रसूल की शान की अ़ज़्मत का बेनज़ीर मुज़ाहरा अ़मल में आ गया कि क़ुरआन की दस आयतों ने उनकी बरअत के लिए नाज़िल होकर उनकी इस्मत व अ़ज़्मत दोनों पर बेमिसाल मुहरे तस्दीक़ सब्त कर दी।

4. कभी-कभी गन्दे और शरीर (दुष्ट) इंसानों की गन्दी बातें इस दर्जा आब व रंग रखती हैं कि सादा-लौह मुसलमानों और नेक लोगों को भी ग़लतफ़हमियां और धोखे हो जाते हैं। इसके लिए मुसलमान का फ़र्ज़ है कि सुनी सुनाई बात पर उस वक़्त तक हरगिज़-हरगिज़ यक़ीन न करे जब तक कि इस्लामी शहादत के उसूल के मुताबिक़ सुनी सुनाई ख़बर की तस्दीक़ न हो जाए। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया है कि बदगुमानी से बचो, क्योंकि कुछ बदगुमानियां गुनाह करने वाला बना देती हैं।

5. बन्दों के हक़ में अल्लाह ने जो हदें और क़सास और ताज़ीरात मुक़र्रर फ़रमा दिए हैं, जुर्मों के करने पर उन पर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का कोई फ़र्क़ नहीं है और इस्लामी क़ानून की निगाह में इस हैसियत से तमाम मुज्रिम एक जैसे पकड़ के क़ाबिल हैं, इसलिए इफ़्क के वाक़िए में मुनाफ़िक झूठों के साथ तीन मुसलमान (मर्द व औरत) हज़रत हस्सान, हज़रत मिस्तह और हज़रत हमना बिन्त जह्श को भी झूठी तोहमत लगाने के इलज़ाम में कोड़े खाने पड़े।

फ़ासिक़ की दी हुई ख़बर

९ हिजरी में पेश आने वाले ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ में जब मुसलमान जीत गए और सहाबा के मश्विरे की बुनियाद पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़बीले के सरदार की बेटी हज़रत जुवैरिया से निकाह कर लिया तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ससुराली रिश्ते की वजह से

Copyright OfflineDeeniApp

तमाम सहाबा ने लड़ाई के क़ैदियों को रिहा कर दिया और मुसलमानों के इस अच्छे व्यवहार और ऊंचे अख़्लाक़ और इस्लामी ख़ूबियों की वजह से मुतास्सिर होकर तमाम क़बीला मुसलमान हो गया, तब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वलीद बिन उक़्बा को इसलिए उनके पास भेजा कि वे क़बीले के दौलतमंदों से 'ज़कात' वसूल करके उन ही के मुहताजों और ग़रीबों में बांट दें।

क़बीले वालों को जब वलीद के इस आने का इल्म हुआ तो इ़ज़्ज़तदार हस्ती के आने के इस्तिक़बाल की तरह साज़ व सामान के साथ मैदान में निकले।

जाहिलियत के ज़माने में इस क़बीले के और वलीद के दर्मियान पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, इसलिए इस्तिक़बाल के इस एहतिमाम को वलीद ने दूसरी नज़र से देखा और समझा और अपनी ग़लत राय पर जमे रहे कर क़बीले वालों से मामला किए बग़ैर ही मदीना वापस आ गए और दरबारे कुदसी में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि बनी मुस्तलिक़ तो फिर गए और उन्होंने ज़कात देने से भी इंकार कर दिया और वे तो सरकशी पर भी तैयार हैं।

नबी अकरम ﷺ यह सुनकर बनी मुस्तलिक़ के तरीक़े पर बहुत दुखी हुए और मुसलमान तो बिगड़ गए और जिहाद की तैयारियां होने लगीं, ताकि मुर्तद लोगों का मुक़ाबला किया जाए, यहां तक कि वे इस्लाम पर वापस आ जाएं या अपने नतीजे को पहुंचें।

इधर जब बनी मुस्तलिक़ को मालूम हुआ कि वलीद ने किसी बेजा ज़रूरत के साथ उनके बारे में नबी ﷺ के दरबार में ग़लतबयानी की है, तो वे बेहद परेशान हुए, क्योंकि उनके तो वह्म व ख़्याल में भी यह नहीं था कि इन जैसे पुख़्ताकार और साबितक़दम मुसलमानों पर इस क़िस्म की तोहमत भी लगाई जा सकती है। चुनांचे उन्होंने फ़ौरन ख़िदमते अक़्दस में इ़ज़्ज़तदार वफ़्द भेजा, जिसने हाज़िर होकर कुल माजरा कह सुनाया।

एक तरफ़ अपने आ़मिल (वलीद) का वह बयान और दूसरी तरफ़ 'हदीसुल अह्द' मुस्लिम जमाअ़त का यह बयान। इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़ामोशी अपनाई और अल्लाह की वह्य का

Copyright OfflineDeeniApp

इन्तिज़ार किया।

आख़िर अल्लाह की वह्य ने रहनुमाई की और न सिर्फ़ मामले की हक़ीक़त ही खोल दी, बल्कि इस सिलसिले में एक मुस्तक़िल क़ानून या 'तह्क़ीक़ का मेयार' अ़ता फ़रमा दिया।

तर्जुमा—*'ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई (ग़लतकार) ख़बर लेकर आए तो जांच कर लिया करो, ऐसा न हो कि नादानी की वजह से किसी क़ौम पर (जिहाद के नाम से) हमलावर हो जाओ और फिर कल को (असल हाल मालूम होने के बाद) अपने किए पर पछताने लगो और जानो कि तुममें अल्लाह का रसूल मौजूद है। अगर वह तुम्हारी बात अक्सर मामलों में मान लिया करे तो तुम (अपने ग़लत रवैए की वजह से) मुसीबत में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हारे लिए ईमान को महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसको ज़ीनत बख़्शी है और तुम्हारे दिलों में कुफ़्र और गुनाह और नाफ़रमानी के लिए नफ़रत पैदा कर दी है और (हक़ीक़त में) यही लोग हैं अल्लाह के फ़ज़्ल और एहसान की वजह से रास्ता पाने वाले और अल्लाह जानने वाला है, हिक्मतों वाला है।'* (49 : 6-8)

नतीजा

1. ख़बरों के बयान करने में आम तौर पर सजीदा और मुहज़्ज़ब जमाअ़त भी इसको ऐब नहीं समझती कि जो ख़बर भी उनके कानों तक पहुंचे, वे उसको बे-तकल्लुफ़ नक़ल करते रहें और हक़ीक़ते हाल की खोज की तक्लीफ़ क़तई तौर पर गवारा न करें, चाहे इस ख़बर से किसी न किये गए गुनाह पर झूठ गढ़ा जा रहा हो या किसी शख़्स या जमाअ़त को नुक़्सान पहुंच रहा हो, हालांकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ोरदार लफ़्ज़ों में यह तंबीह फ़रमाई है—

'हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इंसान के लिए यह गुनाह काफ़ी है कि हर सुनी बात को नक़ल करता रहे, यानी यह भी गुनाह की बात है कि सुनी-सुनाई बात का प्रोपगंडा करे।'

2. जब कोई ऐसी ख़बर सुनी जाए जो फ़ायदे या नुक़्सान के एतबार से

Copyright OfflineDeeniApp

ख़बर देने वाले पर या दूसरों पर असरंदाज़ होती हो, तो पहले उसकी जांच होनी चाहिए और जब पूरी तरह साबित हो जाए तब उससे मुताल्लिक़ नतीजों की तरफ़ तवज्जोह होनी चाहिए।

मस्जिदे ज़रार (रजब सन् 06 हिजरी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि तबूक के मैदान में जो कि मदीना से चौदह मंज़िल पर दमिश्क़ के रास्ते पर वाक़े था, हिरक़्ल शाहे रूम ने मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए भारी फ़ौज जमा कर ली है और उसके आगे का हिस्सा आगे बढ़कर बलक़ा तक आ पहुंचा है। आपने अरब में अकाल और गर्मी की तेज़ी के बावजूद जिहाद के लिए मुनादी कर दी और मुसलमान गिरोह-दर-गिरोह जिहाद के शौक़ में मदीना में जमा होने लगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अभी तैयारियों में लगे हुए थे कि मुनाफ़िक़ों ने वक़्त से फ़ायदा उठाकर सोचा कि मस्जिदे क़ुबा के मुक़ाबले में जो हिजरत के बाद सबसे पहली मस्जिद थी, इस बहाने से एक मस्जिद तैयार करें कि जो लोग कमज़ोरी या किसी और मजबूरी की वजह से मस्जिदे नबवी में न जा सकें, तो यहां नमाज़ पढ़ लिया करें, क्योंकि इस तरह मुसलमानों को बहकाने का भी मौक़ा हाथ आजाएगा और एक क़िस्म की फूट भी पैदा हो जाएगी।

यह सोचकर वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हमने बूढ़े-कमज़ोर और मजबूरों के लिए क़रीब ही एक मस्जिद बनाई है। अब हमारी ख़्वाहिश है कि हुज़ूर वहां चलकर एक बार उसमें नमाज़ पढ़ लें, तो वह अल्लाह के नज़दीक मक़्बूल हो जाए। आपने फ़रमाया कि इस वक़्त तो मैं एक अहम ग़ज़वा के लिए जा रहा हूं, वापसी पर देखा जाएगा।

मगर आप जब कामियाब होकर ख़ैरियत से वापस आए तो अल्लाह की वह्य के ज़रिए उस मस्जिद की तामीर की हक़ीक़ी वज्हों को जान चुके थे, चुनांचे वापस तशरीफ़ लाकर सबसे पहले सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि वे

Copyright OfflineDeeniApp

जाएं और उस मस्जिद को आग लगाकर ख़ाक स्याह कर दें।

चूंकि हक़ीक़त में उस मस्जिद की बुनियाद 'तक़्वा' और 'अल्लाह की रिज़ा' की जगह 'मुसलमानों में फूट' पर रखी गई थी, इसलिए बेशक वह इसी की हक़दार की और उसको 'मस्जिद' कहना हक़ीक़त के ख़िलाफ़ था, इसलिए कुरआन ने इस देखने में 'मस्जिद' और अन्दर से 'बैतुश-शर्र' (शरारतों का अड्डा) की तामीर के बारे में हक़ीक़ते हाल को रोशन करते हुए बतला दिया कि यह मस्जिदे तक़्वा नहीं, बल्कि 'मस्जिदे ज़रार' कहलाने की हक़दार है।

तर्जुमा—*(और मुनाफ़िक़ों में से) वे लोग भी हैं जिन्होंने इस ग़रज़ से एक मस्जिद बना खड़ी की कि नुक़्सान पहुंचाएं, कुफ़्र करें, मोमिनों में फूट डालें और उनके लिए एक पनाहगाह पैदा करें जो अब से पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुके हैं, वे ज़रूर क़स्में खाकर कहेंगे कि हमारा मतलब इसके सिवा कुछ न था कि भलाई हो, लेकिन अल्लाह की गवाही यह है कि वे अपनी क़स्मों में बिल्कुल झूठे हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम इस मस्जिद में खड़े न होना, इस बात की कि तुम उसमें खड़े हो (और अल्लाह के बन्दे तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ें) वही मस्जिद हक़दार है जिसकी बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है (यानी मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे नबवी) इसमें ऐसे लोग आते हैं जो पसन्द करते हैं कि पाक व साफ़ रहें और अल्लाह भी पाक व साफ़ रहने वालों को ही पसन्द करता है।* (9 : 107-108)

सबक़

1. निफ़ाक़ एक ऐसा मरज़ है जो इंसानों की तमाम अच्छी फ़ज़ीलतें और अच्छे अख़्लाक़ को तबाह व बर्बाद करके उसकी इंसानियत को हैवानियत से बदल देता है और उसके फ़िक्र व अ़मल में आपस में मेल न रहने से उसकी ज़िंदगी से असफ़लुस्साफ़िलीन' (सबसे गहरे गढ़े) में गिरा देता है।

2. एक ही 'अ़मल' अ़मल करने वाले की नीयत के फ़र्क़ से 'पाक' भी हो सकता है और नापाक भी, तैयब भी बन सकता है और 'ख़बीस' भी। मस्जिद की तामीर एक भला काम है और अज्र व सवाब की वजह, मगर जबकि अल्लाह की रिज़ा के लिए हो और इबादते इलाही का हक़ीक़ी मक़्सद

Copyright OfflineDeeniApp

पेशेनज़र रहे।

तर्जुमा—*'अल्लाह की मस्जिदों को तो बस वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और नमाज़ अदा की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा।'* (9 : 18)

और यही 'भला काम' 'बुरा काम' और नफ़रत भरा काम बन जाता है, जबकि उसका मक़्सद शैतानी काम हो या मुसलमानों के दर्मियान फूट डालना या नमाज़ की आड़ में इस्लाम के ख़िलाफ़ पनाहगाह और जासूसी का मर्कज़ बनाना हो, इसीलिए यह भला काम जब काफ़िरों के हाथों अंजाम पाए तो ग़ैर-मक़्बूल और मर्दूद है।

तर्जुमा—*'मुश्रिकों का हक़ नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिद को आबाद करें, हालांकि वे अपनी जानों पर कुफ़्र की गवाही देते हैं।'* (9 : 17)

वफ़ात या वस्ल बिर्रफ़ीक़िल आला

तर्जुमा—*यानी 'मौत' इस हक़ीक़त का नाम है जो नबी मुर्सल बल्कि ख़ातमुल मुरसलीन को भी पेश आकर रहेगी और हक़ीक़ी बक़ा तो ज़ाते अहदियत की ही बिला शिर्कते ग़ैरे ख़ास शान के साथ हासिल है।* (3 : 144)

अल्लाह! अल्लाह! वह कैसा अ़जीब मंज़र था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम 'अल्लाहुम-मर्र-फ़ीक़ुल आला' फ़रमाते हुए इस दुनिया से रुख़्सत हो गए, तो तमाम सहाबा रंज, ग़म-सदमे में इतने डूब गए थे कि उनके होश व हवास तक बजा न थे। इसी हाल में हज़रत उमर रज़ि० ने ग़म के भारी बोझ से दबकर तलवार सौंत कर यह नारा लगाया कि जो कहेगा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया, तो इसी तलवार से उसकी गरदन उड़ा दूंगा।

ऐसी बेचैनी और परेशानी की हालत में ख़ुदा का एक बन्दा सिद्दीक़े अक्बर आता हुआ नज़र आता है। सबसे पहले वह आइशा रज़ि० के हुजरे में पहुंचता और टूटे दिल और भीगी आंखों के साथ सरवरे दो आ़लम के चमकते माथे को बोसा देता और रसूल के फ़िराक़ से सदमे और बेचैनी का इज़्हार करता है और इश्क़ के इस फ़र्ज़ से फ़ारिग़ होकर जब बाहर आता है तो सहाबा की इस हालत का जायज़ा लेकर कि जिसमें जाहिलियत और इस्लाम

Copyright OfflineDeeniApp

दोनों दौरों की बे-मिसाल शख़्सियत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी शामिल हैं, तो आगे बढ़कर कहता है, ऐ ख़त्ताब के बेटे! बैठ जा। हज़रत उमर वहीं बैठ जाते हैं और बड़े दुख और ग़म के साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मुंह तकने लगते हैं।

सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० अब नबी सल्ल० के मिंबर पर खड़े होकर हक़ की आवाज़ बुलन्द करते हुए सहाबा के मज्मे को यों ख़िताब करते हैं—

'लोगो! जो आदमी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की परस्तिश करता था, उसको मालूम होना चाहिए 'इन-न मुहम्मदन क़द 'मा त' (बेशक मुहम्मद इंतिक़ाल फ़रमा गए) कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मौत का मज़ा चख लिया है और जो एक अल्लाह का परस्तार है, तो बेशक 'इन्नल्ला-ह हय्युन ला यमूतु' (अल्लाह ज़िन्दा जावेद है और मौत से पाक और बरी, उसको मौत नहीं है)

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की यह हक़ की सदा जब फ़िज़ा में गूंजी तो सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० और उनके बाद तमाम सहाबा पर सुकून का इत्मीनान छा गया और वे समझ गए कि बेशक सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपना फ़र्ज़े रिसालत पूरा करके 'रफ़ीक़े आला' से जा मिले और अब इस्लाम मुकम्मल हो चुका, इसलिए अब हमारा फ़र्ज़ है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक नमूने और ज़िंदा जावेद मोजज़े कलामुल्लाह 'क़ुरआन' को पेशवा बनाकर इस्लाम की ख़िदमत का फ़र्ज़ अंजाम दें।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की कैफ़ियत तो यह हुई कि फ़रमाने लगे, क़सम ख़ुदा की सिद्दीक़े अकबर ने हक़ की यह सदा बुलन्द करते हुए जब यह आयत तिलावत की—'व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़-लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल' (मुहम्मद तो रसूल थे, इससे पहले भी रसूल हुए जो गुज़र गए) तो मुझे ऐसा मालूम हुआ गोया अभी यह आयत उतर रही है और रसूल की मुहब्बत ने रसूल की जुदाई से मबहूत (सन्न) कर दिया था। क़ुरआन और तालीमे रसूल की रोशनी में जो कुछ मोहतरम साथी ने कहा, वह यकायक सूरज की तरह मेरे सामने आ गया। हदीस और सीरत की तमाम रिवायतें मुत्तफ़िक़ हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात माह

Copyright OfflineDeeniApp

रबीउल-अव्वल दिन दो शंबा (Monday) को हुई, अलबत्ता किस तारीख़ को हुई? इस बारे में बहुत से क़ौल हैं। मशहूर व मारूफ़ क़ौल यही है कि 12 रबीउल-अव्वल को हुई।

सबक़ और नसीहत

1. कुरआन की सूरः फ़ातिहा में है, 'चला हमको राह सीधी, राह उन लोगों की जिन पर तूने फ़ज़्ल किया, और दूसरी जगह सूरः निसा में 'तो ऐसे लोग भी इन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है यानी नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालेह क़िस्म के लोग, ये लोग बड़े अच्छे साथी हैं, यही वे साथी हैं जिनके बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम 'अल्लाहुम-म अर्रफ़ीक़ुल आला' कहकर आख़िरी वक़्त में इशारा फ़रमाया।

2. 'मौत' अल्लाह का वह अटल फ़ैसला है जिससे नबी व रसूल और ख़ातमुल अंबिया वर्रुसुल भी अलग नहीं है और हमेशा की ज़िंदगी सिर्फ़ ज़ाते हक़ ही के लिए ख़ास है।

3. सिद्दीक़े अक्बर की अ़ज़्मत व जलालते मर्तबा के इस वाक़िए से भी खुला एलान हो जाता है कि नबी सल्ल० की वफ़ात के क़रीबी वक़्त में हालात की नज़ाकत ने सहाबा रज़ि० की अक़्ल व ख़िरद पर जो असर डाला, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता वह देरपा हो जाता तो इस्लाम अपनी हक़ीक़त से ख़ाली होकर रह जाता। (अयाज़न बिल्लाह) मगर यह सआ़दत अबूबक्र रज़ि० ही के हिस्से में थी कि मुसलमानों की उस डगमगाती कश्ती को कुरआन की रोशनी में पार लगा दिया और 'इस्लाम' को एक शानदार फ़िल्ले से बचा लिया।

तर्जुमा—*'बड़ाई अल्लाह की है, देता है जिसको चाहे और अल्लाह का फ़ज़्ल बड़ा है।'* (62 : 4)

नुबूवत व रिसालत का ख़ात्मा

नुबूवत व रिसालत का यह सिलसिला जो हज़रत आदम से शुरू होकर हज़रत ईसा ﷺ तक पहुंचा था, रुश्द व हिदायत के उस्लूब व नेहज के लिहाज़ से इस मानी में एक जैसा है कि इस तमाम सिलसिले में नुबूवत व रिसालत जुग़राफ़ियाई हुदूद में महदूद रही है, इसलिए अलग-अलग ज़ुबानों में

Copyright OfflineDeeniApp

एक ही वक़्त में कई नबियों की बेसत रिसालत की ज़िम्मेदारियां अदा करती रही है—यहां तक कि हज़रत ईसा के हक़ के पैग़ाम ने अगरचे कुछ फैलाव अख़्तियार किया और बनी इसराईल की रास्ते में गुम हुई भेड़ों के अलावा भी कुछ इंसानी हलक़े इस दावत के मुख़ातब बने, फिर भी उन्होंने आ़लमी दावत व पैग़ाम का दावा नहीं किया और इंजील गवाह है कि ख़ुद ज़ाते क़ुदसी ने खुलकर कह दिया कि उनकी बेसत के जो लोग मुख़ातब हैं, वे महदूद हैं।

लेकिन यह सिलसिला आख़िर कब तक हदों के अन्दर महदूद रह सकता था। दावत व इर्शाद तो धीरे-धीरे तरक़्क़ी कर रहा था और उसमें फैलाव आ रहा था, वह क़ुदरत के क़ानून के आम उसूल के ख़िलाफ़ किस तरह हमेशा के लिए रह सकता था।

अलबत्ता इन्तिज़ार था तो इसका कि वह वक़्त क़रीब आ जाए जबकि इस फैली और लम्बी-चौड़ी दुनिया में ऐसा तालमेल पैदा हो जाए कि न एक के फ़ायदे और नुक़्सान दूसरे हिस्सों से ओझल हो सकें और न बेगाना व बेताल्लुक़ रह सकें, बल्कि ख़ुदा की यह फैली हुई कायनात माद्दी (भौतिक) असबाब (साधनों) के बहुत होने के बावजूद एक 'कुंबा' बन जाए और इंसानी दुनिया के तमाम देश एक दूसरे के साथ इस तरह जुड़ जाएं कि एक का नफ़ा व नुक़्सान दूसरे के नफ़ा व नुक़्सान पर असर अंदाज़ होने लगे, बल्कि फ़ितरत का क़ानून अपना मुज़ाहरा करे और माद्दी दुनिया की हमागीर हम आहंगी के ज़ाहिर होने से पहले रूहानी पैग़ामे सआ़दत को आ़लमगीर वुसअ़त और हमागीर अ़ज़्मत अ़ता फ़रमाए। चुनांचे इस दुनिया में फ़ितरत के आम क़ानून की तरह रुश्द व हिदायत की जो शुरूआ़त पहले इंसान के ज़रिए हुई थी, उसका अंजाम उस मुक़द्दस हस्ती तक पहुंच कर कामिल व मुकम्मल हो गया जिसका नाम 'मुहम्मद' और 'अहमद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) है।

तर्जुमा—*'आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने कामिल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इनाम पूरा कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए पसन्द कर लिया।'* (5 : 3)

Copyright OfflineDeeniApp